

.

# শিশুবোধক।

# ৰ্ধাং বালক শিকাৰ্থ।

वर्गमाना, ग्रेमान, कना, शब, व्यक्ति, नामठा,

धकनकिना, नाजाकैन, कनइण्डम, हानका-

রোক এবং প্রহলাদচরিত্র প্রভৃতি। প্রতিমৃত্তি সহিত।

**জিনৃত্যলান শীল কতৃক প্রকাশিকু** 

কলিকাতা

**७**न्, अन्, भीत्नत यस्त्र में किंठ

नः ৯৯ षाशित्रीक्षांगा।

10006



শ্রীশ্রীসরস্থত্য নমঃ!

शান মস্ত্রো যথা—
তক্রণ সকলমিন্দোর্বিভ্রতি শুক্রকান্তি,
কুচভরণ মিতাঙ্গী সন্নিসন্নাসিতাক্তে।
নিজ করকমলোগুলেখনী পুস্তকঞ্রীঃ
সকলবিভর্বসিদ্ধৈঃ পাতুবাদেবতা নমঃ॥

ভদ্রকাল্য নমোনিতাং সরস্বত্যৈ নমোনম:।

বেদ বেদান্ত বেদাল বিস্তাস্থানেত্য এব চ।

ইতি সরস্বতীং সংপূজা মস্তাধার লেখনীঞ্চ পূজরেং।

যথা ন দেবো ভগবান ব্রহ্মা লোকপিতামহ:।

তাং পরিভ্যক্ত্য সংভিষ্ঠেত্তথা ভব বরপ্রদা।

বেদা: শাস্ত্রাণি সর্ব্বাণি হতানীতাদিকঞ্চ যং।

ন বিহীনং জয়া দেবী তথা মে সন্তু সিদ্ধরঃ:।

লক্ষ্মীর্মেধাধরাপ্রতিগোঁ রীতৃ্নি: প্রভাগ্নতি:।

এতাতিঃ পাহি সর্ব্বাভিরফার্ভি মাং সরস্বতি।

# স্থচীপত্র।

<b>শু</b> করণ	श्रृष्ठा।	প্রকরণ	<b>श्</b> षे।।
<b>স্থ</b> রবর্ণ	Œ	শতকিয়া	ેડું
ৰ্যঞ্জনবৰ্ণ	ur i	কড়ানিয়া	﴿فُ
যুক্ত কর	৬	গণ্ডাকিয়া	(À
देश्डाकी <b>अक्</b> र	ь	বুড়কিয়া	28
বানান	۵	পণকিয়া	<b>(a)</b>
নাম ও গ্রাম লিখিবা	ৰ ধারা১০	চৌকিয়া	3¢
সেহাখত সন্ধান	র্জ	কাঠাকিয়া	Ś
টাকার খত লিখিবার	ধারা ১২	দেরকিয়া	24
অঙ্ক নির্ণয়	Ś	দশকিয়া	ঐ•

প্রকরণ	<b>9</b> र्था ।	প্রকরণ	श्रुका।
নামতা	39	মাস মাহিনা	<b>.</b> 4.5
महेब्रा :	25	বৎসর মাহিনা	ώ
দেড়িয়া	. ફું	কড়িক <b>স</b> া	90
আৰ্ড়াইয়া	(ي	মণের নিরম	افي
কাক কডা <b>দির স্থূল</b>	-	মণ কসা	جي
कुनावनी .	﴿	টাকার হি: মণের	
গণিত কড়া	* 23	প্রতি	৩১
বাজার ওজন	اف	সের কসা	الم
চাউল ধান্তাদির	Ì	ছটাক কদা	( <del>à</del>
বিশেষ মাপ	ريخ	ভোলা কদা	૭ર
मृक्ति अर्थला		রতি কসা	Ġ
চলিত মাপ	<b>(</b>	স্ক কিমা	ক্র
সে!ণা রূপার ওজন	رنج	বাঁটা কসা	૭૭
কাপড়ের মাপ	في	সলি কসা	(a)
ঐ প্রকারান্তর	এ	নৌকাকা <b>লি</b>	Ŕ
ভূমির মা <b>প</b>	(ا	গঞ্জার বন্দনা	90
প্রের মাপ	<b>૨</b> ૨	গুরুদকিণা	9
সময় নিরপণ	<b>€</b>	দাভাকৰ	¢۶
বার নিরূপণ	è	কলম ভগুন	69
इंश्ड्रांकी मात्मद्र नाम	<b>(2)</b>	চাণক্যশ্রেক	৬৯
বাজালা মানের নাম	(de)	কুত্র কুত্র পত্ত	6
পত্ৰ	<b>३</b> ७- १७	ভবোপদ <del>েশ</del>	۴۶
পত্র লিখিবার ধারা	<b>૨</b> ૧	প্রহলাদ চরিত্র	20
তেরিজ	२५	যভামাক মুনির	
ख्या अशानीन दाकी	Ø.	পাঠশালা	﴿
<b>ক</b> াঠাকালী	3	মনুষ্যের মিত্র	ð¢
<b>ज</b> भावनी	Ò	প্রভাত বর্ণন	26

স্থরবর্ণ। অন্ন আন্মই, ই ই উ ড জ सं सम् रीम् ठ म हिन् धिर ওয় ওয় অ৽য় वाञ्चनवर्ग । थ्य न् च् उ उ D<sub>च</sub> ह्<sub>छ</sub> ज़, स्म अ़ , bz ठें उ उ र र श्व प्र श्व ব্ৰ ভ্ৰু ম্ র घ्ष म्स इ **्र** श्व ः ः ः



যুক্তাকর।

क<sub>र लि</sub> के के का कि <sup>ह</sup> १९ व १९ व्य १९ व्य १९ व्या १९ वर्ष किं श्रेष अव किं ख<sub>न</sub> इ<sub>य</sub> म<sub>न</sub> स्म इन म्भू म्या स्म सम् सम् ख्य त् खा<sub>ड्ल</sub> ख्य <sub>ड्व</sub> ख्ना<sub>ङ्य</sub> ख्रा<sub>ङ्व</sub> झाङ्क ङ्क ङक्क ङ्क क्ष का स्वाह स्वाह स्व \*চ্ৰ \*ছ<sup>ন্ধ</sup> ক্ৰ<sub>ল</sub> প্ৰা ক্ৰ<sup>ন</sup> त्रु<sub>ष्ट</sub> त्रुष्ठ स्ट<sub>ड</sub>. क<sub>ब्द</sub> त्रेष स्त स्र मंद्र कि स्र स्त्र श्च त् स्व स्व कि हम् स्थित कि <sub>सि</sub> सि हत **ずった。 ずった。 でった。 でった。 でった。** क्त का क क क क क क عن و عن و على المالي المالي



# रेश्त्रां की व्यक्तत ।

A	$\mathbf{B}$	$\mathbf{C}$	D	E	$\mathbf{F}$	$\mathbf{G}$	$\mathbf{H}$
Œ	বি	সি	ডি	\$	এফ্	জি	এইচ
I.	J	K	$\mathbf{L}$	M	N	O	P
আই	(9)	কে		এম্	এন্	છ	পি
$\mathbf{Q}$	${ m R}$	$\mathbf{S}$	$\dot{\mathbf{T}}$	U	V	W	X
কিউ	বার	এস্	ची	इंडे	ভি	ডব্লিউ	鱼军
			$\mathbf{Y}$	7	<b>Z</b> .		
		•	ওয়াই	(8	ড।		
1	6	2	3	4		5	6
ওয়া-	र ड्रे	į.	की	ফো	র	ফাইভ	সিক্স
>	\$	<b>Q</b>	O	8		¢	৬
	7	7	8	9		10.	
	শে	বন্	<u> </u>	নাই	ন্	(हेन्।	
	0	}	4	2		> 0	

# বানান।

6 f ٠, 61 ( ط ዺ কৌ কী े क কে1 কু কে कि কূ কা খে খী থৈ খো 칯 콏 খে থি থা গে গৌ গী গৈ গূ গো গি Ø গা रेघ ঘো ঘী मित कि कि सिर्मिरियरिय कि कि कि বো ঘি যু ঘে ঘা ८ठो ही वर् (51 Þ **(**5 চি ы ছো ट्रेड ছী 夏 ছি (夏 ছো 21 জে জী জৈ জে 質 建文文文 জে জ জ ঝো ঝী देवा ঝি ৰো বো ঝ द्धे त्रे (हो টো र्वर টা ট টা . ભૂ ধ্যে क्र ठी ঠি 4 ঠৈড ডৌ ডী (ড়া ছু ডি (ড ভা चर् ঢৌ (টা চু তু টী টে ঢি 5 তো তী ट्ड তে তে তি তা থো थी থৈ থ श्र मू থো থে থি था দৌ टेप षी দো (प मि হ 4 ধৌ देश ধো ধি धी ধূ ধে ধু ধা নৌ नी देन নো নি নে ন্থ ন্থ না পৌ পৈ (91 পী পূ পে পু পি 91 ফৌ रेक ফী ফু ফো ফু ফে ফি ফা বৈ বো বো বী ৰূ বে বি বু বা ভৌ. ভৈ ভো, ভী ভি ত্ব ভূ ভে ভা

মি মী মে • দৈ মা যে A যু মো যী যি रेग যৌ যা • যু যূ যে যো द्री • রি देव রা বুৰু র ব্রে রো বে লী ल रेन লি নে 9 লু লো বী देव বি ৰ্বো বা বু বূ বে বো नी M देश \* 3 শূ শৌ (\*) (4) ধী ষি ষু ' ষ্ रेय যৌ ষা (ষ ষো भौ म मि সি স यू ऋू ु সে সে হী इ 苓 ₹ (र रेर হা হে হে ফী ক্ষ (क रेक কৌ **T** ক্ষ কে

নাম ও গ্রাম লিখিবরৈ ধারা।

ত্রান্ধনের নামের পশ্চাৎ দেবশর্মণঃ। ক্ষত্রিরের বর্ষণঃ। বৈশ্য ও শৃদ্রের দাস। কিন্তু নাম লিখিবার পূর্কে এই "ত্রী" লিখিবে বেমন ত্রীগলাপ্রসাদ দেবশর্মণঃ, জ্রীরামগোপাল বর্ষণঃ আর শুদ্ধ যবনের নাম লিখিবার পূর্কে এই "সেখ" লিখিবে, বেমন সেখ আলিমোলা ওন্তাগর।

প্রাম লিখিবার পূর্বে সাকিম, মৌজে কিছা মোকাম এই কণা লিখিবে, যেমন সাকিম জীরামপুর, মৌজে বলভপুর, মোকাম মাছেশ, আর আপনার গুরুর বাসন্থান যে প্রামে সে প্রামের নাম লিখিতে কিছা কথিতাপ্রে জীপাট ব্যবছার করিবে, যেমন জীপাট খড়দহ।

#### সেহাখত সন্ধান।

সারদার পদযুগে প্রণতি বিশুর। তার পরে বন্দিব পার্ক্ষতী
মহেশ্বর। যতেক বালক শুন সেহাথত সন্ধান। চারি রেগাগার হয় ওরক প্রমাণ।। দীর্ঘে প্রস্থে চারি ভাঁজে ওরক ভাঁজিবে। যোল কলার ওরক সমান সাজাইবে।। ডাইনে
বামে ছুই জিলা ছুই২ রেগাণা। প্রথম রেগাণা হয় চারি মহলের থানা।। মুসন্ধর ওন্ধক আর দক্ষাত করত। বামেতে

দিলার সরো রম্ভের বসত।। প্রধান কাগজ চিঠা জব্দ করি জমি। ইহার রভাত্ত কিছু কহি শুন আমি॥ রত্তে বিতারিধ দিলে রোজ তার পর। তদত্তে দিনার পোঁতা লিখি মুসদ্ধর।। লিখিকে আসামী জমি জিনিস সকল। সদর অতুল করি সদর মহল।। খোদকন্তা পাইকন্তা রারতির তলে। ভাগা পাত কর আদি খাদারেতে বলে।। ধে যার তকদীল আছে লিখি সাবধানে। মহল খাটাবে সর্ব সেহাখত সন্ধানে।। চারি হাতে কাঠা হয় বিশ কাঠাতে রসি। দীর্ঘে প্রক্রে জমি মাপি সারা-কালী কসি।। তদতত্বতপতপু দিকের নির্ণয়। চিঠায় বেরিজ দিলে চিঠা পূর্ব হয়।। বাছনি করিয়া চিঠা সফা তুলি সর! সদর বান্ধিলে হয় চিঠা যুসদ্ধর।। রেজে রোজ খডিয়ান পৈঠা বলি ভায়। যার যত জ্ঞমী সব করি একজায়।। একেরাল वाकित्न क्योब क्यावनी। क्यावनी देश्त इस कारास्कद সঙ্গি।। কমি বেশী জমী জমা সব জানা যায়। বাহাল বেরিজ আদি সব থাকে তায়।। জমাবনী কাগজ বাখানে সর্কদেশে क्रमावनी देशक मव काना यात्र (मार्य।। जनस्य कनव वाकी তৌজি মাসেং। তহুদীলের টাকা সব রোজ নামায় আইসে রোজনামা রুন্তে বিভারিং আগে লিখি। তদত্তে দিনাঁর পোত। মসন্ধবে রাখি॥ বিলায়তি বাজে জমা তাগাবি আদায়। এই আদি অনেক ছালের তলে রর।। মালের তফদীল বলি খাস মোকদ্দমা। রাইয়তির থামারেতে থাসের মিলে জমা।। বসে ছাট ঘাট যভ সায়েরের তল। জলকর ঘাসকর সায়ের সকল যসংগ্র মাড়চা ছেনালি আর চুরি। এ সব মহল লয়ে বাজে জমা করি।। বাজে আদার তফ্সীল আদার ভাঁওার। বিতীয় মহল কৰ্জ্য কৰ্দম তাহার।। যে যার তফদীল দে থাকে তার পাস। হরবাবে জমা মধ্যে খরচ নিকাশ।। ইরসাল কর্জনোঞ্চ जाशांवि नामन। वाटक थंत्र वननाई थंत्र भाशन।। शम्हाद রৌসনে বাকী কাগজের সার। জমায় খরচ দিয়া বাকী কাটি ডার॥ মৌজ্ত হাওলাত হয় বাকীর কারণ। রোজনামা জ্ঞমা খরচ স্মান মিলন।। হিসাব কাগজ্ঞখান কাগজ্জের অন্ত। বিশ্বাস নাছিক তার বড়ই হুরস্ত।। 'কমী সেওয়ায় ,যত সেই সকলি আৰাৰ। শুকুম মানিক কৰ্দ্দ করিতে ছিসাব। সেলামি মালন আর বাব ছর বড। মাণ্ট পঞ্চম আদি ডার অনুগঙ। ধরকাটি আদি যে দেশের যেই রীড। হরবাব দিরা করি তলব উচিত। তলবে উত্তল দিলে বাকী জানা যার। কাল বাকী ছর কার ফাজিল বুঝার।। তলবে কাজিল আর উত্তল বাকীতে। বাহিতে তেরিজ দিয়া হয় মিলাইতে।। কাগজের নানা বাব না যায় লিখন। সেইজন বুঝে যায় বুদ্ধি বিচক্ষণ।।

# টাকার খত লিখিবার ধারা।

মহামহিম জীযুক্ত রামজয় চট্টোপাধাার

মহাশয় বরাবরেয়।

লিখিতং জ্রীকমলক্ক্য যোষ কল্ম কর্জ্জপিত্রমিদং কার্যঞ্চাণে আদি মহাশদ্যের স্থানে মবলগে কোং দিকা ৩২, বত্তিশ টাকা কর্জ্জ করিলাম ইহার প্রদ ফিঃ টাকায় মাদিক দপ্তর দরমাছ দিব টাকার ওয়াদা মাছ চৈত্র প্রদ সমেত টাকা দিয়া খত পরিশোধ করিব এই করারে দস্তবদন্ত টাকা পাইয়া খত লিখিয়া দিনাম ইতি ১২৯৫ সাল তারিখ ২৮ ফাল্পন।

#### रमानी।

প্রীগোরাচাঁদ ছোষ। প্রীজয়রাম বিশ্বাস।
সাং বলরামপুর। সাং সাহাপুর।

#### অঙ্ক নির্ণয়।

<b>华</b>	***	•••	***	১ এক
একে শৃক্ত	•••	•••	•••	১০ দশ
मर्म भृत्र	***	•••	•••	500 ×13
শতে শূক্ত	•••	•••	•••	১००० मह्ख
সহত্রে শৃত্ত	•••	***	•••	১০০০০ আযুক্ত
অয়ুতে শৃষ্	***	***	•••	১০০০০০ লক
मरक भृज	•••			১০০০০০০ নিযুক্ত
নিযুতে শৃক্ত	•••		•••	১০০০০০০০ কোটি
কোটিতে শৃত্য	***	•••	***	५००००००० व्यक्त म्
. व्यक्तु रम् , शृञ्ज	•••	•••	• • •	५०००००००० ह्रब्स्

#### গণিত শতকিয়া।

ş ಅ 8 9. ۵ 5 à ৬ 20 33 58 39 58 34 36 29 36 22 **ک**. ۵ **₹**5 ર ક 50 ₹8 38 રહ २१ २৮ 43 ರಾ ৩১ ઝર ೨೨ დგ Se. ৩৬ 9 ೨৮ ತಿ 8. 85 89 85 85 83 8२ 80 88 84 ĊΟ ¢Σ ŝΣ **€**⊙ ¢8 at ¢ & 49 45 đ۵ ৬০ 98 <u> અઅ</u> 49 ৬১ હ ફ હ્ય **40**0 **%b**∽ **6** 90 95 92 سوه 92 60 93 9 3 98 90 . 99 **6 b- k 6**-3 ₽8 bœ **₽~**\$ • 6-9 ЬЬ 44 20 22 95 ಶಿತ 38 400 C <u>અ</u>હ 29 25 22 300

## কুড়ানিয়া।

ŧ 11 21 311 4 (5 31 311 .34 ج. (0 णा २५ ৩ **94** (8 81 811 84 (Œ 0 411 an (4 ঙা 411 ৬५ (٩ 91 911 سواح ४५ (% 51 11 21 116 24 (50 201 2011 204 (22 221 2211 334 38 251 3211 (28 २२५ (५० ५०। ५०।। ५०५ \$81 3811 385 (54 3911 של פלן משל וושל וול ३७॥ ३७५ 196 96) 394 (36 361 3611 364 166 66) 466 1166 10 101 1011 104 15 151 1511 154 12 . /21 1211 124/0 /01 /011/04 18 181 1811 184 10

#### গণ্ডাকিয়া।

(٩ (8 (4 w, (60 (a) ر ک رع -(,3 (25 963 ve, se, (28 (2¢ *& C* ) ばなり 18 /5 19 12 /3 /α 132 150 158 /54 130 139 135 155 2 )

अंत्र क्षेत्र क्षेत्र वेश de Ny da de da 230 00 2/2 2/2 2/8 रिष रिष्ठ रिष مطالع 2/2 राष्ट्र निर्म 222, 525 920 578 250 254 259 18 19 13 13 10 10 19 16 (6) 150 1/0 155 138 130 158 134 133 139 136 129

# বুড়কিয়া।

(tr 10 150 do ia 150 130 30 يم أرد 250 ٥١٥ 026 e/50 de 0/38 10 100 1/0 150 1/0 1/50 1/30 150 10 12/4 12/30 100 10/4 10/50 10/50 12/50 110 11/0 11/50 11/50 110/0 130 11/0 114 1150 11ex 11e/30 110/30 1120 110/4 110/30 112/50 ho no/o 4/0 4/3 4/30 4/30 40 430 450 nda ndso ndsa heio her he'so 40/30 3) 5/0 5/4 5/50 3/30 30/0 5130 3134 200 30/3¢ 300 Seia 3670 20/4 20/20 30/30 310 31% \$1/50 31/3a 310 3130 2120 31/0 31/0 3/0/ 3/0/30 3/0/30 3/0/3 312 ¢ 31230 3/2/50 3110 31130 3113¢ 311/01 3114

# পণকিয়া।

0/0 10 د لرج 1/0 100 120 10 110 11/0 1100 1120 400 he/o 4/0 40 5 5/0 2010 300 31/0 3100 3100 310 3110 311/0 3110/0 34/0 31100 sho 340/0 3400 ۹, २७/० 21/0 2/0 20/0 2100 २१८० 210 2110 211/0 2110/0 21120 24/0 240/0 240 24.00 ڻ, 0,70 واريق **3/0** 01/0 9/0/0 910 0/2/0 9110

0/10 9/10/0 0/12/0 04/0 540/0 ७५७/० 1040 8) 81/0 8/0 800 80/0 . 8100 810 812/0 8110 84/• 84% 811/0 81120 81100 8420 840 ¢, œ/o 40/0 41/0 3100 **a**/o 410 واله ولاق 011/0 a11000 0/10 ayo 44/0 \$40/0 ayelo ৬, 6/0 ৬৯/০ 800° 80 I

# চৌকিয়া।

10 110 y0 310 3110 رد 340 ٤, <mark>ن</mark>ې 90 210 2110 240 0110 ಅಭಿ 8 810 8110 840 4) C/a dilo ٠, Cho زه 910 6110 ৬५० 910 9110 940 6) 10 3) \$3) 6110 bho 210 30) 2110 240 3010 30110 3040 2210 22110 3340 54) 24110 2510 2240 30) 2018 20110 3 340 \$89 2810 28110 3840 30, 2410 20110 saho ১৬, 340 20110 3640 39) 3910 3940 39110 رحد 3610 32110 3640 ردد 2210 22110 3240 **२**0) **२२**) 2010 50110 2040 437 4310 42110 २५५० 2210 2110 २२५० 23, 2010 20110 \$ 340 **18**) 2810 18110 2840 - 24-1

## কাঠাকিয়া।

10 18 15 /₹ 13 12 18 110 113 112 113 118 43 3/0 ٩o 4 48 ŊЭ 3/3 3/3 3/0 3/8 210 212 316 310 318 3110 3113 3110 3118 343 १/० 3118 34. 348 340 148 **4/**5 ₹/₹ ३/७ **২/**8 210 215 शश 510 **\$18** शाव 2115 शार 2113 8118 240 २५১ 242 243 248 ७/೦ ७/३ 0/3 ७/೨ ৩/৪ Ojo 915 ७१२ 919 918 9||0 जार जार जान जाह जन जन जनर जनर ৩५৪ 8/9 8/8 8/8 810 \$15. 812 813 818 8110 8118 0/0 8118 8110 840 845 842 843 848

## সের্কিয়া।

/**u** ۱۷ 12 10 18 10 16 ja 19 15 18 10 18 IŒ 19 19 16 19 110 118 110 116 115 119 119 113 110 112 ho 48 ่นข 43 hz ৸৬ 4 3/0 43 49 40 3/2 3/0 3/8 3/4 3/4 3/9 3/6 3/8 310 3/3 218 - 216 219 219 218 312 3110 313 313 210 2112 2115 2110 2118 311¢ 3116 3119 3116 3112 340 **4/0** 340 348 Sha 344 349 345 ろなる 343 348 2/5 २/२ **३/**৩ ₹/8 2/4 2/4 2/9 3/6 2/2 210 210 श्र 215 शेर २।७ र।8 219 316 615 2110

### দশকিয়া।

0/0 Jo 10 0/30 150 230 06, 10 10/0 1/0 1/30 10/30 120 12/30 110 120 11/0 11/50 1100 1100 110/30 112/30 1130 ho 4/0 4/30 hado hado helo helso 3) 430 30% 5/0 5/50 20/20 200 25/20 5,50 310 31/0 131/30 2100 3 2/30 3/20 212/30 5110 2120 21120 211/0 211/20 2110/0 31120 31100 311030 340 ۹, 3430 34/0 34/30 34do 34dso 34do 34dso २८७० २८० २८७० २४० २०१० २०० 20/30 210 21% राजे १० राये राये 2150 21/0 21/50 2110 राहित सार कारिक साये साये अराहित साये ३५० 240/0 240/30 240/0 240/30 2450 24/0 24/50 •) 030 0/0 0/30 00/01

# . গণিত নামতা।

~	~~	~~	~~~	<u> </u>	$\sim\sim$	~~~	~~	~~~	~~~
>	>	>	>	>	>	•	>	>	>
5	2	૭	8	æ	ঙ	٩,	ь	় ৯	20
2	*	•	8	œ	•	9	ь	۵	> •
~·	~~~		~~~	~~	~~~	· · · ·	~~		~~
2	2	2	₹.	<b>ર</b>	<b>ર</b>	ঽ	ર	Ą	٠,
>	*	9	8	¢	•	9	ь	6	>0
₹.	~ <sup>8</sup> ~	. <u>*</u>	<b>∽</b> ≻.	>° <b>~</b> ~	. <del>&gt; &gt;</del> ~	>8 <b>∽</b> ~.	<b>≯</b> ७~	36	₹°
•	9	9	•	9	৩	9	٥	ؿ	9
3	ર	9	8	Œ	હ	4	6	৯	3 0
ં	છ	۵	> 3	30	24	<b>२</b> >	₹8	२१	৩১
-	~~~	~~~	~~·	~~	·~~	~~·	~~	~~~	~~
8	8	8	8	8	8 •	8	8	8	8
>	<b>ર</b>	9	8	ď	9	9	ь	۵	> 0
8	ه محم	>> <b>~~~</b>	>5 ~~~	२° <b>~~~</b>	28	بود محم.	৩২ <b>~~</b>	৩৬	80
Œ	α	C	¢ 1	0	æ	Œ	œ	œ	æ
>	ž	٠	8	æ	<u>s</u>	9	300	5	> 0
e	50	> œ	২০	२ ৫	· ·	92	8•.	80	80
-	~~	~~	~~		~~	~~~	~~.	~~~	~~
৬	৬	৬	\$	45	৬	৬	৬	৬	•
,	২	3	8	Œ	৬	4	ь	\$	20
ע	১২	>6	<b>\ 8</b>	೦೦	99	8२	81	<b>¢</b> 8	90
9	9	9	9	9	9	9	9	9	9
>	ર	2	8	a.	હ	9	ь	\$	30
9	>8	२५	> br	93	83	68	a b	৬৩	90
~	~~~		~~~	~~	سند	~~	~~	~~~	~~~
50	ъ	Ъ	ъ	حرا	ь	b*	, br	ь	4
>	₹	•	8	Œ	હ	9	•	۵	>0
5	24	<b>28</b>	৩২	8 .	85	<i>&amp;</i> 0	<u> 68</u>	۹>	₩ <b>0</b>
ä	5	à	2	7	à	8	7	۵	7
>	ર	৩	8	æ	ঙ	9	b	5	>0
9	76	<b>३</b> 9	৩৬	8¢	<b>«</b> 8	৬৩	43	67	20
>-	~~~ ° C	~~~ °	~~ >°	~~~ ° (	~~~ ° c	٥٥	~ ~~·	>°	~~ 5∘
3	٠ ۶	• • • • • • • • • • • • • • • • • • •	8	8	ર્કું	9	<del>ن</del> س	a	> 0
, ; o	र २०	৩০	80	ά°	৬০	90	<b>b</b> 0	৯•	> 0
	~~~		~~~	~~~		~~~	~~~		~~~

51			1	निखर	বাধক	1		,	
22	>>	>>	>>	~~ ;;	33	~,?? ~~~	~~~ {{	،محم د د	<b>~~</b>
٠ >	ર	•	8	Œ	૭	9	4	ج	>0
55	२२	೨೨	88	C C	৬৬	99	b b	88	220
> २	<del>~~</del> ۶۶	<del>ححد</del> . ۶۶	.~~. ۶۶	<del>~~</del> ३२	<i>حح</i> م ۶۲	<b>~~~</b> >₹	<b>~~</b> >₹	<b>~~</b> ~ }₹	~~~ >?
>	₹	9	8	¢	હ	9	b	, i	30
<b>\$</b> ?	₹8	૭৬	85	৬০	٩ २	48	৯৬	> 06	३२०
> 2	~ <i>~</i> ~	~~~ °′	~~~ °°	~~ °°	~~~ 50	~~ 30	~~~ °°	~~~ c	~~~ ec
5	<b>ર</b>	9	8	,¢	ر ق	9	b	, , , ,	20
20	રેક	૦૦	۵×	60	95	22		223	>0.
>8	>8	>8	~~. >8	~~~ >8	>8	>8	>8	~~~ >8	>8
>	۶	9	8	່ ເ	•	9	) () 	\$	> •
58	<b>\$</b> b	8 >	৫৬	90	P8	24	225	১২৬	>80
: 6	> «	>4	> e	~~~ ```	> c	~~~	~~~ ```	> °	->- >c
>	ર	•	8	œ	હ	<b>9</b>	ь	2	>.
3,3	90	80	60	90	<u>ه</u>	206	75.	30¢	260
3.5	35	> 5	3.9	3 9	>>	3.9	20	ે છ	39
5	₹.	৩	8	¢	19	9	ь	*	>0
29	्ऽ२ <b>~~</b> ~	85	~ <del>~</del>	<b>*</b> °	ود	~~~ ?}>	754	>88	>>0
>9	>9	59	59	29	>9	59	59	59	53
۲	₹	9	8	Œ	৬	٩	ъ	2	> °
59	<u> </u>	«> ~~~	95-	<b>~</b>	<b>→</b> >∘₹	~~~ 666	>08 ~~~	>¢0 ~~~	>40
26	22	<b>:</b> b	76	: 6	76	74	36	Þ	26
>	् २	೨	8	<b>C</b>	৬	9	ъ	9	20
77 	৩৬	<b>6</b> 8	१२. 	» محمد	١٠٢	১২৬ 	>88	ऽ७२	300
25	25	>>	>>	29	\$5	<b>۵</b> ۲	22	>>	58
>	<b>₹</b> #	9	8	¢	৬	٩	ь	۵	> 0
>>	चट ~~~	~ <sup>*</sup>	95	~~~	328	\$ 55 ~~	>@ \ ~~~	393	>>>
<b>2</b> 0	₹•	२०	२ ॰	२०	२०	२०	20	२ ०	₹0
2	<b>२</b>	•	8	Œ	৬	9	ь	৯	>0
₹ o ·	8.	৬০	ьо	>00	320 	>80	380	360	२०० <b>~~~</b>

~~~~	~~~~	~~~	$\sim\sim$	~~	~~	$\sim$	~~	
>> >>	55 55	>>	>>	>>	>>	>>	>>	4
22 25	<b>&gt;&gt;</b> >8	٥¢	১৬	٩ د*	:6	25	२०	
२२२ २७ <b>२</b>	\$80 \$¢8	১৬৫	<b>১৭</b> ৬	>b9 '	12F	२०५	२२०	
<b>५२ ५</b> २	<b>)</b> २	) ર	>>	, >2		) र	১২	
25 70	>8 >C	>9	>9	56	٠ 5	৯	२०	
>88 >69		<b>५</b> ८२					२8•	
>9 >9	30 30	20	30	>0	:01	>8	>8	_
>0 58	>¢ >9	59	36	\$ 5	201	>8	20	
१४८ ८७८	১৯৫ ২০৮	२२४	२७8	289 2	801	५८८	<b>२</b> > •	_
\$8 \$8	28 28	>8	3 (	÷ ¢	>¢	> <b>a</b>	> ¢	_
<i>&gt;७</i> ४१	३४ ३३	२० ।	> ¢	১৬	२१	26	53	
२२८ २७৮	<b>२</b> ৫ <b>२</b> २७७	, >bo	१२०	₹8•	200	290	२৮∉	_
50139	১৬ ১৬	<i>&gt;\</i> 9	> 5 i	9 :	9	>9	, d	_
20139	३१ ১৮	\$ 6 6	201	59 :	` 4¢	>>	२०	
9001369	३१२ २५৮	008	७२०।	१५५ ७	<b>.</b>	২৩	980	_
>b >b	66146	1 66	۲۰ ۲۰	٠ <b>૨</b> ٠	٠,٠	₹ 0	२०	_
१५ १५	40175	२०   ३	१० २:	<b>&gt; </b>	२७	₹8	२८	
৩২৪ ৩৪২	७५० । ७५५	960 i	800 83	o 88°	850	850	( o o	
~~~	~~~~	~~	~~	_~~	~~	~~~	~~	•

# সইয়া।

21	31	31	31	31	3 1	21	21	21	21
>	ર	૭	8	¢	•	٩	ь	ಎ	> 0
51	<b>२</b> 11	୦୬	¢	ঙা	911	PN	٥ د	>>1	>२॥
~~		~~	~~.	~~		~~~	~~	~~	~~~
51	21	>1	16	21	31	21	21	21	21
>>	১২	30	>8	>¢	36	59	74	53	२०
>७५	>0	>51	>911	364	२०	145	२२॥	२०५	२৫

# ८मिष्या।

-									
511	211	>11	. 511	>11	511	511	211	54	>11
>	₹	•	8	æ	৬	9	৮	৯,	> 0
>11	ં ૭	811	৬	911	\$	>011	\$ 2	5011	>0
~~~	~~~	~~		~~	~~~	~~	~~~	~~·	~~
>11	>11	>11	>11	211	>11	>11	511	211	>11
>>	> ?	2.3	>8	36	>>	>9	26	12	२७
361	24	1156	٤5	<b>3211</b>	₹8	2011	২৭	२७॥	90

## আড়াইয়া।

211	211	211	211	211	211	સા	शा	211	211
								7	
211	•	911	>0	<b>५२</b> ॥	30	2 411	२०	२२॥	રહ

5411 00 0511 00 2411 80 8511 80 8411 60 22 25, 25, 25 26 26 24 25 25 59 511 511 511 511 511 511 511 511 511

# কাক কড়াদির স্থূল গুণাবলী।

আসামী কাক কড়া গণা বুড়ি পণ চৌক কাঠা সের দশক। راام (۱۱ (۲۰ مرک ۱۱م ۱۱م ۱۱۰ ۱۱۰ 50 (31 ,0 /0 1/0 310 0) 3/0 110 110/0 20 (342) (911 /30 12/30 340/0 9110 3110 40 420 ೨೦ (311 (30 0)0 1100 3110 30, 3/0 3/0 310 80 رعمل رعد الع العد محمد محمد عداد عداد عداده Ç o (se de nos one ser o/o silo sudo **⊕**9 (810/ (3911 2/30 3/30 810/0 3911 0110 340 200 90 (a /0 10 210 a) 20, 8/0 5/0 5110 ٥٠ (वाल रेशा १३० राजरे वालि रशा हा। राज रेले (4) 10 1/0 311/0 410 20) 0/0 2110 40/0 २००० रेश ४२० ००० २वारि कशांव देवन वर्ष देवर ७३१०

গণিত কড়া।		১৬ সলিতে	
<b>*151 1</b>		১ কাছনে	৪০ মণ ৪০/
8 कोटक	১ কড়া	मिक्न जन्मत	র চলিত মাপ।
৪ কড়ায়,	১ গগ (১	১পালিতে বা	৪রেকে ১ন্দোর্গ
৫ গণার	১ বুড়ি ৻৫	८ ट्यांटन	১ আড়ি ১
৪ বুড়িতে	> পণ /•	৫ আড়িতে	<b>১ সলি ৫</b>
8 भरन	। কবি ১	৪ সলিতে	১ বিশ /০
८ होदक	১ কাহন ১	১৬ বিশে	১ পৌটি ১
91	কা।	সোণা ও র	পার ওজন।
৪ কড়ার	১ গণ্ডার ১	৪ ধানে	১ রতি
৫ গভার	১ পয়সা (৫	৪ ধানে ৬ রক্তিতে	১ আনা
৪ প্রসার	<b>১ আ</b> না /•	৮ রতিতে	১ মাবা
৪ আশায়	১ দিকি।০	১২ মাধায়	১ তো <b>লা</b>
৪ সিকিতে	১ টাকাঁ ১	কাপড়ে	র মাপ।
১৬ টাকায়	১ মোহর ১৬)	৩ য <b>়ে</b> খ	,১ অন্ধূসি
বাজার ও <b>জন।</b>		৩ অঙ্গুলিতে	১ গিরা
৫ সিকিতে	s कैंक्लि (a	৮ গিরাতে	*১ হ!ড
৪ কাঁচচায়	•\ কাৰ্যন্ত ৫	২ হাতে	১ গ <i>জ</i>
৪ ছটাকে	১ পোয়া /।•	প্রকার	
৪ পোরায়	১ সের /১	७ मीर्थ यदव	১ বুকল
৫ সেরেডে	১ পশুরি /c	১২ বুকলে	> कूंठे
২ পশুরিতে	०। कवि ८	आ ऋटे	১ হাত
৮ পশুরিতে	১ মণ ১/০	২ হাতে	১ গজ
চাউল ও ধান্ত ইত্যাদির		ভূমির	
বিশেষ মাপ।		৮ যবে	১ অসুনি
	ছুঁছি বা কুনিকা	৪ অঙ্গুলিতে	३ मू हे
	কাতে ১রেক	७ मूट्डे	১ বিঘত
	ল বা পশুরি /৫	২ বিষতে	১ হাত
২০ পালিতে	১ সলি ১)	৫ হাত দীর্ঘে ৪	প্রছে ১ ছটাক

শিশুবোধক।
-----------

२२	ान <b>ल दा</b> शक।		
১৬ ছটাকে	३ कार्या	্বার টি	ক্রপণ।
৫ কাঠায়	১ চৌক	ইং বার।	ৰাং বার।
८ होटक	্ ১ বিখা	১ সন্ডে	১ রবিবার
প্রের	মাপ।	२ मन्टड	২ দোমবার
৩ যবেতে	১ অঙ্গুলি	० द्वेहम्राड	৩ মঙ্গলবার
৪ অসুলিতে	> यूटे	৪ ওয়েড্নেস্	তে ৪ বুখবার
৩ মুটে	১ বিঘত	<ul><li>शर्मर्ड</li></ul>	৫ গুরুবার
२ विषट	১ হাত	৬ ফুাইডে	৬ শুক্রবার
৪ হাতে	১ ধরু	৭ স্থাটারডে	৭ শনিবার
২০০০ ধনুত্তে	১ মাইল	ু ইংরাজী <b>স</b>	াদের নাম।
২ মাইলে	<b>১</b> ক্রোপ	১ জাবুয়ারি	৭ জুলাই
কোণে	১ যোজন	২ ফেব্রুয়ারি	৮ আগফ
সময় নি	ক্লপণ।	৩ মার্চ	৯ সেপ্টেম্বর
৬০ পলে	३ म छ	৪ এপ্রেন	১০ অক্টোবর
न्। मृत्य '	১ প্রহর	व ८म	১১ নবেম্বর
৮ প্রহত্তে	১ দিবা রাত্রি	৬ জুন	১২ ডিসেম্বর
৭ দিবা রাজে	১ সপ্তাহ	বাঞ্চালা ম	হৈদর নাম।
১৫ मिटन	2 9 TH	১ বৈশাখ	৭ কার্ছিক
२ शतक	১ মাস	२ टेकार्छ	৮ অগ্রহায়ণ
२ माटम	> 41 3	৩ আধাঢ়	৯ পৌষ
৩ ঋতুতে	১ আয়ন	৪ শ্রাবণ	১০ মাঘ
२ जात्रदन '	১ বৎসর	c ভাল	১১ ফাল্পন
ऽ२ द९महब	১ যুগ	৬ আশ্বিন	<b>५</b> २ टेडज
বৈছ্যক পরিমাণ।		ইংরাজী মুত্র	ণ পরিমাণ।
৪ ধানে	১ রতি।	8 कार्मिट्ड	১ পেনি।
৫ রতিতে	১ মাৰা ৷	३२ (शंटका	১ निनिछ।
১৬ মাধায়	১ তোলা।	২০ শিলিছে	১ পৌতা
২০ তোলায়	১ পোয়া।	২১ শিলিডে	३ गिनि।

শ্রীশ্রীহর। সেবক জ্রীনবক্ষ্ণ দে প্ৰামা বহব নিবেদন ঞ্চাগে মহাশয়ের ঐচ-নার পাণ্গতিক সমস্ত মঙ্গল ইয় বিশেষঃ i পরে মহাশয়ের পত্র পাইয়া সকল সমাচার জ্ঞাত হইলাম নিবেদন ইতি তারিখ ১২ জ্যৈষ্ঠ।

শ্রীশ্রীহরে। আক্রাকারী ক্রিক্রীনাথ দে বিনয় পূৰ্বক নম-ক্ষার নিবেদনঞ্চাগে মহাশয়ের রাজলক্যী <u>ন্ত্রী</u>তবিরাজকরিতে হেন তাহাতে অত্রা– নন্দ হয় বিশেষঃ। পরে মহাশয়ের পত্র পাইয়া সকল সমাচার জ্ঞাত হইলাম ইতি ২৫ মাঘ।

# व्यक्ति पूर्गा।

মহামহিম জীযুক্ত নব গোপালবন্দ্যোপাধ্যায় মহাশয় বরাবরেষ। লিখিত ৽ শ্রীরসময়দে কস্য কৰ্জপত্ৰ মিদং কা র্য্যঞ্চাণে মহাশ্রের স্থা নে৫০টাকা কর্জ লইলাম ইহারস্দ॥ (হিঃদিবএক মাহারমধ্যে পরিশোধ করিব ইতি২৫পৌষ।

শ্ৰীশ্ৰীকৃষ্ণ। পোষ্য জীরামচন্দ দাস পরম শুভাশীর্বাদ বি-জ্ঞাপনঞাদৌ তোমার মঙ্গল ক্রিত্রীত স্থানে পার্থনা করিতেছি তা-হাতে মঙ্গল বিশেষঃ। বহু দিবসাবধি সম্বাদ না পাইয়া বড় ভাবিত আছি মঙ্গলাদি লিখি-বেন ইতি ৩ বৈশাথ।

# পত্র নিখিবার ধারা।

জীঞ্জচরণ পদা বনিয়া মন্তকে। পত্রের নিয়ম কিছ কহিব সংক্ষেপে।। পিতামহ মহাশরে করিয়া প্রণতি। সেব-কানুসেবক বলিয়া লিখি পাঁতি।। পিতা জ্যেষ্ঠা খুড়া আদি স্বস্মত্র। জ্যেষ্ঠ মধাম আর খণ্ডর মাতৃর॥ জ্ঞাতি বর্ আদি করি যত গ্রুক্তন। সেবক প্রণাম করি লিখি নিবেদন।। পরম প্রক্রীর বলি দিবে শিরোনার্ম। পত্তের নিয়ম এই স্থির করিলাম।। ছোট ভাই পুত্র স্নাদি ভগিনী যত থাকে। পরম-শুভানী বলি পত্র লিখি তাকে।। মন্ত্রল উন্নতি করি লিখিবে আৰীবে। পরম কল্যাণীয় বলি শিরোনামা শেষে।। পুত্র নাহি ৰনিতা স্বামীকে লিখে পাঁতি। স্বস্তি দেবিকা বলি লিখিবে যুবতী।। মহামহিম বলি দিবে শিরোনামা। পত্র লিখিবার রীতি শুন সর্বজনা।। কিঞিৎ কহিলাম এই সংক্ষেপ অক্ষরে। সর্বত্র লিখিবে পত্র এই অনুসারে।। কন্তা পিজাকে লিখে क्रिया अनीम। भवम भूजनीय विल निर्व निर्वानाम।। ज्यी-পতি যদি হয় অতি স্থলকণ। আজাকারী করি তাকে লিখি নিবেদন।। মধাম কনিষ্ঠ যদি হয় ভগ্নীপতি। নমস্কার করিয়া তাহাকে লিখি পাঁতি॥ শ্বশুরের পুত্র যদি স্ত্রীর হয় বড। তা-হাকে লিখিতে পত্ৰ বৃদ্ধি চাই দৃঢ।। ধনে মানে কলে শীলে থাকরে সম্ভোষ। আজাকারী বলিয়া লিখিতে নাহি দোষ।। (मर्गंत क्रमीमांत यमि इस मुमलमान । वर्म्पत ठांकत विन लि-থিবে সেলাম।। কত্র কিষা শূদ্র যদি হয় নরপতি। আজ্ঞা-কারী করিয়া ভাষাকে লিখি পাঁতি।। দেশের জমিদার যদি হয়ত ত্রাহ্মণ ৷ সেবক প্রণাম করি লিখি নিবেদন ৷৷ আজ্ঞা-কারী পাঠ লিখি বড বড জনে। বিনয় সন্তাদ লিখি প্রণাম निटबन्दन ॥ मगात मगात निथि वनीय बनिया। मगजात লিখি তাকে নমন্তার করিয়া॥

#### তেরিজ।

তেরিজ ধরণ কথা শুন শিশুগণ। দক্ষিণে কড়ার স্থান ক-বিবে গণন।। কড়া খুরে চারি কড়ার গণ্ডা লবে হাতে,। হাত শুদ্ধা গণ্ডা থোবে দশক পশ্চাতে।। দশকে২ পণ কমি হইলে খোবে।পণে২ এক করি চৌক ধরি লবে।। চারি চৌকে টাকা হয় তেরিজ শেখা কর। নরসিংহ রচরে তেরিজ অঙ্ক ধর।।

ইলাহরণ। চাইল খরিদ ৯ ৭ ৬ ৮৶ ১৭ ॥
ডাইল ,, ' ১ ৬ ৪ ৮/ ১২ ॥
য়ত ,, , ১ ৩ ৪ ৮৶ ৭ ॥
মর্দা ,, ৯ ০ ৮ 1০ ১৫

একুন ২ ১ ৮ ৫ ৩ ১২ ॥

জমা ওয়াশীল বাকী।

জনা ওরাশীল বাকী শুন শিশু ওাই। জনা ছোট ধরচ রড় কংজিল বলি তাই॥ জনা বড় ধরচ ছোট বাকীদার হয়। ভারতির শীল সমান হলে সাধুধালাস পার॥

উत्। भट्निन्छ ভট্টाচ सं क्रमां - २ ৫ 8 ॥ ८ ७ । संद्रम - १ 8 ५/ ৮ ५

बाकौ-४ १ ३ ५ ३१ ॥

# কাঠাকালি।

কুড়বাং কুড়বা লিজ্যে। কাঠার কুড়বা কাঠার লিজ্যে। কাঠার কঠার ধূল পরিমাণ। দশ বিশ গাঁওা কাঠার জান।। দীর্ঘ ২০০ বিঘা প্রস্তে ২০০ বিঘা কড় কালি ছইল?

शाः २१० साशाः कौनि

8110

37211

धाशा विद्यां

#### জমাবनी।

জমী বিহা যত হলা হইবেক দর। তলা প্রতি যোল গঞা কাঠা প্রতি ধর॥ যত জানা তত গঞা পাই প্রতি বট। গঞা প্রতি যোল তিল ঘুচাও কপট।। কড়া প্রতি চারি তিল শুভ-ক্ষর ভণে। জমাবন্দী কর শিশু আনন্দিত মনে।।

উদা। ১বিখার খাজানা টা নাএ১০।। হইলে। ত কাঠার খাজানা কড় १০টা নাএ১০।। এক বিধার খাজানা । ত কাঠার

कल १. हा अ०००	॥ प्यक	াব্যার খাজানা	া কাঠার
৯ টাকার হিঃ	10/8	•••	<b>২</b> %
।৶৹ আমার হিঃ	9	***	o/sa
১০ গণ্ডার ছি:	11	***	सा
॥ কড়ার হি:	٣	<b>;··</b>	d

১ কাঠার খাজানা IU১১॥৮ ত কাঠার খাজানা ২।/১৭॥d

মাদ মাহিনা বার যত। দিন তাঁর পড়ে কত।। বিয়ালিশ কড়া ছই কান্তি। আনা প্রতি হুই কড়া ছই কান্তি। বলে শেল ধূলদ্ভি।।

উদ্বি, মাদে যার টা ১২५/ বেতন, সে ৬ মাস ৪ দিনে কত পাইবে ? দিন <sup>ক</sup> মাস .

পাইবে ?	निन र	भ्भ,	
है। ३२५/	8	હ	
10/	311	98	•
৬	€8	840/	
ર	ર	৭৬৮৯/ ওমার	সর বেতন
<b>911</b> -	11 =		
ર =	ગાહગા	= 8 frc4 a	বেডন
10/3611 = 3 मिट्सर (3	जन। १५५०	চয় মাদের বে	ত্ৰ

|d/১৬|| = ১দিনের বেতন। <u>৭৬৮d</u> ছ<u>র মা</u>লের বেতন ৭৮||/৬|| = উত্তর।

#### বৎসর মাহিনা।

বৎসর মাহিনা যার যত। সাসে তার পড়ে কত। টাকা প্রতি এক আনা ছয় গণো আট ক্রান্তি। আনা প্রতি ছয় কড়া হুই ক্রান্তি বলে গোল ধূলদন্তি।

বংসর মাহিনা যার যত। দিন তার পড়ে কত।। তিন কড়া পাঁচ দন্তি। আনা প্রতি হুই দন্তি। বলে গেল ধূলদন্তি।।

## কড়িকসা। .

কাহনে লইবে পথ চৌকে লবে বুড়ি। গণ্ডার লইবে কাক পণে পঞ্ কৌড়ি।। কড়ার লইবে পঞ্চ ভিলের লিখন। শুভ-ঙ্কর দাস কছে বালক বুঝন।। যতেক ভঙ্কার কড়ি বাঁধের ই-লেক দিবে। হইবে গণ্ডার কড়ি দেখা করি লবে।।

উদা। যদি ৪৮/ গা.কাহন এক টাকার কড়ি হয়, তবে

#### মণের নিয়ম।

চারি ধানে রতি হর আট রতিতে মাসা। বারো মাসার তোলা হয় শুন সত্য ভাষা।। আশী তোলার সের হয় শুন দিয়া মন।চলিশ সেবেতে মণ শুন সর্বজন।।পাঁচসেরে পস্থরি হয় চারি সেবে বিশে। এ বিজ্ঞা শিখিলে যুচে অবোধের দিশে

# মণ কসা।

তঙ্গায় লক্ষৰে যত মণ আসবাব। মণেতে আড়াই সের আনার হিসাব।। যত সের থাকরে ছটাক তত হয়। ছটা-কেতে পঞ্চিত শুভন্নৰ কয়।।

हिना। টাকার অসা/ চাউল হইলে ১০ কত চাউল হইবে?

ाठा।/	<u> </u>
1911	11840
4/331	1504

.১ আনার /৮।/১১। জিনিস ।।৫ (১৩५ তিন আনার জিনিস

### টাকার হিসাব মণের প্রতি।

তল্প প্রতি মণ যার হইবেক দর। ভল্পা প্রতি অস্ট গণ্ডা সের প্রতি ধর।। আনা প্রতি দুই কড়া 'গাণার স্বাই তিল। হাভক্ষ দাস কছে এইমত মিল।।

#### সের কসা।

তৈল লবণ মৃত চিনি যাহা কিনিতে যাবে। তক্ষা প্রতি মণ হইলে সের কত লবে ।। আনা প্রতি কত হবে গণায় কত লবে। কড়া প্রতি কি ধরিবে স্থির করিতে হবে।। ইহার নি-त्रम किছू अन निखरात्। होकात्र अस्टे शखा स्मरत नहेर्द যতনে।। আনা প্রতি হুই কড়া বুঝাহ সুশীন। গণ্ডা প্রতি ধরিয়া লইবে অফ তিল।। কড়া প্রতি হুই তিল শুভঙ্কর ভণে। মণক্সা কর শিশু আনন্দিত মনে।।

छेता। यनि है। बाल् ५ था एक ५ मन उत्तरा भावता यात्र, जत्न ঐ হিসাবে /৭ সেরের মূল্য কত? /৭

4110/291	1	いか		
नेवान ५७		150		
8		/د		
2010	্ সেরের দাম।	40/26/	সাত সেরের	মূল্য
	ছটাক :	কসা।		

তম্বা প্রতি মন যার হইবেক দর। তমা প্রতি গুই কড়া চ্টাক প্ৰতি ধর।। আনা প্ৰতি দশ তিল গণ্ডায় অৰ্ধ কয়। শুভঙ্কর দাস করে এইমত হয়।। উনা। ১/০ মণের দাম ৭॥৫/১০ ছইলে॥/•ছটাকের মূল্য কত

हो भाग ३०	11/0
(७॥	19
1/0	91/
<u> </u>	_da

১ ছটাকের মূল্য (৩৮/৫ আনা /১৪/১৫ উত্তর).

#### তোলা কসা।

তক্ষা প্রতি মন যার হইবেক দর। তকা প্রতি ছই কাক তোলা প্রতি ধর॥ আনা প্রতি আড়াই তিল শুভম্বর ভণে। তোলা কসা কর শিশু আনন্দিত মনে॥

উদা। মণের দাম টা ৩৮৫১০ হইলে ৬ ভোলার মূল্য কত ?

সোণা ভবি যত তক্ষা লবে তত পাই। একুন করিয়া অঙ্ক রাথ তিন ঠাই।। এক যুচালে থাকে যত। সোণার রতি পড়ে তত।। অথবা। সোণা ভরি যত ডঙ্কা হইবেক দ্ব। ডঙ্কা প্রতি

তের কড়া এক ক্রান্তি রতি প্রতি ধর।।

অথবা। সোণাকসা বিবরণ শুন শিশু ভাই। যত টাকা তত পাই কর এক ঠাঁই।। ছুই দিয়া পুরি তাকে ভিন দিয়া হরি। প্রত্যেক রভির দাম লইবেক ধরি।।

#### সুদ কসা।

আসলের যত তথা যতনে রাখিবে। যত মাস হবে তত গুণ করে লবে।। এইরপে পূরণ একুন হলে পরে। মোটে ধরে লবে ক্ষদ শতকরা দরে।। শতকরা না হইরা কম টাকা হবে। কি টাকার হিসাব করিয়া ধরে লবে।। এইরপ হিসাবে জুমলা যত হয়। ধার্যা হয় সেই ক্ষদ জানিবে নিশ্চয়।।

উদা। শতকরা মাসিক ৩॥০ টাকা হার স্থ**দে ৩৪০**২ টাকার স্থদ পাঁচ মাসে কত? ৩৪০<sub>১</sub>

> ৫ দিয়া গুণ ১৭০০ আ০ দিয়া গুণ ৫৯০০ উত্তর

# 'বাঁটা কসা।

শতকরা তন্ধার বাঁটা বুকাই স্থাল। তঁকা প্রতি তিন গণ্ডা তিন কাক চারি তিল। আনা প্রতি তিন কাক চারি তিল জান। একুন করিয়া বুঝা বাঁটার প্রমাণ।। আসলে হরিলে অন্ধ যত বাকী রয়। বাঁটা বাদে তত সিকা শুডন্তর কয়।। উদা। শতকরা ৬০ বাঁটা হইলে ৩০ টাকার বাঁটা কত?

৬।

(৩১৪ ডিল × ৬ টা (১৯১৪ ৩০ উত্তর।
১৪ × ৪ আ (১১৬
১ টাকার বাটা /
সলি কসা।

ধান্য চাউল শশু আদি যাহা কিনিতে যাই। তঙ্কা দরে আনা প্রতি কত ত্রবা পাই।। সলি প্রতি পাঁচ পোরা ছটাক কাঠার। শুভঙ্কর সলিকসা লোকেরে শিখার।।

উদা। ১ টাকায় /৬।। ধারু হইলে ।/১০ আনাতে কত থান্ত পাওয়া বাইবে? টাকায় বি: /৬।। ।/১০ তে বিশ প্রতি (১০০; এক বিশে (১)০ (৫।। আড়ি প্রতি /০ পোয়া, ৬ আড়িতে ।৯০ (২৮ কাঠায় ৫ ভিল, ।।০ কাঠায় (১০ (।।১০ আনায় (১)।৯/১০ কঠিছ

দীর্ঘে নৌকা হাত যত। প্রস্তু দিয়া পূর তত ॥ চাড়া দিওণ ক্রিয়া একুন। যত হাত তত মণ্।। কিন্তু সরঞ্জি বাদ আছে নিরপণ। শতকরা দশ মণ শুভঙ্কর কন॥

একখানি নৌকা দীর্ঘে ৩০ ছাত, প্রস্থে হোত, উচ্চতা ২।। ছাত, আধ ছাত খানি রাখিয়া মাল তুলিলে তাহাতে কত মাল ধরিবে ? দীর্ঘ×প্রস্থ× স্থাধ হাত খালি বাদ দিয়া।

> উচ্চতা দিয়াণ = ৩০ × ৫ × ৪ = ৬০০ সরঞ্জনি বাদ ১০ হি ৬০

> > ৫৪০ মণ উ।

# শিশুবোধক। শ্রীগঙ্গাদেবীর প্রতিমূর্ত্তি।



#### शकांत वक्ता।

বন্দ মাতা সুরধুনি, পুরাণে মহিমা শুনি, পতিত পাবনী পুরাতনী। বিষ্ণুপদে উপাদান, দ্রুবময়ী তব নাম, সুরাসুর নরের জননী।। ত্রহ্মকমুগুলে বাস, আছিলা ত্রহ্মার পাশ, পবিত্র করিয়া ত্রহ্মপুরী। জীবে দেখি ছুরাশয়, নাশিবারে ভবভয়, অবনী আইলা সুরেশ্বরী।। সুর্যাবহুশে ভগীরথ, আগে দেখাইয়া পথ, তোমারে আনিল মহীতলে। মহা-পাপী হুরাচারী, পরশে তোমার বারি, স্বকায় বৈকৃষ্ঠপুরী চলে।। সগর রাজার বংশ, এক্ষণাপে হৈল ধ্বংস, অঙ্গার আছিল অবশেষ। পরশিয়া তব জলে,স্বকায়ে বৈকুঠে চলে,সবে হয়ে চতুভূ জ বেশ।। নির্মান তোমার জল, ভক্ষণে অশেষ ফল, রিধি বিষ্ণু চিনিতে না পারে। শিরে ধরি শ্লপানি, আপ-নারে ধন্য মানি, এ মহিমা কে বলিতে পারে।। তুয়া জলে করি পাক, অন্ন আদি কিবা শাক, দেবতা হল্ল ভ করি লয়। সেই অন্ন সুধাময়, ব্যাস-ভাষা বেদে কয়, ভুঞ্জিলে যমের নাহি ভয়।। সগর সঙ্গম নাম, কেবল কৈবল্য ধাম, বিধি বিষ্ণু চিনিতে না পারে। নীচ শুদ্র কি সম্যাসী, মরিলে বৈকুণ্ঠ-বাদী, মকরেতে যেবা স্নান করে।। শতেক যোজনে থাকে, যদি গঙ্গা বলে ডাকে, পবিত্র তাহার কলে-वत । नाम छेकांद्रण कल, विकुत महत्न हल, नाहि দেখে শমননগর।। গতপ্রাণী মৃতকায়া, পিতা মাতা সুত জায়া, শাশানে টানিয়া লয়ে ফেলে। দারা

সুত ঘুণা করে, স্নান করি আইটো ঘরে, সেকালে আপনি কর কোলো। যাবৎ উপায় শক্ত, জ্ঞাতি বন্ধু অন্তর্নক্ত, থৈলে করে দিন চুই শোক। া সে সব সঙ্কট দিনে, তোমার চরণ বিনে, কেহ নাহি আপ-মার লোক।। গতপ্রাণী মৃতকায়, কাকে বা শুগালে খায়, ভেদে গিয়া লাগে তব তটে। হাতেতে চামর ধরি, শত স্বর্গ বিদ্যাধরী, সেবে আসি তাহার নিকটে।। তোমার নিকটে রই, শরট করট হই, কিবা কুশ শুনীর তনর। গঙ্গাহীন দেশে রয়ে, কোটি হস্তীশ্বর হয়ে, যদি রহে সেহ কিছু নয়।। কীটাদি পতঙ্গ পক্ষ, ৰূপ আদি জীব লক্ষ, সকলি তোমার সমতুল। মহাপাপী<sup>°</sup> ছুরাচারী, প্রশে তোমার-বারি, অন্তকালে তুমি অনুকুল।। গঙ্গার মহিমাুষভ, আমি তাহা কৰ কত, বিস্তারিত অনেক পুরাণে। গাইয়া তোমার আগে, গোবিন্দ ভকতি মাগে, চক্রবর্ত্তী শ্রীকবিকঙ্কণে।।

রাগিণী সিস্কু। তাল মধ্যমান।
ভীম্মজননী ভাগীরথী মাতর্গন্ধে।
সগর সন্ততি, গণে দিতে গতি, বিহর সাগর সদে॥
ওমা হরিধারাবতী, অতি ক্রতগতি,
জহুমুনির ধ্যান ভঙ্গে; তারণ কারণ, যমভর বারণ,
বিধার জন্ম কীটপত্যনে॥

#### লিন্ডবোধক। গুরুদক্ষিণা।

ক্লফঃ করোতি কল্যাণং কংসকুঞ্জরকৈশরী, কালিন্দীজলকলোলকোলাছলকুতুহলী। সা তে ভবতু স্থ্পীতে দেবি শিখরবাসিনি। উত্যোগ তথ্যালক জয়া পশুগতিপতিঃ।।

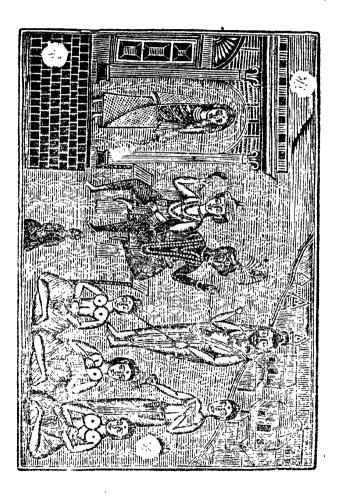
বন্দ প্রভু নারারণ অথিলের পতি। যাঁর পদ সেবেন কমলা সরপতী।। ব্রহ্মার জনম হৈল নাভি-শতদলে। বিষ্ণুর উৎপত্তি হৈল চরণকমলে।। শুকদেব স্থানে জিজ্ঞাসিল পরীক্ষিত। কছ শুনি মুনি কিছু কুষ্ণের চরিত।। গুরুগৃহে যেই কালে হরি হলধর। বিদ্যা শিক্ষা করিলেন অবন্তীনুগর।। অবন্তীনগরে মুনি বড় ভাগ্যবান্। রূপা করি বাড়াইলা মুনির সম্মান।। ব্রাহ্মণ ক্লফের তন্ত্র কভু নহে ভিন্ন। হৃদয়ে ধারণ করেন ভৃগুপদ্চিহ্ন।। মৃত-পুত্র যমালয়ে আছিল মুনির। কেমনে আনিয়া দিল দেব যহবীর।। সেই কথা শুনিতে ব্লাসনা বড় হয়। ক্নপাকরি ক**হ প্রাভু** ব্যাদের তনয়।। ত্রহ্ম-শাপগ্রস্ত আমি আছি সপ্তদিন। উপায় না দেখি কিছু তরিবার চিহু।। মুনি বলে ধন্য অভিমন্ত্যুর नमन । खद्रमिकात कथा खन मित्रा मन ॥ इट्रेम छ পরমায়ু খট্টাঙ্গ রাজার। জ্রীভারতকথা শুনি হইল উদ্ধার।। তোমার দীর্ঘল আয়ুঃ সপ্তদিন বুটে। **७**न **७**न कृष्णकथा विज्ञा निकटि ॥ कश्म तथ

করি হরি গিয়া মথুরায়। কারাগারে উদ্ধার করিল বাপ মায়।। মাতামুহ উগ্রসেনে দিলা রাজ্যভার। বস্তুদেব দেবকীর আনন্দ অপার।। কিছু দিন বাছা মোর ছিলা নন্দালয়ে। লুকায়ে রাথিয়াছিলাম হুষ্ট কংসভয়ে।। এখন আমরা মরি<sup>-</sup> তোমা বিদ্যমানে। ও চাঁদকমলমুখ হেরিয়া নয়নে।। পিতা মাতা, সান্ত্না করিয়া চক্রপাণি। কিছু দিন মথুরায় ছিল রাজধানী।। একদিন বহুদেব পিতৃ-व्याक्रिमिता निमित्रिश आनिल अपनक विकर्गता। অধ্যাপক ভট্টাচার্য্য বড়দরশন। মহামহোপাধ্যায় সব বিজয়ী ভূবন।। নিধিকৃষ্ণ ঘোষাল সাক্ষাৎ সর-স্বতী। জগন্নাথ সার্ব্বভৌম শুমি বাচস্পতি।। গদা-ধর পঞ্চানন মিশ্র হলধর। রঘু বিদ্যাভূষণ পণ্ডিত দামোদর।। যহুকুলাচাগ্য মুনি আইলেন গর্গ। চক্দ-চুড়া সিদ্ধান্ত প্রভৃতি দিজবর্গ।। সভাতে বসিলা আসি রুষ্ণ বলরাম। ভুবনমোহন রূপ জিনি কোটি काम।। कृषील कुछनाह्रे वननकमन। कर्नमूल শোভা করে মকরকুণ্ডল।। শ্যাম অঙ্গে পীতবাস গলে বনমালা। নবীন জলদে যেন স্থৃন্থির চপলা।। চূড়ায় ময়ুরপুচ্ছ হেলে মন্দবায়। মনোহর মুকুতা সুচারু নাসিকায়।। অরুণ কিরণ করে পাদপদ্ম হুটি। তাহে শোভা করিয়াছে যেন হেম কোটি॥ নখচন্দ্রে উজ্জ্বল হইল সভাস্থল। অযোধ্যারামের গতি ও পদক্মল ॥

্রামক্লফ রূপ দেখি যত সভাসদ। হইল জীবন মৃক্ত হেরি রাঙ্গাপদ।। হেরিয়া পরমত্রক্ষা ভাব হুই জন। বিদ্যার মহলা দেয় যত দ্বিজ্ঞগণ।। মুগ্ধবোধ ব্যাকরণ কেহ পড়ে স্মৃতি। কেহ পড়ে তর্কশাস্ত্র আগমের পুথি।। কেহ্থ পাঠ করে নাটকের স্লোক। অৰ্থ না বুৰিতে পারে যত মুর্থলোক।। বেদান্ত নিগম সন্ধি পণ্ডিতে বাখানে। অর্থ করে চাহিয়া क्रास्थ्र मुर्थभारन।। (गांविष्म बर्लन छन नाना इल-পাণি। শান্তের সন্ধান মোরা কিছুই না জানি॥ নন্দালয়ে গরু চরাইতে গেল কাল। 🕮 দাম সুদাম माय मकिन दांथान।। पूर्व इडेनांग क्रांटर विमा ना শিথিয়া। পিতৃদোষে মুর্থপুক্ত দেখনা ভাবিয়া।। বিদ্যাহীন জনার জীবন অসার্থক। হংসমধ্যে শোভা যেন নাহি পায় বক। । স্বদেশে পৃক্তিত রাজা রাজ্য করতল। বিদ্যাবন্ত যে জন পূজিত ভূমগুল।। আমরা ইহাতে দোঁহে যহুকুলে জন্ম। না জানিলাম কোন শাস্ত্র না জানিলাম মর্ম।। বামনে ত্রিপাদ ভূমি বলি দিল দান। হইপদে স্বৰ্গ মৰ্ত্য গেল ছইস্থান।। আর এक পদ দিল বলির মস্তকে। নাগপাশে वन्मी रेश्ल সকলেতে দেখে।। প্রভু কহিলেন শুন দানব ঈশ্বর। দুই কথা কহি তুমি অবগত কর।। শত মূর্থ লয়ে তুমি স্বর্গে কর বাস। পঞ্চ বুধ লয়ে কিঁ পাতালে অভিলাষ।। বলি কহে মূর্য সহ স্বর্গে কাষ নাই। লইয়া পণ্ডিত পঞ্চ রসাতলে যাই।। মূর্থ সহ বুধজন আলাপ না করে। বিদ্যাণিকা করিতে যাইব দেশা-স্তবে।। জন্মদাতা জননীর অন্তমতি লই। মথুরা আ-मिव पूनः **भागक्**र वह ॥ विरवकी श्रेटन काम्मिरवन মাতা পিতা। রচিল অযোধ্যারাম নূতন কবিতা'।।

ভবে হলধর হরি, মনে মহা. খেদ করি, গেলা বথা জনক জননী। প্রণমিয়া করপুটে, দাগুইয়া সন্মিকটে, কহিতে লাগিলা যতুমণি।। পণ্ডিত সভার ঘাঝ, পাইলাম বড় লাজ, বিদ্যাহীন জন' কেন वैं। कांनीभनि पुनिवत, व्यवहीनशहत घत, विद्या শিক্ষা করি তাঁর কাছে।। গুনিয়া পুজের বোল, প্রাণ হৈল উ**ত**রোল, কোলে করি কহেন কান্দিয়া। আমার পরশমণি, কি কথা কহিলে শুনি, কোথা যাবে জননী ছাড়িয়া ৷ আগে হৈল ছয় বংশ, বিনাশ করিল কংস, তোমা পুত্র পাইলাম শেষে। নন্দ ২শোদার ঘরে, লুকায়ে রাখিলাম ভরে, মোরা বন্দী এ রম্ব বয়সে।। তোমা পুত্র গুণনিধি, যদি মিলাইল বিধি, দেশান্তরে যাত্তব আর্বার। গুরু আনি দিব গুহে, বিদ্যাশিকা কর দোঁহে, নয়নে দেখিব আপ-নার।। আমরা মরিয়ে যাই, তার পর হুই ভাই, করিছ যেমন মনে লয়। তোসরা তনয় যার, এমত দ্র্গতি তার, শোকে প্রাণ বাহির না হয়।। বসুদেব বলে বাণী, শুন পুক্ত নীলমণি, বুঝি মোর সংশয় জীবন। রাম গেলে বনপথ, শোকে মরে দশরথ, পাছে হয় আমার তেমন।। পিতা মাতা শোকাতর, দেখি রাম গদাধর, প্রবোধিয়া কহেন যতনে। ঘরে রহ স্থির হই,আসিব মাস হুই বই, এত উত্রোল কি কারণে।। ক্লফমায়া বুঝা ভার, মোহ হৈল বিধাতার, ইহাতে কোথায় অন্য জন। শুভক্ষণে যাত্রা করি, চলিলেন রাম হরি, বন্দি মাতা পিতার চরণ।। শুভ ত্রয়োদশী তিথি, পুষ্যা কুড়ি দও স্থিতি, গুরুবার

## निख्दाक्क। नान्दीभनी मूनित পाठमाना।



গমন উত্তর। প্রথমাতাহায়ণ মাস, দশদিক্ মুপ্রকাশ, গমন কৈল অবন্তীনগর।। পৃথিক যতেক যায়, রাম কৃষ্ণ পানে চায়, ভুবনমোহন ছই ভাই। কোন ভাগ্যবতীম্বত, হেন রূপ অমুত, ভুবনে তুলনা দিতে নাই।। তাহা সবা দেখি হরি, জিজ্ঞাসেন যত্ন করি, অবন্তীনগর কত দূর। কভু হেখা আসা নাই, পথ বলি দেহ ভাই, সান্দীপনী ভূদেবের পুর।। অনন্ত বেলাণ্ড ঠাই, কিছু অগোচর নাই, জিজ্ঞাসা কেবল বিড়ম্থনা। দিন গেল অফারণে, অযোধ্যারামের মনে, ঐ পদ সতত ভাবনা।।

এতিন মাসের পথ অবন্ধীনগর। তিনদিনে উত্ত-রিল হরি হলধর।। বেলা অবসান হৈল অস্ত যায় ভানু। সান্দীপনী মুনির ছারেতে রাম কানু।। দিজের ভাগ্যের কথা কি দিব তুলন। রূপা করি ভবনে আইল নারায়ণ।। পুত্রশোকে ব্রাহ্মণীর সদা অশ্রুপাত। বলে কোথা আছ মোর বন্ধু জগন্ধাথ।। পতিতপাবন তুমি বলে জগজ্জন। একবার হুংথি-নীরে দেহ দরশন।। সতী অতি পতিব্রতা রুফ বলি ডাকে। হেনকালে হুইভাই আইল সন্মুখে।। আন্তে-दारख बाक्स बाक्स १ इरेकन। नगरन पिरिल जानि রাম জনার্দ্দন।। পুলকে আকুল তন্ত্র সজলনয়ন। সবিনয়ে জিজ্ঞাসা করেন তপোধন।। কে তোমরা দুই ভাই দেহ পরিচয়। কোথা হৈতে আইলে কহ কাহার তনয়।। সামান্য বালক নহ দেব অবতার। আশ্রম পবিত্র আগমনেতে তোমার।। আগমন তব ্মমালয়ে কিবা হেতু। বিধি বুঝি ছঃখের সাগরে

দিলা সেতু।। কহিতে লাগিল ক্লফ্চ যোড় করি ভুক্ষ। আমরা হভাই বস্থদেবের অঙ্গজ।। রুষ্ণ বলরাম নাম শুন মহাশয়। রূপা করি রাথ যদি আপন আলয়।। তুমি গুরু কল্লভরু বিখ্যাত ভুবন। পশ্চাতে দক্ষিণা দিব শক্তি যেমন ৷৷ মুনি বলে আমার ভাগ্যের নাহি ওর। পরম পুরুষ তুমি শিষ্য হবে মোর।। পূর্ব্বে শুনিয়াছি আমি রামের চরিত্র। বৈকুণ্ঠের নাথ রাম গুরু বিশ্বামিত্র।। তেমনি তো-মারে আমি বিদ্যা দিব দান। পাইব পরমপদ ইথে নাহি আন।। মুনির যেমন ভক্তি ত্রাহ্মণী তেমন। শুভদণে বিদ্যা আরম্ভিল হুই জন।। ব্রাহ্মণবালক আর শিষ্য কতগুলি । সুদামারে গোবিন্দ ডাকেন স্থা বলি।। গুরুর চরণে দোঁহে করিল প্রণাম। হস্তে थि । धितान कुछ दलताम ॥ क थ श घ जां नि कति চৌত্রেশ অকর। দৃষ্টিমাত্র শিখিলেন হরি ইলধর।। ক ক্য অবধি আর ফলা সাঙ্গ করি। লিখিবারে নাম গ্রাম শিখিল জ্রীহরি।। অঙ্কণাস্ত্র লিখিয়া করিল সমাপন। পাঠ আরম্ভিল মুগ্ধবোধ ব্যাকরণ।। অফ শব্দ মূল টাকা পড়ে অভিধান। টাপ্পনী নৈষধ স্মৃতি বরাহপুরাণ।। মীমাৎসা বেদান্ত তর্ক-শাস্ত্র মেঘদূত। ভটিরঘু বাথানিল জ্যোতিষ অ-**ढु**ठ।। नाउँक नाउँका हत्मारक्षती मीशिका। जा-গম নিগম বেদ বাখানিল টীকা।। আপনি অখিল-গুরু সর্ব্বশাস্ত্রবক্তা। অনন্ত ব্রহ্মাণ্ডপতি ভারতীর ভর্তা।। গুরু মাত্র উপলক্ষ একবার কন। ছই মাস চারিদিনে পাঠ সমাপন।। শিথিল চৌষ্টি বিদ্যা গুরু

বিদ্যমানে। অযোধ্যারামের গভি ও রান্ধাচরণে।। দৈৰবোগে এক দিন মুনি নাই ঘরে। গিয়াছেন ফল পুষ্প অনিবার তরে।। হেনকালে গুরুমাতা ডাকে শিষ্যগণে। আমার বচন বাছা শুন সর্বা-জনে।। রন্ধনের কফ পাই তৃণকাষ্ঠ বিনে। কাষ্ঠ ভাঙ্গি বাছা সব আন গিয়া বনে।। রামকৃষ্ণ আদি করি যত জন ছাত্র। কাননে চলিল গুরুমায়ের আজ্ঞামাত্র।। দূর বনৈ প্রবেশিয়া তৃণকাষ্ঠ কাটি। একে২ বোঝা বান্ধিলেন আটি২।। নদীজলে স্নান করি ফল জল খান। ভবনে গমন কৈল বেলা অব-সান। বিষম কুষ্ণের মায়া বোঝা নাহি যায়। অক-স্থাৎ ঝড় রুষ্টি হইল তথায়।। রজনী সম্মুখে হৈল ঘোর-অন্ধকার। পথ হারাইয়া দিশা লাগিল সবার।। রক্ষের কোটরে সবে বঞ্চিল রজনী। গৃহেতে আইল হেথা মুনি সান্দীপনি।। জিজ্ঞাসিলা ত্রাহ্মণীকে শৃন্থ কেন ধাম। কোথাকারে গেল মোর ক্লফ্ড বলরাম।। ব্ৰাহ্মণী বলিল ঐ শোকে প্ৰাণ শোষে। কাষ্ঠ হেতু বনে গেল মোর বাক্যদোষে।। মুনি বলে তুমি মোর হইলে কৈকেয়ী। ধরিতে না পারি প্রাণ রামক্ষ বই।। পাইয়া পরশম্পি হারাইলা হেলে। আহা মরি বাছা রামক্লফ কোথা গেলে ।৷ কান্দিয়া রজনী পোহাইল হুইজনে। প্রভাতে চলিল মুনি রুষ্ণ অম্বেষণে ।। হেথা বলদেব হরি কান্ঠ লয়ে পিরে। ক্ষুধায় অবশ তন্ম গতি ধীরে২।। হেনকালে গুরু সঙ্গে পথে দরশন। কাষ্ঠ রাখি প্রণাম করিল সর্ব-জন। বলরামে কোলে করি ত্রাহ্মণ বিকল। প্রলকে

আকুল তকু নয়ন সজল।। ত্রাহ্মণী ধাইয়া গিয়া কোলে নিল হরি। চাঁদমুখে চুম্ব খান শত ক্ষেহ করি কহিতে লাগিল বাক্য হয়ে উতরোল। নন্দালয়ে শোভা যেন যশোদার কোল।। নিষ্যগণ সঙ্গেতে আইল নিজ পুর। পাইল যতেক ছঃখ সব গেল एत ।। शतम जानत्य (परी कतिला तकन। এक एक বসিয়া সবে করিল ভোজন।।. এই রূপে ছিল তথা দিন ছয় সাত। বিদায় হইতে গেলা গুরুর সাক্ষাৎ।। বহু দিন আসিয়াছি মথুরা ছাড়িয়া। জননী জনক দোঁহে বিকল কান্দিয়া।। স্থপনে দেখিলাম অদ্য দৈবকী জননী। রোদনে প্রভাত আজি হইল রজনী শিখেছি সকল বিদ্যা তোমার সদনে। দক্ষিণা কি দিব আছা কর ছইজনে।। কান্দিয়া গেলেন মুনি ত্রাহ্মণীর ঠাই। রামক্লফ বিদায় মাগেন হুই ভাই।। আকুল হইল প্রাণ এ কথা শুনিয়া। দক্ষিণা কি চাহ তুমি চাহি লও গিয়া॥ দাণ্ডাইল দোঁহে আসি ক্লুফের গোচর। পুত্রশোকে হুই জন বড়ই কাতর।। এক পুত্ৰ ছিল মধুমঙ্গল নামেতে। জলক্ৰীড়া হেতু পুত্ৰ গেল সমুদ্রেতে।। শঙ্খানামে অসুর করিল্ বংশ নাশ মুতবং হয়ে আছি সদাই হুতাশ।। তোমরা সামান্য নহ হুই সহোদর। বলেছেন কপিল নারদ মুনিবর।। নন্দালয়ে ছিলা যবে রুন্দাবনে বাস। গোবর্দ্ধন ধরিলে বাপু শুন জ্রীনিবাস।। কালিন্দীর বিষজন রাখালের গণ। পান করি মরিয়া আছিল সর্ব্বজন।। প্রাণদান দিলা তুমি করে সুধার্ষ্টি। ভোমার মান্নাতে মোর গেল পরমেষ্টা।। উভিরার

গর্ম্ভে মরে অভিমন্ত্রস্ত। মরা পুত্র জীয়াইলে কাহিনী অন্তুত।। ত্রিলোকেতে ভোমার অসাধ্য কর্ম নাই। মরাপুত্র দান দেহ এই আমি চাই।। ধেই মরে সেই যায় যমের ভুবন। সেই পুর্ত্র আনি দেহ রাম নারায়ণ।। এত বলি দোঁহে পড়ি ধরণী লোটায়। চেতন পাইয়া পুনঃ ক্লফ পানে চায়।। নানে গলিত ধারা কম্পিত ছদয়। ভকতবৎসল ক্লফ হইলা সদয়।। না কান্দহ গুক্রমাতা হির কর হিয়া। আনি দিব তব পুত্র যমালয়ে গিয়া।। শুনিয়া ত্রাহ্মণী মনে হইল উল্লাস। ঈশ্বর কি হেন দিন করিবেন প্রকাশ।। প্রবোধ করিয়া তাঁরে রাম জনার্দন। ম্যালয়ে যাত্রা কৈল জ্রীমধুস্থনে।। কহেন অযোধ্যারাম শুন রমাপতি। ওখানে আমার যেন নাহি হয় গতি।।

গুরু পুঁজ দিতে দান, যাত্রা কৈলা ভগবান, স্মরিয়া জ্রীপার্বতী শক্ষর। দেখিতে কৌতুক বড়, দেবগণ হৈল জড়, প্রজাপতি আদি পুরন্দর।। অসংখ্য সমুদ্র জলে, শখাসুরে ধরি হেলে,উদর বিদার কৈলা তার। অজিন ফেলিল দূরে, মারিয়া দে শখাসুরে, নাহি পান মুনির কুমার।। শখার জনম ধন্য, তাহে কৈল পাঞ্চজন্য, করে করি করিলা গমন। বাজাইলা এক বার, নিনাদ শুনিয়া তার, স্তব্ধ হৈল এ তিন ভুবন।। চতু ভুঁজ বেশ ধরি, যথালয়ে গেলা হরি, পাণিলোক দেখিল নয়নে। নরক হইতে তরি, দিব্য রথে ভর করি, গতি কৈল অমরভুবনে।। দেখিয়া পুরুষোত্তম, পাদ্য অর্ঘ্য দিল যম, কুতাঞ্চলিপুটে পরীহার।

মোরে দিলে অধিকার, কেন হেন অবিচার, পাপি-গণ रहेन फेक्कांत ।। हेहा (कन कहर, मुहूरर्खरक यनि রহ, এক প্রাণী না থাকিবে হেথা। হাসিয়া বলিল হরি, শুন নিবেদন করি, সান্দীপনী মুনির বারতা।। তাঁর এক পুত্র ছিল, এই শন্ধা বিনাশিল, আছে সেই ভোমার পুরেতে। তারে দেহ আমি নড়ি, যম বলে পায়ে পড়ি, এই লহ সান্দীপনী স্থতে।। সমুৱে করহ গতি, শুন কমলার পতি, তিল আধুনা কর বিশ্রাম। মম শুভদিন আজি, এত বলি রথ সাজি, দিল আনি করিয়া প্রণাম।। গুরুপুত্র লয়ে সুখে, চলিল উত্তরমুখে, বিমানে করিয়া আরোহণ। আ-কাশে হুন্দুভি বাজে, হৈরিয়া সে দেবরাজে, করেন কুসুম বরিষণ।। হেথা সান্দীপ্রনী থাষি, নিদ্রা নাই সেই নিশি, ভাবনা পাইব পুত্রদান। অলজ্য রু-ক্ষের বাণী, নিশ্চয় মনেতে জানি, এখনি আঁসিবে ভগবান।। দক্ষিণ নয়ন নাচে, এমন সময় কাছে, উত্তরিল রামজনার্দন। নতি করি করপুটে, দাণ্ডাইল সন্নিকটে, এই লহ আপন নন্দন।। যেন আকাশের শশী, ভবনে পাইল বসি, আনন্দের নাহিক অবধি। অযোধ্যারামেতে কয়, হরি বড় দয়াময়, মোরে পার কর ভবনদী॥ 🎿

ধরাতলে ধন্য সান্দীপনী মুনিবর। যমালয়ে ছিল পুক্ত ঘাদশ বংসর।। হেলে গুরুপুক্ত দান দিল যদুমণি। ত্রিভূবনে হেন কর্ম কখন না শুনি।। মরা পুক্ত আনি দিল গুরুর দক্ষিণা। আর কার শক্তি আছে ভগবান বিনা।। গুরু স্থানে বিদায় মাগেন

ছুই ভাই। ব্ৰাহ্মণ ব্ৰাহ্মণী কান্দে ধরণী লোটাই ॥ এত দিনে আমার আশ্রম হৈল শূন্য। রামচন্দ্র বিনা যেন অযোধ্যা অরণ্য।। কি করিবে ধনে জনে কি করিবে কায়া। দিন কত সংসার সকলি মিছার্যায়া।। এই বর দিয়া যাও দয়াময় হরি। ঐ পদ ভাবিতে২ যেন মরি।। আজ হৈতে অবন্তীনগর হৈল মুক্ত। অঘোধ্যা মথুরা গয়া কাশী কাঞ্চী যুক্ত।। মুনিরে অভয় দিয়া যান হলপাণি। কৃষ্ণ দরশনে মুক্ত ব্রাহ্মণ ব্রাহ্মণী।। ক্লফের গমনে কান্দে অবন্তীর লোক। মথুরা যাইতে যেন গোকুলের শোক।। সিংহাসনে উত্রসেন বসিয়া সভায়। হেনকালে রাঘ কুঞ গেলেন তথায়।। দেখি ধানন্দিত হৈল মথুৱা নিবাসী। হাত বাড়াইয়া যেন পাইলেক শশী।। মাতামহে বন্দি গেল কৃষ্ণ বলরাম। মা বাপের পদে র্গিয়া করিল প্রণাম।। ছই মাস পরে পুত্রের হেরিয়া বদন। কোলেতে করিয়া চুম্ব খান ততক্ষণ।। যমালয় হইতে মৃতপুত্র দিল দান। বিস্তারিয়া হেন কথা কহেন তখন।। শুনিয়া বিশায় হৈল জনক জননী। তোমরা মন্তব্য নহ অখিলের মণি।। তুই পুত্র কোর্লে করি জননী দৈবকী। সর্ব্ব হুঃখ পাস-রিলা পরমকৌতুকী।। চৌদবৎসরের পর কৌশল্যা যেমন। রামচন্দ্র পারে যেন অযোধ্যাভুবন।। জন-নীর কোলে নিজা যায় হইজনে। সেই দিন যশো-मारत (मिथन अथरन।। करत ननी नन्मतां निर्छ-্ছেন মুখে। কান্দিয়া উঠেন ক্লফ ধারা বহে বুকে।। ' জিজ্ঞাসা করেন দেবী কহ বাছাধন। কি হুঃখ উঠিল ষনে কর্ছ রোদন।। কহিতে লাগিল ক্লফ্ড গদগদ वांगी। खनरन प्रिचे आिक माठा नमहांगी। পালন করিল যত না পারি কহিতে। জনম তাঁহার গেল কাঁন্দিতেই।। আমা বিনা মা বলিতে কেই নাহি আর। ভাবিতে বিদরে বুক শোক পারা-বার।। কোথায় রহিল নন্দ ব্রজশিশুগণ। কোথায় রহিল মোর গিরি গোবর্দ্ধন।। ,প্রিয়া রাধা চন্দ্রাবলী গোপিকা সকল। যমুনাসলিল আর বিহারের স্থল দৈৰকী বলিল বাছা অনিত্য সংসার। তোমাতে সকল আছে মায়া বুঝা ভার।। ত্রহ্মা আদি মোহ হ**ইল তো**মার মায়ায়। জন্মমাত্রে চতুন্তু জ দেখেছি তোমায়।। যমালয় ইইতে মুতপুত্র দিলে দান। ইহাতে তোমায় হয় কি মন্ত্রন্ধ জ্ঞান।। তুমি বা কাহার পুত্র কেবা মাতা পিতা। আপনি অখিল-পতি দেবের দেবতা।। দৈবকী মায়ের বোল জা-নিয়া মাধব। মায়া করি ঘুচাইলা জননীর স্তব।। পুত্র বোধ করি দেবী পুত্র কৈল কোলে। গৃহকর্মে গেল মন পড়ে দেল ভোলে।। গুরুদক্ষিণার কথা শুনে যেই জন। রোগশোক পাপতাপ হুংখ বিমোচন।। জিমিয়া ভারতভূমে রূপা কাল যায়। যে জন চতুর হয় ভজে ক্লফ্ষপায়।। সংসার সকলি মিথ্যা অনিত্য শরীর। টলমল করে যেন পদ্মপত্র নীর।। কলি-ঘোরে মায়াভোরে পড়ে কেন থাক। নিজ ঘরে পাকে যেন তসরের পোক।। যেন তেন প্রকারেণ মনে কৃষ্ণ রাখ। ভক্তিভাবে নন্দস্থতে পুনঃ২ ডাক।। গৃহবাস বড় ফাঁস এড়াইবে কিসে। কলেবর জর্থ

কাল অবশেষে ।। নিরন্তর কালচর ফিরে পিছেই।
বিনা ইরিনামে নাহি ভবকূপ ঘুচে ।। শুন শুন সর্ব্ধলোক এক মন হৈয়া। ভজহ ক্ষঞ্চের নাম মন মজাইয়া।। কলিতে হরির নাম বিনা গতি নাই। সংসারের সার বস্তু ভজ ওরে ভাই।। তার সাক্ষী জগাই
মাধাই হুইজন। তারে ভজাইল প্রভু রাম নারায়ণ।। ক্ষনামায়ত পান যেই জন করে। আপনি
শমন রাজা কি করিতে পারে।। ভক্তি বিনা ক্ষণপদ কেহ নাহি পার। সকলের মূল ভক্তি কহিলাম
সবায়।। অযোধ্যারামেতে কয় দয়াময় হরি। ঐ
পদ ভাবিতেই যেন মরি।। এত দূরে শুরুদ্দিশা
সমাপ্ত হইল। বন্ধুজন মিলি সবে হরি হরি বল।।

### দাতাকৰ্।

বৈশাপায়ন বলে শুন জনমেজয়। মহাভারতের কথা শুন
মহাশার।। এক দিন বাস্থানে ভাবিলা অন্তরে। কর্ণ যে কেমন
দাতা বুঝিব তাহারে।। যে যাহা মাগারে কর্ণ তাহা দের দান।
সবে বলে দাতা নাই কর্ণের সমান।। এক দিন যাব আমি
কর্ণের নিকটে। বুঝিব সে কর্ণ বীর কেমন দাতা বটে।। এই
কথা মনে মনে ভাবি নারায়ণ। মায়া করি হৈল এক রদ্ধ যে
বাক্ষ্ণ।। অতি রদ্ধ রূপ হৈল গুই চক্ষ্ অন্ধ। কর্ণকৈ ছলিতে
গোলা প্রস্কু ক্রকচন্দ্র।। চলিতে শক্তি নাই কাঁপে ধরং। কং

র্ণের নিকটে গোলা প্রভূ গদাধর।। ছারিকে ডাকিয়া বলে প্রভূ ठक्रशानि। सात्र मर्गाठांत्र कर्त खानार व्यापनि ॥ तक बाक्रन पिथि उम्र टेरन हिटल। कर्निक हलिन मानी नमाहाद मिटल।। व्यनाम कतिया बादी याज्य एक कत्र। तक बाक्तन वंक माला-ইয়া মহাশয়।। মোর স্মাচার দেহ বলে ভিজবর। কর্ণকে আশীৰ করি যাব আমি যর।। হেন রন্ধ নাছি দেখি আপনার জ্ঞানে। বুঝিয়া করহ কার্য্যাহা লয় মনে।। প্রাক্ষণের নাম শুনি কুন্তীর নন্দন। অতি শীঘ্র আইলেন যথায় ব্রাহ্মণ।। ব্ৰাহ্মণ দেখিয়া কৰ্ম পারম আদরে। • গালায় বসন দিয়া দণ্ডবৎ করে।। বসিতে আসন দিয়া ্যোড়হত্তে কয়। কোন কার্য্যে आहेला पिछ किया आछा इश्।। बाक्सन यत्न कर्न कर कर कर ধান। লোকমুখে শুনি ভূমি বড় পুণাঁবান॥ কালি করিয়াছি আমি ব্রত একাদ্শী। পারণা করাছ মোরে আছি উপবাসী।। আর এক আছে মোর মনের বাসনা। মাংস বিনা নাছি হয় ত্রতের পারণা।। উদর পূরিয়া মাংস করাছ ভোজন। আশীয করিয়। আমি যাব নিকেডন।। কর্ণ কলে দ্বিজবর মন স্থির কর আনিব প্রচুর মাংস যত খাইতে পার॥ মৃগমাংস পক্ষিমাংস আনিব প্রচুর। যে মাংস খাইতে পার ত্রাহ্মণ চাকুর। কবিচন্দ্র বলে কর্ণ হও সাবধান। দাতা বুঝিবারে আইল প্রভু ভগবান শুনিয়া হাসিয়া কর্ণে দ্বিজ্বর কয়। পারণ করাছ কর্ণ বিলম্ব না সয়।। কর্ণ বলে বিজবর যেই আজ্ঞাকর। সেই মাংস আমি দিব ভোমাবরাবর।। ত্রাহ্মণ বলেন কর্ণ কিবা দিতে নার। তবে সে কহিব আগে অজীকার কর।। কর্ণ বলে অজী-কারে অক্তথা না হব। যে মাংস খাইতে চাহ ভাছা আনি দিব।। ধন্তং কর্ণ ভূমি বলেন গোদাঞি। ভোমার সমান দাতা ত্রিভূবনে নাই।। রষকেতু নামে আছে তোমার নদন।। তারে কাটি দেহ মাংস করিব ভোজন ॥ জ্রীপুক্ষে হুইজনে কাটিবে করাতে। রন্ধন করিয়া দেহ আমার সাক্ষাতে॥ হা-সিয়া কাটিবে পুজে মা হবে কাতর।এ যশ থাকিবে ভব ভুবন ভিতর॥ কাতরে কাটিয়া দিলে মাংস নাহি খাব। নরকন্থ হবে. ভূমি কিনে ঘরে যাব।। ভেঁটমাথা হৈল কর্ণ এই কথা শুনি। লৰ্মনাশ হৈল বলি মনে২ গাণি॥ পিতা হয়ে পুত্ৰে আমি কা-

টিব কেমনে। কলঙ্ক আমার বড় হবে ক্রিভূবনে।। মারা করি इनिवाद्य कारेन कांन छन। এउ मिटन विशादक ठिकाटन নারায়ণ।। কর্ণ বলে দ্বিজ্ঞবর ছও সাবধান। রাণীকে জিজ্ঞানি আসি বৈস এই ছান।। পাগাবতী নামে আছে কর্বের রমণী। পাগার নিকটে কর্ব গোলেন আপনি।। বিরস বদন কেন পাগা-বভী কহে। মুখে নাছি সরে বাণী চক্ষে ধারা ৰহে।। কর্ন বলে আর কিবা দেখ পদ্মাবতি। এত দিন পরে মম হইল জ-খ্যাতি ।। পদাবতী বলে শুনি কারণ ইছার । কি লাগি কলঙ্ক আজি হইল ভোমার।। "কর্ণ বলে প্যাবতি প্রাণ নাহি রয়। কহিতে পরাণ ফাটে না কহিলে নয়।। কোথা হৈতে জাইল এক রন্ধ ব্রাহ্মণ। বড় নিদাকণ কথা কছিল সে জন।। কর্ণ বলে সেই কথা মুখে না জুৱার। কছিতে দাকণ কথা বক কেটে যার।। রষকেতু নামে আছে ভোমার নন্দন। তারে কাটি মাংস দেহ করিব ভোজন।। পিতা মাতা ছই জনে কাটিবে করাতে। রন্ধন করিয়ে দেছ আমার সাক্ষাতে॥ হাসিরা কা-টিবে পুলে না হবে কাউর। কাতরে কাটিয়া দিলে ফিরে যাব ঘর।। পদাবতী বলে নাথ কি বলিব আর। এ কথা শুনিয়া বুক বিদর্বে আমার।। পঞ্চ বৎসরের শিশু কিছুই না জালে। মা হরে বাছারে আমি কাটিব কেমনে।। হস্তী ষোড়া রথ দিব রতন কাঞ্চন। এ চারি ভাঙারে আচে দিব যত ধন।। আপ-নার প্রাণ দিব বিজের সাক্ষাতে। রুষ্কেতু বাছা আমি না निव कांकिं ।। अभोकां व कत जूषि कि कर े उने माटक। ca-মনে করাত ধরি কাটিব বাছাকে॥ হাসিয়া বাছারে আমি কা-টিব কেমনে। আপনি কাটিয়া দেহ আপনার মনে।। এমন দারুণ পণ কেছ নাছি করে। শুনিতে নিষ্ঠুর কথা পরাণ विमद्रा। कर्ग बटल এই कर्च यमि ना कतित्व। अभीकात उक হলে নয়কে পড়িবে।। কর্ণ বলে একবার দেহ অসুমতি। দাতাকৰ বলৈ বাম রাখ পদাবতি।। ছেনকালে বিজবর ডাক निया करा। नीख कवि आहम कर्ग विलय ना मत्र॥ अनीकांद्र করিয়াছ শুন কর্ণ ভাই। বল যে পারিব নাই ফিরে ঘরে যাই এত শুনি পদ্মাবতী সকাতরে কয়। অঙ্গীকার করিয়াছ না निट्न कि इम्र ॥ शृत्क कार्षि निव जामि वनइ डामारा । व वनः

তোমার যেন থাকে ক্লিভুবনে।। অনুমণ্ডি পেরে কর্ণ হালে খলখন। ভিজ কবিচন্দ্রে গায় গোবিন্দমক্ষ।।

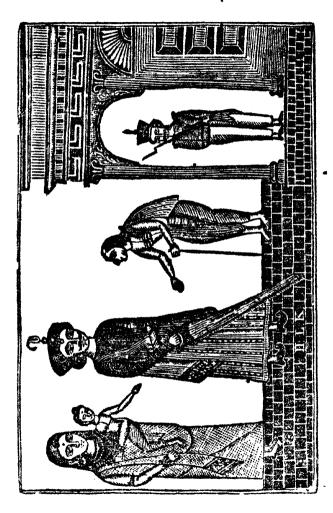
कर्न बटल विकवत्र अन भात्र वागी। करानक विलय कर পুত্রে ডাকি আনি।। ইহা বলি যান কর্ণপুত্রে ডাকিবারে। র্ষকেতু শিশুসঙ্গে খেলিছে বাজারে। কোথা বাছা র্বকেতু ডাকে ঘন ঘন। খেলা ছাড়ি একবার আইস বাছাধন।। আইসং বলি কর্ণ ডাকে উভরায়।। খেলা ছাড়ি র্যকেতু শুনিবারে পায়।। রষকেতু সঙ্গীগণে কছিতে সাগিল। ডাকি-ছেন পিতা কেন ঘরে যাইতে হৈল।। পাচায়ে দিয়াছেন माजा (थिलिवात छटत। कि हूरे ना थारे वटल छाकिए हन মোরে॥ ভোমরা থেলাও সবে বলে ছাসিং। কি জন্মে ডা-কেন পিত। জিজাসিয়া আসি।। ইহাবলি রুষকেতু করিল शपन। ११ रेट्ट किट्र चारेल करर्ने बन्मन ॥ त्रुयरके वरल क कथा देश मरन। क्वांटिक आहेनू कथा छन निलगत।। (थिनिटि आंत्रिय यि (वँटि थोकि डोई। मञ्जूरी मनाद कार्ष्ट ছইমু বিদার।। অনিত্য শরীর ভাই জানহ সকল। ছির নাছি হয় যেন প্রপত্তল।। বিদার হইয়া যাই স্বার সাক্ষাতে। বেঁচে যদি থাকি ভাই আসিব খেলিতে॥ চমৎকার কথা শুনি বলে শিশুগণ। হেন বাক্য তব মুখে না শুনি কখন।। কর্ণের নিকটে তবে রুষকেতু আইল। আইস বাছাধন বলিকোলেতে করিল।। মুখেতে চ্ম্বন দিল কর্ণ মহামতি। কোলে করি লয়ে গেল যথা প্রাবতী।। রষ্কেতু মুখ ছেরি প্রাবতী বলে। ম-রিরে অভাগীব বাছা আইস করি কোলে॥ আইসরে সোণার যাত্র মোর কথা রাখ। চাঁদ মুখে একবার মা বলিয়া ডাক।। কান্দিতে লাগিল চাহি রুষকেতু পানে। রুষকেতু বলে মাতা कान्स कि कांत्र ।। श्रमावकी वटन वाहा कहरन ना बाम । क-হিতে পরাণ ফাটে মুখে না জুয়ায়।। রন্ধ ব্রান্ধণ এক কোথা হৈতে আইলা তোমার পিতাকে সেই সত্য করাইল একরাতে কাটিরা পুত্রে করিবে ছেদন। উদর পুরিয়া মাংস করিবে ভো-জন॥ রষকেতুবলে মাণো নিবেদি চরণে। ইহার লাগিয়া जूमि काम कि कांत्ररा।। शिका मांजा इरेक्टर मम वाका नह।, बाचारण मञ्जू के कत्र स्माद्य कांग्रि सिर्म। अञ्च निर्म देशन स्मात

সার্থক জীবন। ব্রাহ্মণে আমার মাংস ক্রিবে ভোজন।। ব্যা-বিতে মরণ হৈলে ক্রমি ভঙ্গ হয়। আমার এ দেহ বাবে ব্যাহ্মণসেবায়।।

র্ষকেতু বলে শুন, আজি মোর শুভ দিন, রাত্রি পোহাইল শুভক্ষে। কি কৰ ভাগ্যের কথা, শুনগো জননি মাতা,মোর मारम थारेत बाकारा॥ बाकारा य खन मारन, स्मरे शाह নারায়ণে, শুন মাতা কহি তব ঠাই। ব্রাহ্মণ বর্ণের রাজা,সক-লেতে করে পূজা, ব্রাহ্মণ গোবিদে ভেদ নাই।। সকল গুণের থাম, ক্রোপ করি ভগুরাম, মারে লাথি গোবিলের বকে। ক্ষ বলে হায়ং, কত না বেজেছে পায়, পদদেশ করেন কৌতুকে।। দারকানিবাসী হরি, ত্রান্মণের আজ্ঞাকারী, চারি বেদে দিতে নারে দীমা। বাক্ষণের অনল কোপে,দশর্থ বক্ষ-नार्टी, रेमन ब्रोका मां कानि महिमां॥ श्वनीमा विद्धाव ब्रोका, গোবিন্দ করিল পূজা, বসাইয়া পালঃ উপরে। ভক্তি করি খুৰ খাইল, অমূল্যরতন পাইল, লক্ষ্মী আজ্ঞাকারী যাঁর ঘরে॥ গদা অাদি তীর্থ যত, দিল্ল অন্ধে অধিরত, বৈদে রূদ্ধ অসুলি উপরে। যেবা পাদোদক খার, সর্ব্ব তীর্থের ফল পান, সেই জন যায় শার্গপুরে॥ একচিত্ত হয়ে যারে, ত্রাহ্মণে আশীষ করে,সেই জন স্বার পুজিত। এই কথা জান দৃঢ়, ত্রান্মণের কোৰ বছ, ত্ৰন্দাপে দৈল পরীক্ষিত।। এমন ত্ৰান্দণ বারে, খাইতে অঙ্গীকার করে, তার হয় সার্থক জীবন। দিজ কবি-চন্দ্রে কয়, বিলম্ব উচিত নয়, দ্বিজ্ঞরূপে আইল কোন জন।।

রুষকেতু ধলে মাতা এত ভাগ্য হবে। আমা অভাগার মাংস ব্রংক্ষণে খাইবে।। করাত লইরা মাথা কটি হুই জনে। বিলয় হইলে উঠে ধাইবে ব্রাক্ষণে।। পুলের বচনে দোঁহে করাত হাতে লর। কান্দিতেং দোঁহে পুল্র পানে চার।। পুলুকে করিয়া কোলে কর্ণ পানাবতী। ব্রাক্ষণের বিজ্ঞানে আইল শীস্ত্রগতি। ধোড়হাতে ই্ষকেতু স্তুতি আরম্ভিল। ব্রাক্ষণের পানধূলি স্ক্রান্থিল।। অতি পুলকিত শিশু ক্রয়ন্ত্রণার। তিনজনে প্রণানিল ব্যক্ষণের পার।। ধালার তুলসীমালা পরিল কোতুকে রাধাক্রক হুটি নাম লিবি একেং।। পুর্বমুপে বিস্বাধান করে নারারণ। করাত ধরিয়া দাওাইল হুই জন।। গোবিন্দর্বণ

## শিশুবোধক। দাতাকর্ণের প্রতিমূর্ত্তি।



শিশু করয়ে স্মরণ। তিলার্ছ নাছিক ভয় সহাত্য বদন।। গো-বিন্দ বলেন দোঁছে কাতর না ছবে। ছানিয়া করাত ধরি পু-ল্রকে কাটিবে।। হাসিয়া করাত দোঁহে হাতে করি নিল। ধন্ত ধন্ত বলি বিপ্র হাসিতে লাগিল।। করাত বসায় তবে পুজের ষাথায়। আৰন্দে বসিয়া শিশু কুষ্ণগুণ গায়।। করাতে কাটিয়া মাথা ফেলে ভূমিতলে। কাটায়ও উচ্চৈঃস্বরে রাধারুষ্ণ বলে। কর্ণ বলে ধ্যুহ আমার নন্দন। তোমা হৈতে রক্ষা হৈল অভা-গার পণ।। কাটিয়া পুত্রের মাংস রন্ধন করিল। পদাবভী পুত্র मुख मुकाद्य दाथिल।। शर्गीवजी वटल विक याहेटव यथन। वा-ছার মন্তক লয়ে করিব রোদন। গে অন্তরে জানিল তাহা ভকত-বংসল। এই মৃত দিয়া পুনঃ রান্ধাব অম্বল।। আর বাঞ্জন রাক্সি কর্ণ বোড় করে কয়। ভোজন করিতে শীঘ্র আইস মহাশয়।। শুন ওছে কর্ণ তুমি বলেন শ্রীংরি। অম্বল বিহনে অন্ন খাইতে না পারি॥ অহল-রাক্রিয়া দেহ কর্ণ দহাশয়। ভোজনে আমার তবে বড প্রীতি হয়।। কর্ণ বলে কিবা দিয়া রান্ধিব অম্বল। একখানি আংস নাই রেট্রেছি সকল।। ভাষাণ বলেন কর্ণ বলি ভব কাছে। পলাবতী পুল্মুও লুকায়ে রেখেছে।। মেইমুও पिता शूनः तास्त्र जात्रल। विक कि कि कि शात (गाविन्मम्बल।।

কণ বলে ওহে রাণি, শুনহ আমার বাণী, কপট করছ কি
লাগিয়া। বল দেখি কি করিলে, যে পুত্র আমাণে দিলে, ভার
মুও রাখ লুকাইয়া। কোষ করি উঠে যার, দিজ কিছু নাহি
খায়, ভন্ম হবে অন্ধাপ দিলে। আমার মিনতী লহ, পুত্রমুও
অ'নি দেহ, পুনঃ পুত্র পাবে পুণ্যকলে। এত শুনি পদ্মাবতী,
ধরিতে না পারে ছাতি, অচেতনে পড়ে ভূমিতলে। আহা
মরি ওরে বাছা, আমি প্রাণ ধরি মিছা, এই ছিল আমার কপালে। কান্দিয়াই কয়, শুন কর্ণ মহাশয়, পাষাণে বেঁধেছ
তুমি হিয়া । করিলে দাকণ পণ,কাটি দিলে বাছাধন, কেমনে
বাঁচিব না দেখিয়া। দশ মাস দশ দিন, উদরে করি ধারণ,
যতন করিত্ব এই হেতু। ভাল মন্দ না জানিল, বাছা মোর
ভিডে গোল, আবে মোর প্রাণ রয়কেতু।। পাইয়া অনেক
ছঃশ, দেখিমু পুলের মুখ, কেন বিধি করিলে এমন। রাণী
বলে,আহা মরি, ক্কারে কান্দিতে লারি,শুনং প্রভু নারায়ণ।।

পুত্র গুণ হাতে করে, ঘুনয়নে বারি করে, আনি দিল কর্ণ বিজ্ঞানে। বিজ্ঞা কবিচক্তে কয়, বস্তু কর্ণ মহাশয়, দানশীল বিখ্যাত ভুবনে।।

গোবিন্দ বলেন তুমি শুন কর্ণ ভাই। পাল ব্যঞ্জন তুমি কর চারি ঠাই।। আর এক কর্ম কর হয়ে সাবধান। নগর হইতে এক শিশু ডাকি আন।। ব্ৰাশ্বণের কথা কর্ণ না করে ছেলন। যে আজ্ঞা বলিয়া তবে করিল গখন।। অনন্ত ক্রুয়ের মায়া কে বুঝিতে পারে। রুষকেতু শিশু সনে খেলিছে বাজারে॥ পুজ-শোকে মহারাজা চারিদিকে চায়। ছেনকালে নিজ প্রভ্রে पिथियादत भाता। याकून इहेता तांखा भूटल निल कारन । नक नक हुद मिन रम्बकमरल।। विश्वरवरण छ्निराटत आहेल কোন জন। বিশয় হইয়া কর্ণ ভাবে মনে মন।। পুত্র লয়ে আ-ইল কর্ণ পলকিত কায়। লোটায়ে পড়িল কর্ণ ত্রান্ধবের পায় কর্ণ পদাবতী দোঁতে যোড় করে কর। অপরাধ ক্ষমা কর দেহ পরিচয়।। যদি মোরে পরিচয় না দিবে আপনি। গলায় মা-রিয়া ছুরি মরিব এখনি॥ ত্রাহ্মণ বলেন কর্ণ না চিন্তামারে। আপনি আইৰু কৃষ্ণ ছলিবার তরে॥ গোবিন্দ বলেন ধন্ত কর্ণ মহাশয়। তোমার সমান দাতা কেছ নাহি হয়।।\* কর্ণ বলে তুমি রুফ ব্রহ্মসনাতন। রূপা করি নিজ মূর্ত্তি করাও দর্শন।। कर्नटक कतिया प्रशादिपवकी नन्तन। निक्र पृर्खि (प्रथादेन ध्यञ्ज नाजात्रण।। চতু क कृष्टिं कर्न (मिशा नहारन । প্রেমে गमगम ছरत्र পफिन हतरा।। ভाবে शम्भम कर्ग प्रत्मी लाहे। क्र-ষ্টের চরণধূলি মাথে সর্ক্র গায়।। যে পদ করেব ধ্যান স্কর মুনিগণে। (হন ক্ষচন্দ্র আইল আমার ভবনে।। কর্ণ পার্মা-বতী দোঁহে কান্দে উভরায়। লোটায়ে পড়িল কর্ণ ব্রাক্ষণের পার।। ধরুং কর্ণ ভূমি বলেন ভগবান্। বৈকুঠনিবাদী হরি ছहेल कार्ख्यान।। এই कथा (यह जन कत्रात्र व्यवन। (तारा শোক দূরে যার বিপদ খণ্ডন।। কবিচন্দ্র কহিলেন পালা হৈল সার। খন পুত্র লক্ষী হয় যে জন গাওয়ায়।।

#### কলন্ধভঞ্জন.1

রাজা বলে কহ কহ অপূর্ব্ব কখন। কহং ক্লফকর্থা করিব প্রবণ।। শুকদেব বচনে রাজা পরীক্ষিত বলে। কি কর্ম করিল क्रु यरणामात्र (कारल।। এक मिन नम्मत्रानी (भाविरम नहेश्रा। লক্ষ লক্ষ্ চুম্ব দেন কোলে বসাইয়া।। মরিরে যাদ্বরায় মোর কথা রাখ। চাঁদমুখে একবার মা বলিয়া ডাক।। এত বলি খা-ইতে দিল ক্ষীর সর ননী। রাখ্রে মায়ের বাক্য বাছা যাত্র-মণি।। এত বলি নন্দরাণী গৃহকর্মে গেল। বলরাম সঙ্গে বসি খেলিতে লাগিল।। হেথা সব গোপীগণ একত হইয়া। করেন পরম যুক্তি বিরলে বসিয়া।। রাধা বলে ললিডা গো শুন মন निया। जीनन्तन्तन कृष्टि (मृट्यं यामि शिया।। ब्रमावनी वटन কেন যাব তার ঘরে। বড় আকারের ছেলে নানা মায়া করে। কোন রঙ্গ করে সেই নির্থয় নাজানি। স্বাকার বস্ত্র ধরে করে টানাটানি॥ রাধা বলে এই আমি করি আগুসার। বস্ত্র ধরিবেক তার এত অহস্কার।। যদি সে ধামালি করে আইসে মোর স্থানে। দুমন করিব তার মাতা বিছামানে।। এত বলি যান রাধা অহস্কারে ভরি। অন্তরে জানিলা তাহা মুকুন্দমুরারি श्रीवित्मत श्रात (यव) करत अवश्रीत। (महे करन मर्शन করেন ভাষার।। রাধা হৈতে প্রিয়া তাঁর নাহি ত্রিভূবনে। ষ্মহন্ধার চূর্ব, হয় কবিচন্দ্র ভণে।।

ভজ গোৰিন্দ ভজ গোৰিন্দ গোৰিন্দ গোপাল। অধ্য তারণকর্ত্তা মদনগোপাল। এইরপে যান রাধা অহস্তার করি। মনে যনে হাসিলেন তখন জীহর।। বাহির হুরারে গোপী উত্তরিল গিয়া। অদিনার নন্দসতে দেখিল চাহিয়া।। হাসিয়া হাসিয়া রুক্ত গোপীর কাছে গোল। অমনি বসন ধরি টানিতে লাগিল।। ছাড় ছাড় বলি গোপী অমনি পিছায়। দৃঢ় করি গ্রে বন্দ্র ছাড়ান না যায়।। ফাঁন্করে পড়িয়া গোপী ছাড়াতে না পারে। যশোদা যশোদা বলি ডাকে উচ্চৈঃ হরে।। কি কর কি কর' রাণি নিশ্চিত্ত বসিয়া। তোমার ছাওয়ানের রক্ষ দেশৰা আসিরা।। এড় শুনি মন্দরাণী ৰাইরা আইল। পুত্রের চরিত্র দেখি হাসিতে লাগিল।। কেমরে অবোধ ছেলে বলিরে ডোমারে। আসিরাছে যত গোলী ডোমার দেখিবারে।। ছাড়রে,গোলীর বস্ত্র মরি বালাই লরে। গৃহকর্ম সর মোর গোলরে বহিরে।। অনেক যতনে রাণী ছাড়াইতে নারে। মালধার হাত দিরা বৈসে ভূমির উপরে।। মারেরে কাতর দেখি প্রভু নারায়ণ। কপট করিরা হরি যুড়িলেন ক্রন্দন।। কান্দিতে কান্দিতে কছে জমনী গোচরে। এত বড় বুকের পাটা গেঁড়, চুরি করে।। কপট করিরা বলে আঁখি ছলছল। গাড় করি পারে পড়ি গেঁড় দিতে বল।। যশোদা বলেন বাছা না কর ধামালি। আমি নাই দেই গেঁড় গেঁড় কোথা পেলি।। রুক্ষ বলে আমো মাতা বলি তব ঠাই। দিরাছেন অর্ণ গেঁড় দাদা যে বলাই।। সেই গেঁড় লয়ে আমি অদ্ধিনার খেলাই। কবিচন্দ্র বলে প্রভু বলিহারি, মাই।।

একি জ্বালার উপর জ্বালা সাঁজের বেলা। জলকে যেতে অঁচিল ধরে কালা॥

বসন ধরিয়া টানে ছাড়াতে না পারে। এ বড় বিষম গোপী কাতর অন্তরে।। বিপাকে পড়িয়া গোপী না দেখেঁ উপায়। ছেডে দেহ ওছে ক্ষুষ্ণ বলি হে তোমায়।।যশোদা বলেন গোপী निर्दापन लहा गृहकच शिल वहि शिंख, किलि पिर ॥ शिली বলে নন্দরাণী ভোৱে নিবেদই। করি গৌ তোমার দিবা গেঁড় নাছি লই।। এত বলি বস্ত্র ঝাড়ি পরিল বসন। বিবন্তা হইল গোলা হালে নারারণ।। যশোদা বলেন বাছা শুনরে কানাই। বিবস্তা হইল গোপী গেঁড় লয় নাই।। ক্লফ বলেকাগো মাতা ৰলি গো তোমারে। রেখেছে সোণার গেঁড়ু কাঁচলি ভিতরে এত শুনি গোপিকার কাঁপিয়া গেল দেহ। কোথা **আ**ছে সোণার গেঁড় বাহির করে লহ।। এত শুনি গোবিন মারের পানে চায়। জননী দিলেন আজা আঁথিচারে তার।। পা-हेशा मार्युत ब्लांक्ट जीनर्त्तन्त्रमस्म । अमनि काँहिन उर्थन शर्य নারায়ণ।। কাঁচলি ধরিয়া কৃষ্ণ টানিতে লাগিল। কাঁচলি হইতে গেঁড়ু ভূষিতে পজিল॥ ভূমিতে পড়িয়া গেঁড়ু গড়া-शिष् योत । व्यमनि नहेत्रो क्रक मोरतर प्रभात ।। कैंकिटन ?-

ড়িয়া গোপী করিল গমন। ভাগবন্ত পুরাণ যে কবিচন্দ্র কম।। রাজা বলে কহ মূনি অপূর্ব্য কখন। কছ তবে কি কর্ম ক-রিল নারায়ণ।। দেখিতে লাগিল ক্লফ আজিনার বসিরা। বধা नम रेके शृत्क अर्फ मन दिशा। छक्डवर्मन क्रक माना मात्रा জানে হামাগুড়ি দিয়া যান শিডার সদনে।। সিংহাসন হৈতে হরি ভূমিতে পড়িল। আপনি গোবিন্দ সিংহাসনেতে বসিল निश्होगरन विगतन अष्टू जनार्मन। शानक देहन नम (य-लिन नत्रन ।। निश्हांमान दिन क्रिक है के किल किन । यानामा যশোদা বলি ভাকিতে লাগিল।। হেদে রে যশোদা হেখা (एथमा हाहिया। मर्कामांग रेहन जात कि कर विमया।। এड শুনি নন্দরাণী ধাইয়া সাইল। ক্লফের চরিত্র দেখি হাসিতে नाशिन ॥ नन्त यान पार्व शर्य शिन अड मिटन। इक्टेरन्य जूटम পড়ে পুত্র সিংহাসনে।। দেবতা সহিত বাদ করিতে লাগিল। ছারাইলাম পুত্র আজি বিপদ ঘটিল। রাণী বলে ওছে নন্দ নিবেদি ভোষাতে। দেখ পুত্র দিংছাসনে কেমন শোভা করে নন্দ বলে এত দিনে গেলি রে অভাগি। দেবতা সহিত বাদ পুত্র অমুরাগী।। নন্দরাণী বলে পুঞা ইফ দামোদরে। করছ भूटबंद भूकी जानम जल्दा। **७७ छनि नम क्लार्य कैं।**भ কলেবর। দেবতা ছেলন করি পুত্র সেবা কর।। ক্রোধ করি নিল মালা হাতেতে করিয়া। স্বমনি দিলেন ক্লফ গলেতে তুনিরা।। মাতা পিতার পূজা পাইয়া প্রতু নারায়ণ। আচ-খিতে চতু ভূজি হইল তথন।। শধ্য চক্ৰ গদা পদা বনমালাধারী পরিধান শীভাষর রূপের মাধুরী॥ যশোমতি নন্দ দেঁছে পড়ে পদতদে। ভকত বংসল ক্লম্ভ ভক্ত নিল কোলে।। পুন-ক্ষার দামোদর সিংহাসনোপরে। কপট বালক ছরি গেলেন বাছিরে।। কডকণে হুই জন পাইল চেডন। অপনের প্রার তথ্ন দেখিল হজন।। পুত্ৰভাব করি তখন তুলি নিল কোলে। কৰিচন্দ্ৰ বলৈ প্ৰভু রাখ পদতলে।।

রাজ্ঞা বলে কইং অপূর্ব্ধ কথন। তার পর কি করিল প্রভু নারায়ণ।। সেই উপাধ্যান কছ করিরা স্মরণ। শুনিলে বাড়রে সুখ পাপ বিমোচন।। তবে নন্দরাণী ক্লফে কোলে করি নিল। পাছা মরি বলি রাণী বদন চুছিল।। রাণী বলে বাছাধন শুনুৱে বচন। গৃহে থাক কালো বাদী না কর ব্যান। কোলে করি
বিসি রাণী আনন্দ অন্তরে। কপটেতে নিজা বান জননীর
কোলে।। হিন্দোলা উপরে রাণী করান শঙ্কা। জল আনিবারে
তবে করেন গ্রাম।। কক্ষে কুন্ত করি বান যুম্নাসলিলে।
নিজাভন্ধ হৈল রুফ উঠে কুতুহলে।। অমনি চলিল রুফ গোলীর মন্দিরে। রুফকে পাইরা গোপী হরিষ অন্তরে।। চৌদিকে
বেজিয়া গোপী দেয় করতালি। ভাল-নাচেহ প্রভু বনমালী।।
এই রূপে গোপী সব গোবিন্দে নাচায়। শোকার্ত সংগীত
রুদ কবিচন্দ্র গায়।।

চৈতত্তের সৃদ্ধ পাইয়া কছে নিজ্যানন্দ। মাকে ভাব বংপিকে পাবে ছুচিবে মনের ধন্ধ।। প্রাণের উপর জলের মরাই কাছিম সাপে ধরে। সাপের মাথার হংসের ভিন্ন তাছে হরিণ চরে।। তিমের ভিতর চৌন্দ ভূবন তিমের রাজার তায়। সাংপার মুখে কুল কুটেছে কর্লা বসে তায়।। সাথ করে মরের দ্বার করেছেন নটা। হরের ভিতর ভূতের বাস। গালিম আছে ছটা।। ভূতের মুখে কুলবাগিচে পাড়াছহ মেয়ে। গ্রন্থেল ভিতর আঞ্রণ দিয়া বাউল দেখে চেয়ে।। খেপার কথায় হাতীপড়ে মাকড্সার কালে। তা দেখি চৈতল হাসে নিজ্যানন্দ কালে।। বোবা ক্য কাল হাসে কালে দেখে রদা। দাস

এইরপে গোপী সব গোবিকে নাচায়। ছেনকালে নলংগাঁজল লয়ে যায়। কলংব শুনি রাণী গোপীর ভবনে। দেখে পুত্র নাচাইছে যত গোপীগণে।। যশোদা বলেন গেটুপী এ কেনে ধার্মাল। নিজাভঙ্গ করি ফ্রফে কেমনে আনিলি।। যতনে শোয়ায়েছিলাম হিন্দোলা উপরে।কেমনে আনিলি রুফে কছে না আমারে। রাজরাণী বলে তুনি নাহি কর ধরা। প্রাভঃকাল হৈতে রুফে আনিয়াছি মোরা।। এত শুনি নলরাণী করিল গান্য। দেখে পুল সেই মত করেছে শায়ন।। বিশায় হইয়া রাণী রাখিল কলসী। পুনর্বার গোপীর বাড়ী যায় হালি হাসি।। দেইরপে গোপী সব ক্লফকে নাচায়। কোখা পাইলি হেন পুত্র গোপীকে স্থায়।। একবার দেহ মোরে দরে লয়েগাই। বড় সাধ আছে মনে হরেতে বসাই।। এত বলি নন্দ্রাণী ছাফে

লয়ে গোল। ছিন্দোলা উপরে রুফেদেন্দিতে না পাইল।। বিশ্বর ছইয়া রাণী ভাবে মনেমন। ভাগবৈত কথা ছিজ কবিচন্দ্র কনা।

রাজা বলে কছ। অপুর্ব্ব কথন। তার পর কি করিল প্রভু নারায়ণ।। ভবে যশোমতি রাণী গৃহকর্মে যায়। স্থেনকালে মনেং ভাবে যতুরার।। দেখিল যে গৃহকর্মে রাণী ছৈল রভ! রাধিকার বাড়ী যান হইয়া উদ্মত্ত।। আন্তেবাত্তে প্রবেশিল রা-ধিকা মন্দিরে। দেখিল যে রাধা শুয়ে পালঙ্ক উপরে।। রসিক নাগর প্রেমে মগ্ন হয়ে স্করে। রাধিকার পার্মে গিয়া বৈদেন কৌতকে।। কাজলে মিশায় যেন নব গোরোচনা। নীলমণি মারে যেন পশিল কাঁচাসোণা॥ কবলয় মাঝে যেন চম্পকের দাম। কালো মেহ মাঝেতে বিজ্লি অনুপম।। পালঙ্ক উপরে ক্লফ রাধিকার কোলে। কালিন্দীর জলে যেন শশবর দোলে।। বেণী চূড়া হেরি ফিরাফিরি করি বাত। শরদপূর্লিমা চাঁদে গরা-मिल बोछ।। (में। होत्र शेटलट्ड (मोर्टन शेटल ब मुगाल। मन्दन्य युष रामदा शीलान।। कुमन छेलदा व्यनि थक्षनी थक्षन। मूथ-পদ্ম উপরে চুম্বন ঘনেঘন।। আবেশে অবশ হয়ে দৌহে নিজ। যায়। জটিলা দেখিয়া আদি করে হায়ং॥ ডাক দিয়া চায়ে দেখে আয়ানের মাডা। শুন দেখি আলো রাই এ কেমন কংগ লজ্জা ভয় পেয়ে মনে রহে ছই জনে। আয়ান ঘোষের মাতা स्टार मरन गरन।। कविष्ठस वरल वूड़ी नड्डा मां क्रिल। काला करल कालि मिल किছू ना रिलिन।।

পথপানে নাহি চার, ধাইয়া যায় জটিলা, কোন লাজে এ বোল বলিব। যে হউক সে হউক মোরে, যাইব তাহার ঘরে, জটে ধরে তাহারে আনিব।। অনেক দিবস হৈতে, আইসে যায় রেতে রেতে,মনে করি বলিতে না পারি। কদম তলাতে বিসি, বাজায় মোহন বাঁশী, তাহা দেখে দেখে জ্লে মরি।। তাহার মায়ের কথা, কহিতে লাগায়ে ব্যথা,সারা দিন কোলে করি থাকে। কবিচন্দ্র বলে বুড়ী, ভূমে দেহ গড়াগড়ি, প্রাণ-ত্যাগা কর এই শোকে।।

জটিলা বলেন আমি কেমনে কহিব। কণ্ণানা করিয়া আমি তাহারে আনিব।। এত বলি জটিলা গোলেন তার পালে। হ-রিমে বিষ্দ্রা হয়ে যশোমতি হাসে।। বিড়ালের কোলে শুমে

আছিরে ম্বিকে। বড়ুই অপুরু কথা ঝাট আইস দেখে।। ইহা শুনি বশোমতি অতি বেগে ধায়। জটিলা হরিষ হৈয়া পাছুং यात्र।। यटमाना क्रिका (मेंट्र शिन (मर्घ्याटत । यटमानाटत জটিলা,কহেন এই ঘরে।। রাধিকারে মৃষিক করিলা যহুরায়। যাদৃশী ভাবনা যার সেই মত পায়॥ যার গৃছে ভগবান বাঞ্চা-কম্পাতক। বিড়ালের মূর্ত্তি ধরে অখিলের গুরু।। যশোদা বদন হেরি রন্দাবলী হাসে। কপাট ঘুচাইরা ঘরে আসিয়া প্রবেশে মার্জার মুখিক দেখে নদ্দের বনিতা। দেখিয়া বিস্ফা হৈল আয়ানের মাতা।। মার্জাবের রূপ ঠ্রুফ বাহির হইল। মৃবিক হইয়া রাধা পরলে বসিল।। যশোমতি ঘরে গোল আনন্দিত মন। কোখা গিয়াছিলা মাতা কছে নারায়ণ।। রাণী বলে গিয়া-ছিলাম জটিলার ঘরে। মৃষিকের কোলে শুয়েদেখিয় মার্জারে ক্লফ বলেন কি বলিলে আমি দেখি নাই। কালি সঙ্গে লয়ে यादि बदलन कानाई॥ अद्योग बदलन वांछा कि अमन इदि। क्रक बटलन निखार अभन स्टेटर ॥ मटन मटन स्टाम क्रक महन-মোহন। অতঃপর শুন রাধার কলক ভঞ্জন।। রাধার মঞ্জ গীত কবিচন্ত্রে গায়। হরি হরি বল সবে পালা হৈল সায়।।

রাধার মঞ্চলগীত করছ শ্রবণ। রাধার কলঙ্ক ক্রুফ কম্মিল
ভঞ্জন। রমভাতুস্থতা ক্রুফে বলিল মন্দিরে। কেছ পাছে জানে
বলে কান্দে থারেং।। কান্দিতে কান্দিতে বলে যা করিলে
শ্রাম। তোমার লাগিয়া হৈল কলঙ্কিনী নাম।। কলঙ্কিনী নাম
হৈল তাহে নাছি ভর। হেন অপয়শ যেন যুগেং রয়।। তোমার কলঙ্ক মোর অক্লের ভূষণ। পুণ্য বহুকাল করেছিলাম তখন
এক দিন নফ্টন্দ্র উদর ইইল। অধামুখ হরে সবে বিসয়া
রছিল।। যার ঘরে যত তার ঘরে শব্দ নাই। এক র্ক্কা চতুরা
আইল মোর ঠাই।। সে কহিল রাধা তুমি নিজ ঘরে যাও।
মোর কিরা লাগে যদি চাঁদ পানে চাও।। আজি চক্ত দেখিলে
হইবে অপরাধ। কলঙ্ক হইবে বড় হইবে প্রমাদ।। এত বলি
সেই বুড়ী গোল নিজ ঘরে। আমি আদি জল লইয়া ছরিষ
অন্তরে।। শশধর পানে চেয়ে বলিলাম আমি। শ্রাম কলঙ্কিনী
হব বর দেছ তুমি।। সেই হৈতে পাইয়াছি তোমা হেনু ধন।
কিন্তু নননীর কথা তুবের আগ্রণ।। এতেক বলিয়া রাধা হৈল

অচেতন। রাধার ছঃখেতে ছঃখী মহেছ কোন জন। কবিচন্দ্র বলে রাধার আর কেহ মাই। রাধারে রাখিতে কেবল ঠা-ক্র কানাই।।

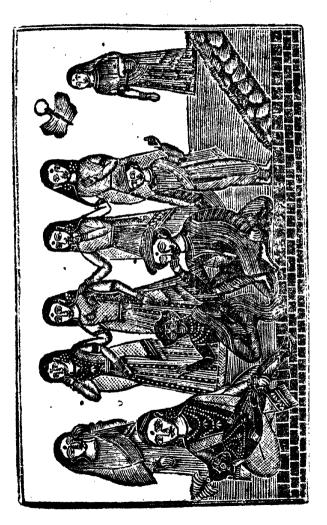
अहेक्तरी द्रोधिको कोर्ल्यन शृक्षरवर्ष । (इश्रा कृष्ण यहेरे वर्ष यटमानांत भारम्।। (कारन वरम प्रश्न साम स्टाम क्ष मित्रा । অমনি পড়িল ভূমে মুক্তি হইরা॥ চক্ষে ধারা বছে রুফ ला छोत्र छ छ ल। किन वाष्ट्राश्चन वटन हागी देकन काटन। ম'য়ের পানে চান হরি স্থির অঁ।থি করি। কিবা কর গলা ধর এই আমি মরি।। মরি মরি শক বাজা কেনরে করিল। কিবা লোতে বাছাধন আমারে ছাডিলি।। কোথা রুফ ছেডে গেল তরে উত্তরোল। ব্রজপুরী মধ্যেতে ছইল পূর্ণগোল।। গোপী সুব অংশ্রে কয় ক্রয় যে মরিল। ললিতা বলেন যশোদার প্রাণ াল।। অন্তম্মঞ্জী শুনে রাধিকার ভগ্নী। ললিতা বিশাখ। বাধার বলিছেন বাণী।। মুখে নাহি মুরে বাণী করে হার হার। বলিবার কথা নয় মুখে না জ্যায়।। শুন বিনোদিনী রাই দেখি গিলা চলত সৰে মিলি জাঁমরা তথার যাই চল।। কি ছৈল কি ৈহল বলি গোপীগণ চলে। মুক্তগিত দেখে ক্লফ বশোদার কোলে।। যক ব্ৰহাজনা সৰ আইলেন থেয়ে। কান্দিতে লা-গিল সবে রুফ পানে চেয়ে।। জটিলা আইল তার করা সঙ্গে করি। ভাল মন্দ কিছু হউক বেঁচে থাকুক হরি॥ জাটিলার কন্তা বলে মোর ভাল হৈল। তোর মোর ভাল হৈল রাধার প্রাণ গোল।। তুমি আমি কি করিব বিবাডার লিখন। ভোমা-দের মরণ নাই কৰিচতত কন।।

গোপী সবঁ মুখ চেয়ে, রাণী কান্দে ক্ষকিয়ে, বলে দেখ গোপালের মুখ। মরণের চিন্ন নয়, কপালেতে কিবা হয়, মুখ দেখে ফেটে যায় বুক।। সব গোপী আইস হেখা, বাছাধনে কছাও কখা, একবার মা বলিতে বল। আর দিন কতবার, ননী মাণো বারং, আজি বিধি নৈরাল করিল।। এনন্দের লক্ষ শুনি, উঠ বাছা নীলমণি, বাধা নিতে ডাকে ডোর বাপ। মান্তের কথাটা রাখ, আঁথি মেলি চেয়ে দেখ, মা চাছিলে জলে দিব বাঁপে ॥ আর না যাইবে গোচে, ফালিন্দী যমুনাতটে, বংশীবট কদস্থের ডলে। সন্ধ্যার সময় কামু,আর না পুরিবে বেখু, গো- ঠের বেশে না আদিৰে আর । আদান সদান বলে, এখন মা-রের কোলে,চেরে দেখ কত হৈল বেলা। বাথানে রহিল গাই, আইস ভাই কানাই, বনের মাঝে করি গিরা খেলা।। আদান কাতর বাণী, শুনিলেন চক্রপাণি, ভক্তত্বংখ অন্তরে জানিল। কবিচন্দ্র বলে সার,ক্রফ গভি সবাকার, পুর্নভাবে ছরিং বল।।

্বশোমতি ভূমে পড়ি কান্দে উকৈ:স্বরে। একবার বাছা-यन (मर्था (मर मादि ॥ यमि नाहि (मर्था मिद्र मद्र याद जामि অভাগী মারের বধভাগী হবে তুমি।। শ্রীদাম স্থদাম ডাকে গরু हर्दारेए । आत ना मैंशिश मिव वनत्राद्यत हाए ॥ हेरा अनि वनताम आहाज (थरत्र शेरज्। त्रामञ्जा शरज् रमन देवनार्थः ঝড়ে॥ জটিলার ভারে রাধা কান্দিতে না পারে। মুখে বাক্য নাহি সেরে পরাণ বিদরে॥ রাধা বলে কলঃ লাগিয়া ভরাইতু এ কুন ও কুল আমি চুকুল হারাত্ব।। কলঙ্কিনী নাম হবে ভাহে ना छत्राहे। এই छुः थ वर्फ मटन छा फ़िल कानाहे।। व्यागनाथ ছেড়ে গেল গলে পদ দ্বিয়া। রুক্ত সঙ্গে যায় প্রাণ পাছু গোড়াইয়া ॥ কফমুখ চেয়ে রাধা করয়ে রোদন। রাধার ক্র-দ-নেতে কাতর নারায়ণ।। অবভার শিরোমণি প্রভু গুণধাম। চিকিৎসক মৃত্তি হইলেন অনুপম।। এক মৃত্তি যশোদার কোলে ৰদে থাকে। আর এক মূর্ত্তি হয়ে যশোদাকে ডার্কে।। কহং যণোমতি কিমের ক্রন্দন। তব পুত্র মোর মৈত্র আছুয়ে কে-মন।। রাণী বলে কোথা থাক চিনিতে না পারি। বৈছ বলেচিন নাই নাম মোর হরি॥ পীড়া শুনি আইলাম তোমার মন্দিরে। চিন্তা নাই তব পুত্ৰ ভাল লাগে মোরে।। ইছা শুনি যশোদা আসন দিল আনি। বৈছাবেশে আসনে বসিলণ্টক্রপাণি॥ আসনে বসিয়া বলে তব পুত্ৰ আন। বিধিকাই কোলে দেহ মোর বাকা শুন।। যশোমতি ক্লফে দিল রাধিকার কোলে। द्राधा कारन क्रकाटल कविष्ठल वरन।।

যশোমতি বলৈ বৈজ্ঞ বল কিবা চাই। কি ঔষধ দিলে মোর বাচিবে কানাই।। বৈজ্ঞ বলে ব্যাধি বড় জানিসু অন্তরে। মৃতন কলসী এক জানি দেহ মোরে।। যশোমতি কলসী আ-নিয়া বৈজ্ঞে দিল। সহত্রেক ছিন্তা সেই কলসীতে কৈল।।বৈজ্ঞ বলে যশোমতি মম বাক্য শুন। পতিব্রতা নারী এক শীল্প ড়াকি

# শ্রীরাধার কলফ ভঞ্জন।



ষ্পান। যশোদা বিৰতি করি স্বাকারে বলে। পারে পড়ি জল শানি বাঁচাও গোপালে।। সবে বলে পতিব্ৰতা ছুইজন আছে ছাটিলা কুটিলা গেলে ভব পুত্র বাঁচে॥ ছাটিলার পারে ধরি वटन मन्द्रानी। जुभि यनि कंन जाम दाँटि निसमित।। कविनाइ महा देशन करा शांठाहेल। कृष्टिनां कनमी नट्स गुरुकि सामिल।। এত লোক থাকিতে আমারে সবে বলে। আমার সমান সতী নাহি ভূমওলে।। সর্বাজনে নিন্দা করি যয়নাতে গোল। অহ-ষারে পূর্ণ হয়ে কুন্ত ডুবাইল।। কক্ষেতে করিয়া কুন্ত অতি (यटा हत्स । अक श्रम मा वाष्ट्रांट अन श्रद अतम ॥ श्रम यात्र एकटवर कि टेइन कि टेइन। अञ्चान मगदत्र भात (मार वृत्रि छिल।। कलमी लहेश यटलामात्र ठाँहे मिल। जनमूछ प्रि কুন্ত ভাবিতা হইল।। কেহ বলে ও মাগীকে ভাল জাম চিল। (कह बर्त मृत कत अर्था (कम आहेन।। (कह बर्**न मर्य**खन रपात वाका धर। भिक्ना व्यमजीदा बटन मुश्र मक्के करा। अक अभि अर्िना कनमी नरत्रभात । इतिरं वियोग इरत कनभी ডুবায়।। আমি সহী বলি বুড়ি কলসীটা তোলে। বসন ভি-किशं यात्र कलगीत कारल।। भेजकुछ कै। नि निस रेथकुरमश गालि কলসীটী মর এই ফলক্ষের ডালি।। অহস্কার চূর্ণ হৈল বাক্য নাহি সবে। যশোমতি বলে যাই জল আনিবারে।। এত শুনি বৈজ্যবাজের মনে হৈল ভয়।জননী আনিলে জল ঔষধ না হয় আর যত গোপীরে বলেন যশোমতি। সেই গোপী জলে যার ছয়ে হুটমতি।। কলদী লইয়া দিল যশোদার ঠাই। তা দে-খিয়া আর গোপী কেছ উঠে নাই।। একেং কল্সী লইয়া সবে যার। অংনিতে না পারে জল ক্লফের মারায়।। বশোমতি বলে তবে উপায় কি করি। একেং জলে গেল যত ব্রজনারী য়ত জন জলে বায় জল না আইদে। সভী হয়ে অসতী হইল क्यामीत्य।। रेक्य बल द्विष्ठि उज्जन्दर मव नके।। य मात्री প্রথমে গেল সেই মাগী ভ্রম্টা।। এত বলি যশোমতি ভাবিভা ছইল। কবিচন্দ্র বলে রাধায় জলে ঘাইতে হৈল।।

বৈছা বলে যশোমতি আছে এক জন। বে জনার কোলে শুরে ডোমার নন্দন।। সবে বলে ক্লফ লয়ে বৈস যশোমতি। বৈছোর অপূর্ব্ব দৃষ্টে চলিলেন সতী।। এক জন বলে বৈছা ক্রোধ কর নাই। ও দানী যেমন সভী শুন সবার ঠাই।। আর জন বলেন যাউক দেখি রাই। জক্ষণের কথা কিছু বলা যার मारे।। यट्यामा वटलम हाथा पादब क्रक मिशा। जन व्यामिबाटब या अनमी नरेशा। यानारा निया क्रक दांशा यान करन। कोबिन सकरत खब करतन शांशाला। कनमी नहेश करक কান্দে কুলবতী। কালাচাঁদ জানেন যে আমি যত সতী।। धन कर शास्त्र क्रक धनधन कति। क्रशामृष्ठि कतिहन उतिर ভববারি।। যোবিন্দ গোপাল গোপীনাথ গদাধর। খন ডাকি ঘন্সাম মোরে দরা কর।। উদাস আমার মন জল আনিবারে আমি কলক্ষিনী বলি জানয়ে সংসারে।। চলিয়া যাইতে নারি ম। চলে চরণ। ছিছি যদি লোকে বলে ভাজিব জীবন।। বারি আনিবারে যাই যযুনার ভীরে। ঝরং তুনরন বহিয়া যার নীরে এমন সময় আসি রাধ হে কান।ই। টলং করে অঙ্গ পদ চলে নাই।। ঠক মোর ননদিনী তুমি কর পার। ভাকি আমি প্রাণ-নাথ ভরসা তোমার॥ টেউ দিয়া কলসী পূরি কক্ষেতে করিল আনদে চলিল রাধা জল না পড়িল।। অতঃপর তীর ছাড়ি ডব্রিত চলিল। থম করি একবারে কলসী রাখিল।। দেখিল দ-ক্ষিণ হাতে জল লয়ে দিল। ধরার উপরে লয়ে কলসী রাখিল समन्द्रात कर्ति रेक्ष दाधिकात भाग। भटन ध्रि भन द्रश् निलन মাথায়।। পুন: পুন: বৈছা তাঁরে করেন প্রণতি। বড় ভাগা গোকুলে আছহ ভূমি সতী।। ভাবরে সকল লোক করে কানাকানি। মিছামিছি রাধিকারে বলে কলম্বিনী।। জল লয়ে বৈজ্যবাজ্ঞ ক্লফ শিরে দিল। রসিকনাগর তাহে চমকি উঠিল।। बर्की जाबिया वानी क्रकप्र मिल। जर्काला वानी है। ममूच মুদ্রাইল।। সুব গোপী ঘরে যায় বাক্য নাহি মুখে। হর্ষিত ছরে রাণী ক্লফ কৈল বুকে।। ক্লমা কর বৈভারাজ যশোমতি বলে। বৈজ্ঞ বলে রাধা ছৈতে ক্ষক তুমি পেলে॥ রাধারুক পাদপদা করুরে দেবন। দিজ কবিচন্দ্র শায় ব্যাদের লিখন।।

যশোদতি বলে রাধা তুমি না আইলে। এতক্ষণে হৃঃধিনীর কি হতো কপালে॥ রাধা বলে যশোদতি আমার কি গুণ। বৈজ হৈতে তব পুদ্র পাইল জীবন॥ বৈজ বলে যশোদতি দোর বাক্য শুনা আজি নিজ পুহে আমি করিব গামন॥

রাধার হত্তের অল খাইবে কানাই। বলবান হইবেক বাডিবে প্রমাই।। এত শুনি যশোদা রাধাকে গোল লয়ে। আপনি যশোদা দেন প্রস্তুত করিয়ে।। রাধিকারে যশোদা বলিলেন তথন। ভালমতে প্রভুত কর অন্ন ব্যক্তন।। আপনি জীমতী श्राधा करतन त्रम्मन। किया (लथा पिर जात ना यात्र कथन।। লুচি মালপোয়া ভোলে মুভেতে ছাঁকিয়া। বাৰ্তাকু ভাজেন তাহে তিলবড়ি দিয়া।। চোঁয়া২ করি ভাজে উচ্ছে এক ই।ড়ি কাঁচকলা গোল আলু ভাজে ফুলবডি।। অরহবের ডাল আর মুগের সাউলি। তুপঘণ্ট মোচাঘণ্ট কদলীর আলি।। কুমা-তের অধন তায় দেয় খুব চিনি। নারিকেলের পুর ভাজে রাধা চাকুরাণী।। লাউঘণ্ট করেন তায় ছোলা বরবর্টী। স্থক্তা-নির ঝোল রান্ধে অতি পরিপারী।। আলুপিফকৈতে তিনি অতি বিচক্ষণ। শাক হৈতে রাদ্ধিলেন পঞ্চাশ ব্যক্ষন।। স্বর্ণ-থালে সন্ন বাঞ্জন প্রস্তুত করিল। তুই জনে আদি অর্ণ পীঠেতে বিদিল।। ক্ষমজে বৈজ্ঞাজ করিল ভোজন। ভাছা দেখি যশোদার হর্ষিত মন।। ভোজন করিয়া ক্লফ কৈল আচমন। কপুর তাপল দিল মুখের শোধন।। বৈছা বলে যশ্মেতি তব আজঃ পাই। আশীৰ্কাদ কর তবে যরে চলে যাই।। যশোমতি বলে বৈছা কৈলে উপকার। কোন এবং দিয়া তব করি পর-ক্ষাৰ।। বৈছাবলৈ যশোমতি এ কেমন বল। তুমিছ আমার মাত। আমিও ছাওয়াল।। এত বলি বৈভারাজ করিল গমন। বাহির তুয়ারে গিয়া হৈল অওদ্ধান।। রাধিকা বিদায় হৈল যশোলার ঠাই। রাধিকার সঙ্গে তবে চলিল কানাই।। রাধি-কারে কন ক্লুফ ঈষৎ হাসিয়া। এমত হইল মোর তোমার লা-গিয়া। কলখিনী বলিয়া ভোমারে দেয় গালি। সবার মাথায় দিলাম কলক্ষের ডালি।। আমি বৈছামূর্ত্তি ছইলাম নারিলে b-নিতে। সহস্ৰ ধারাতে তব কলম ঘুচাতে॥ এত বলি রাধি-কারে করিল বিদায়। আপন গৃহেতে ক্লফ চলিল জ্বায়।। ক্লফের ৰচনে রাধা করিল গমন। জননীর কাছে কৃষ্ণ বসিল তথন।। বিজ কবিচন্দ্র গায় ক্লফের ক্লপায়। হরি হরি বল मद भाना देशन मात्र॥



### **চাণकार**भाकः।

,আংশশবং জননীবাণীপদারবিন্দমাসে-বিতং তব তথা প্রণিপত্য যাচে। চাণক্যপণ্ডিতবরাভিমতার্থসার্থভাব প্রকাশনবিধে যথোপহাসঃ।।

নানাশান্ত্রোদ্তং বক্ষ্যে রাজনীতিসমূচ্য়ং। সর্ববীজমিদং শাস্ত্রং চাণক্যং সারসংগ্রহং॥

নানাবিধ শাস্ত্র হৈতে করিয়া উদ্ধার। রাজনীতি সমস্ত কহিব আমি সার॥ সকলের বীজ শাস্ত্র চাণক্য রচিত। শ্রীসারসংগ্রাহ নামে জগতে বিদিত॥

> মূলস্ত্রং প্রবক্ষ্যামি চাণকোন যথোদিতং। যস্ত বিজ্ঞানমাত্রেণ মূর্খো ভবতি পণ্ডিতঃ॥

যে প্রকার কহিলেন চাণক্য পণ্ডিত। সেই মৃত মূলস্থ কহিব নিশ্চিত। যাহা জ্ঞাত হবা মাত্র জ্ঞাতৃ হয় নীত। মূর্থের মুর্থত্যায় সে হয় পণ্ডিত।

বিশ্বত্য স্পত্ত নৈব ভুলাং কদাচন। অদেশে পূজাতে রাজা বিশ্বান সর্বতা পূজাতে॥১॥

বিজ্ঞাবান আর রাজা না হয় সমান। যে করে সমান জান সে বড় অজ্ঞান।। কেবল আপান দেশে রাজা পুজ্ঞাবান।। অদেশে বিদেশে বিজাবানের সমান।। ১।।

পণ্ডিতে চ গুণাঃ সর্ব্বে মুর্থে দোষা হি কেবলং।
তক্ষামুর্থনহত্তের প্রাক্ত একো বিশিষ্যতে।। ২।।
পণ্ডিত জনেতে সর্বগুণ বর্ত্তমান। মুর্থলোক কেবল
অশেষ দোষ স্থান।। যন্তপি সহত্র মূর্থ থাকে এক স্থান।
তথাপি না হয় এক পণ্ডিত সমান।। ২।।

মাতৃবৎ পরদারের পরস্রব্যের লোট্রবং।

পাত্ববং সর্বভৃতের যঃ পশুতি সং পণ্ডিত।। ৩4।

পরস্ত্রীকে যাহার জ্লননী সম জ্ঞান। পরধনে জ্ঞান করে লোষ্ট্রের সমান। সকল প্রাণীকে দেখে আপনার মত। সেই জন স্পতিত শাস্ত্রের সমত। ৩।।

কিং কুলেন বিশালেন গুণহীনন্ত যো নর:। অকুলীনোহপি শান্তজ্ঞা দৈবতৈরপি পূজাতে॥ ৪॥ কি করিবে কুলে তার বিভা নাহি যার। বিভাবান্ অকু-লীন মাত্য দেবতার॥ ৪॥

রূপ্যোবনস্পারা বিশালকুলসম্ভবাং।

বিভাংহীনো ন শোভতে নির্মাইব কিংশুকাঃ ॥ ৫ ॥ যদি রূপবান যুবা অত্যন্ত কুলীন। তথাপি শোভিত নহে হৈলে বিভাহীন॥ যেমন কিংশুক পুষ্প দেখিতে স্থানর। গর বিনা কেবা তার করে সমাদর॥ ৫॥

> নক্ষতভূষণং চল্ডো নারীণাঃ ভূষণং পতিঃ। পৃথিবীভূষণং রাজা বিজ্ঞা সর্কক ভূষণং॥৬॥

ভূষ। করে নক্ষত্রগণেরে স্থাকর। রমণীর পতি মাত্র অতি শোভাকর।। পৃথিবীর ভূষণ ভূপতি অতিশয়। সর্কের ভূষণ বিছা। বিছাবানে কয়।। ৬।।

মাতা শক্র: পিতা বৈরী যেন বালো ন পাঠিতঃ। সভামধ্যে ন শোভত্তে হংসমধ্যে বকো যথা॥ ৭॥ মাতা হন শক্রবৎ পিতা বৈরী প্রায়। যাহারা আপন পুত্রে বিজ্ঞানা লিখায়॥ মুর্থ পুত্র সভা মধ্যে শোভা নাহি পায়।

> বরমেকো গুণিপুজো নচ মূর্য্ণতৈরপি। একচন্দ্রস্থাহন্তি নচ তারগাবৈরণি। ৮।।

যেমন ৰকেঞ্চদশা হংসের সভায়।। १।।

গুণবার্ এক পুত্র সেছ আদন্দিত। মুর্থ শত পুত্রে কার্যা না হয় কিঞ্চিং। একচন্দ্র জগতের অস্ত্রকার হরে। লক্ষ লক্ষ তারা দেখ কি করিতে পারে॥৮॥

লালয়েৎ পঞ্চবর্যাণি দশবর্যাণি ডাড়য়েৎ। প্রাপ্তে তু যোড়শে বর্ষে পুলুং মিত্রবদাচরেৎ।। ১।। করিবেক পঞ্চবর্ষ পর্যন্ত লালন। মিজ পুত্রে দশবর্ষ পর্যন্ত ডাড়ন।। ছইলে যোড়শ বর্ষ বয়:ক্রম তার। পুল্রসছ করিবেক মিত্র ব্যবহার।।১।।

> লালনে বহবোদোষাস্তাড়নে বহবোগুণাঃ। তত্মাৎ পুত্ৰঞ্চ শিষ্যঞ্চ তাড়য়েনতু লালয়েৎ।। ১০।।

বহু দোষ জন্মে অতি করিলে লালন। বহু গুণ বর্ত্তে পুত্রে করিলে ভাড়ন।। সেই হেতু পুত্র আর শিষ্য উভয়েরে। তা-ডুন করিবে সদা লালন না করে।। ১০।।

> একেনাপি স্বরক্ষেণ পুজিতেন স্থান্ধিনা। বাসিতং তদ্বনং সর্বং স্থপুত্রেণ কুলং যথা।। ১১।।

যে বনে শুরক্ষ থাকে শুগদ্ধি প্রশিত। সর্বাবন করে তার গদ্ধে আমোদিত ॥ বংশেতে শুপুত্র যদি জ্বমে এক জন। সে বংশ উজ্জ্বল হয় তাহার কারণ॥ ১১॥

একেনাপি কুরকেঁণ কোটরক্ছেন বহিনা।

দহতে ভদনং সর্কাং কুপুত্রেণ কুলং যথা।। ১३।।

কাননে নীরস রক্ষ জ্ঞাে কুলক্ষণ। কোটরে লাগিয়া বহি দহে সর্ববন। বংশেতে কুপুত্র যদি জ্ঞাে কুলান্ধার। তার দোবে হয় সেই বংশের সংহার।। ১২,॥

দূরতঃ শোভতে মূর্থো লয়সাটপটারতঃ।

ভাৰচ্চ শোভতে মুর্খো যাবৎ কিঞ্চিত্র ভাষতে।।১৩। দূর হৈতে শোভে মুর্খ বসনে ভূষিত। যাবৎ না কহে কথা সভার কিঞ্ছি।। ১৩।।

বিষাদপামৃতং আভ্যমেশ্যাদিপি কাঞ্চনংঃ।

নীচাদপুতেমাং বিভাং স্তীরত্বং হুচ্চুলাদপি।। ১৪।।

বিষ হৈতে করিবেক অমৃত গ্রহণ। কুম্থান হইতে তুলে লইবে কাঞ্চন।। নীচ হৈতে ভাল বিছা শিখিবে স্ক্রন। হুই-কুল হৈতে লবে স্ত্রীরত্ন শোভন।। ১৪।।

উৎসবে বাসনে চৈব হুর্ভিক্ষে শক্তবিথাছে। রাজবারে শশানে চ যন্তিষ্ঠতি স্বান্ধ্বঃ॥১৫॥ রাজবারে শশানেতে স্থায় যে হয়। হুর্ভিক্ষেত্ত্বার ( ৭ ) শক্র যুদ্ধের সময়।। বিপাদে বিপাদ জ্ঞান উৎসবে উৎসব। যাহার সমান জ্ঞান সেই সে বাস্কুব।। ১৫॥

> প্রোক্ষে কার্য্যহন্তারং প্রত্যক্ষে প্রিয়বাদিনং। বর্জ্তয়েন্তাদৃশং মিত্রং বিষকুস্তং পরোমুখং।। ১৬।।

অসাক্ষাতে কার্য্য নাশ করে যেই জন। সমুখেতে কছে প্রিয় মধ্র বচন।। বিষে পরিপূর্ণ কুন্ত মুখে মাত্র ক্ষীর। এমন ছর্জন মিত্র ত্যজিবেক ধীর।। ১৬॥

> मक्रम् क्रेश्र मिखः र পूनः मङ्गाजूमिष्ट्रि । म मृजुरम्भगङ्गाजि गर्जम्बज्दी यथा ॥ ১৭ ॥

একবার যার সঙ্গে হয়েছে শত্রতা। পুন: তার সঙ্গে করে যে জন মিত্রতা।। অপনার মৃত্যু সে আপনি করে হাতে। অশ্বরী গার্ভ ধরে আপনা নাশিতে।। ১৭।।

न विश्वंदमनविश्वन्तरः मिज्ञक्षां नि न विश्वंदम ।

কদাচিৎ কুপিতো মিত্রঃ সর্ব্ধদোষং প্রকাশয়েৎ॥১৮॥
অবিশ্বস্ত জনেরে বিশ্বাস না করিবে। মিত্রকে বিশ্বাস
কথা কভুনা কহিবে॥ কি জানি কথন যদি মিত্র কট হয়।
গুপ্ত দোষ-প্রকাশিয়া প্রমাদ ঘটায়॥ ১৮॥

জানীয়াৎ প্রেষণে ভ্ত্যান্ বান্ধবান্ ব্যসনাগমে। মিত্রঞ্পদকালে চ ভার্যাঞ্বিভবক্ষয়ে॥ ১৯॥

কর্মকালে জানিবেক ভৃত্য ব্যবহার। বন্ধর পরীক্ষা লবে ত্বংখ কালে আর॥ বিপদেতে জানিবেক নিত্রের মিত্রুতা। ধনক্ষয়ে জানিবে ভার্যার আত্মীয়তা॥ ১৯॥

> উপকারগৃহীতেন শত্রনা শত্রু মুদ্ধরেৎ। প্রাদ্ধর্মকরন্তেন কণ্টকেনের কণ্টকং।। ২০।।

উপকারে বশ এক শত্রুকে করিবে। তাহার দ্বারায় অভ্য শত্রুকে বৃদ্ধিব।। যেমন কণ্টক এক করেতে ধ্রিয়া। পাদ-বিদ্ধা কণ্টকেরে তুলে তাহা দিয়া॥২০॥

ন কশ্চিৎ কশ্চিমিত্রং ন কশ্চিৎ কশ্চচিদ্রেপঃ। কারণেন ছি জানাতি মিত্রানি চ রিপুংজ্ঞা॥ ২১॥ কোন জন নছে কোন জনের বান্ধব। কোন জন নছে কোন জনের সাত্রব ধ কর্মেতে প্রকাশ ছয় শাত্রব বান্ধব।। বিবেচনা করিয়া করহ অভুক্তব।। ২১।।

क्ष्मक अभिवामी ह देनव विश्वामकादण । .

• মধুতিষ্ঠতি জিহ্বাথ্যে হৃদয়ে তু হলাহলং।। ২২।।

হুজ্জন যান্তপি করে মধুর বচন। তথাপি কখন নহে বি-খাস কারণ।। হুজ্জনের জিহ্বাত্যেতে হর মধুময়। বিষমর বিষম সে তাহার হৃদয়।। ২২॥

> হুর্জনঃ পরিহর্তব্যো বিভয়ালক্কডোপি সঃ। মণিনা ভূবিতঃ সর্পঃ কিমসে ন ভয়ঙ্করঃ॥ ২০॥

হুর্জন যন্ত্রশি হয় বিজ্ঞা বিভূষিত। ভথাপি তাহারে ত্যাগ করণ উচিত।। শোভা করে যে -সর্পের মন্ত্রকে মাণিক। তাহা হৈতে ভয় হয় বরঞ্চ অধিক।। ২৩॥

> সর্পাঃ জুরঃ খলঃ জুরঃ সর্পাৎ জুরতরঃ খলঃ। মন্ত্রৌষধিবশঃ সর্পাঃ খলঃ কেন নিবার্য্যতে॥ ২৪॥

সর্প দুষ্ট খল দুষ্ট দুষ্ট দুষ্ট জন। সর্প হৈতে খল দেখ অধিক দুর্জন।। ঔষধি মন্ত্রেতে বশ হয় ভূজলম'। খলকে করিতে বশ নাহি কোন ক্রমঃ।। ২৪।।

নদীনাঞ্চ নখীনাঞ্চ শ্লিলাং শক্তপাণিনাং।

বিশ্বাসো নৈব কর্ত্তবাং জ্রীয়ু রাজকুলেয় চ।। ২৫।।

নদীকে বিশ্বাস না করিবে কদাচন। নথী আর শৃদ্ধারী অবিশ্বাসী হন। অস্ত্রধারী অবিশ্বাসী নিকটে না যাবে। না-রীকে রাজাকে নাছি বিশ্বাস করিবে।। ২৫।।

হস্তিহস্তসহত্রেণ শতহস্তেন বাজিনঃ ৷

मृक्तिर्गा प्रमहत्स्वन स्थानजार्गन इब्बनः॥ २७॥

যাইবে সহজ্ঞ হস্ত অন্তরে হস্তীর। ঘোটকের শত হাত দূরে যাবে ধীর।। দশ হাত দূরে রাখি যাইবে শৃদ্ধীরে। স্থান ত্যাগা করিয়া তাজিবে ফুর্জনেরে।। ২৬।।

আপদর্থং ধনং রক্ষেদারান্ রক্ষেক্তিরপি। আস্থানং সভতং রক্ষেদ্য হৈরপি ধনৈরপি।। ২৭।। আপদের ছেতু ধন করিবে সঞ্জ। সে ধনেতে পত্নী রক্ষা করিবে নিশ্চয়॥ আত্ম রক্ষা করিবেক স্বর্মধা প্রকারে। পত্নী কিয়া ধন ধারা যে প্রকারে পারে॥ ২৭॥

প্রদারং পুরক্রব্যং পরীবাদং পরস্থ চ।

পরিহাসং গুরোস্থানে চাপলাঞ্চ বিবর্জ্জরেৎ।। ২৮।। পরদার পরদ্রব্য পর পরীবাদ। পরিত্যাগ করিবেক নতুব। প্রমান।। গুরুলোক সমুখে চাপল্য পরিহাস। যে করে তা-হাকে লোকে করে উপহাস।। ২৮॥

> ত্যজেদেকং কুলস্থার্থে প্রামস্থার্থে কুলং ভ্যক্তেৎ। গ্রামক্সমপদস্থার্থে প্রামার্থে পৃথিবীস্তাজেৎ॥ ২৯॥

কুল রক্ষা করিতে ত্যজিবে এক জন। আম রক্ষা হেতু কুল তাজে বিচক্ষণ।। দেশের কল্যাণ ছেতু আম ত্যজিবেক। গৃথিবী ত্যজিয়া আসা রক্ষা করিবেক।। ২৯।।

চলত্যেকেন পাদেন ভিষ্ঠত্যেকেন বুদ্ধিমান্। মাসমীক্ষপরং স্থানং পূর্ব্যায়ত্তনং ত্যক্তেৎ।। ৩০ ।। এক পায়ে গামন করিবে বুদ্ধিমান। আর পায়ে থাকিয়া করিবে অহুমান।। একস্থান নিশ্চয় না করে পূর্বস্থান। পরি-

ত্যাগ না ক্রিবে এই সে বিধান।। ৩০।। লুরুমর্থেন গৃড়ীয়াৎ ক্রেমগুলিকর্মনা।

মূর্থং ছন্দোর্ম্বতেন তথা সত্যেন পণ্ডিতং ॥ ৩১ ॥
লোভীকে করিবে বশীভূত ধন দিয়া। ক্রোধীকে আনিবে
বশে বিনয় করিয়া॥ মূর্থেরে সাধিবে তার মত কদাচারে।
ভূধিবেক পণ্ডিতেরে সত্য ব্যবহারে॥ ৩১ ॥

অর্থনাশং মনস্তাপং গৃছে হুশ্চরিতানি চ।

বঞ্চনকাঁপমানকা মতিমান্ন প্রকাশরেও।। ৩২।।
অর্থনাশ মনজাপ গৃহছিত আরে। বঞ্চনাপমান যদি হয়
আপানার।। বৃদ্ধিমান ইহা নাহি করিবে প্রকাশ। গোপনে
রাথিবে সদাধনৈলে উপহাস।। ৩২।।

ধনধান্ত প্রহোবেষ তথা বিজ্ঞাবমেয়্চ। আহারে ব্যবহারে চ ত্যক্তনজ্জ সদা ভবেৎ॥ ৩৩॥ ধন ধান্ত আদান প্রদান কর্ম আরে। বিজ্ঞা শিক্ষা আর যে আহার ব্যবহার।। ইহাতে করিলে লজা হয় অপচয়। এই হেতু লজা হীন জানিবে নিশ্চয়।। ৩০।।

धनिनः (व्याबिर्त्ता त्राका नहीं रेरक्क शक्षम।

পাঞ্চ যত্র ন বিছাত্তে জ্ঞ বাসং ন কারত্রেৎ।। ৩৪।।

ধনী আর ক্ষত্র রাজা নদী কবিরাজ। এই পঞ্চ নাছি থাকে যে আমের মাঝ।। সে আমে নিবাস না করিবে শিফ জন। নিবাসে বিনাশ ঘটে শাল্কের লিখন।। ৩৪।।

যিনি দেশে ন সমানং ন প্রীতির্ন চ বান্ধবাঃ।

न ह विश्वांभभः कन्हिलः (मनः भिन्नवर्क्ताः ॥ ०० ॥

যে দেশে বাস্ত্রব নাই আর নাই মান। প্রীতি নাহি আর নাহি কোন বিছাস্থান।। সে দেশে বসতি ত্যাগ করিবেক ধীর। রাজনীতি শাস্ত্রমত কহিলাম স্থির।। ৩৫।।

মনসা চিন্তিতং কর্ম বচসা ন প্রকাশয়েৎ।

অন্সলক্ষিতকার্যাস্থ্র যতঃ দিদ্ধির্ব জায়তে॥ ৩৬॥

মনেতে করিবে কার্য্য না কবে কুথায়। অন্তেতে জানিলে কর্ম দিদ্ধ নাহি পায়॥ ৩৬॥

कूरमान कूत्र जिथे कू जो शांश कू नहीं १ उथा।.

क्रावाक कृटलाकाक वर्ल्डाक विष्करः।। ७१॥

কুদেশে বসতি আর কুরত্তিকরণ। কুনদীতে আন আর কুভার্য্যা গ্রামনা। কুস্রব্য গ্রেহণ আর কুভক্ষ্য ভক্ষণ। না ক্রিবে এই কয় কর্ম বিচক্ষণ।। ৩৭।।

श्राप्तार्थार्थायम् वाश्राप्तार्थार्थार्था

পুনশ্চ বৰ্দ্ধতে যশান্তশাৎ শেষঞ্চ কারহেছ।। ৩৮॥

নিঃশেষ করিবে ঋণ অগ্নি আর ব্যাধি। কি জানি আপদ যটে পুনঃ বাড়ে যদি॥ ৩৮॥

চিন্তাজ্বো মনুষ্যাণাং বস্ত্রাণামাতপোজ্বঃ।

व्यक्ति जाता जुनाः जीनाम्यानाः देमथूनर जुनः ॥७३॥

চিন্তা হর মনুষোর জ্বের সমান।। রৌজেতে জ্বের ভার বক্ত নাশ পান।। শৃলারেতে শক্তিহীন ঘোটকের জ্ব।। অনৌভাগ্যা নারী জরা বিধ্বা কাতর।। ৩৯॥ অতি পুলোবণে যতা ভ্ডো ভাষা। ভথেৰ চ।
অভাবে সভি সন্তোবঃ স্বৰ্গছোহসো মহীতলে॥ ৪০॥
পুল্ল ঘার বন্দে ধাকে ভাষা। সেই মত। আজ্ঞাবহ ভূতা
হয় সদা অনুগত।। যতাপি না থাকে ধন তথাপি সংভোষী।
কেবল ভূমিতে আছে সেই স্বৰ্গবাসী॥ ৪০॥

হুফীভার্যা শঠং মিত্রং ভূত্যশ্চোত্তরদারকঃ। সমর্পে চ প্রহে বাসো মৃত্যুত্তরে ন সংশর।। ৪১॥

ভাগা দুষ্টমতি যার শঠ মিত্র হয়। আর ভূতা সমান উত্তর যদি কয়।। যে যবে ভুজ্জ থাকে সেই যবে বাস। মরণ নিশ্চয় তার জীবনে নিরাশ।। ৪১॥

> মাতা যক্ত গৃহে নান্তি ভার্ষ্যা চাপ্রিয়বাদিনী। অরণ্যং তেন গন্তব্যং বখারণ্যং তথা গৃহং॥ ৪২॥

মাতা যার গৃহে নাই আর নিজ দারা। কিহে দে অপ্রির কং। নিতাত প্রথায়া উপযুক্ত বন্মধ্যে গামন তাহার। তার খর বনস্থল সম ব্যবহার।। ৪২॥

খাঁণকৰ্তা পিতা শক্ৰ মাতাশক্ৰৰি চারিণী।

ভার্যা রপবতী শক্তঃ পুত্রঃ শক্তঃ রুপণ্ডিতঃ।। ৪৩।।

খণ করে যান মতে পিতা শক্ত গণি। মাতা শক্ত সম হন মদি দ্বিচারিণী। রূপবতী ভার্য্যা শক্ত সদা শঙ্কা হয়। আপন সন্তঃন মূর্থ শক্ত অভিশয়। ৪০॥

> কোকিলানাং অন্ধোরপং নারীরপং পতিব্রতা। বিত্যারপং কুরূপানাং ক্ষমারপং তপব্যিনাং ॥ ৪৪ ॥

কোকি লের নাহি রূপ তার রূপ ব্যর। পতিভক্তি অবলার রূপ মনোহর।। কুরূপ জ্বনের রূপ বিছা যদি হয়। তপ্ত্রী জনের রূপ ক্ষমাই নিশ্চয়।। ৪৪॥

> অবিজ্ঞাবিনং শৃত্তং দিক্ শৃত্যা চ বান্ধবাঃ। পুত্ৰহীনং গৃহং শৃত্তং সৰ্কা শৃত্যা দ্বিজ্ঞতা॥ ৪৫॥

অবিজ্ঞ জীবন শুক্ত বুদ্ধি নাই ঘটে। বন্ধ নাই বে দিকে সে দিক্ শুক্ত বটে।। পুত্ৰহীন গৃহশুক্ত অন্ধকার দেখে। দ্যিকের সর্ব্য শুক্ত সর্ব্ব শাল্তে লিখে।। ৪৫॥ व्यवाजा वश्मद्रमार्थिंग कर्यद्रमांबामद्रिज्ञां।

উন্মানো মাতৃদোষেণ পিতৃদোষেণ মুর্থতা।। ৪৬॥

পুৰুষ অদাতা হয় নিজবংশ দোৱে। কম্পোৱে ধনহীন ভমে নালা দেখে।। মাতৃদোহে শিশু নই নাকরে পালন। পিতৃদোহে পুত্র মুর্খ নাকরে তাড়ন।। ৪৬॥

গুরুর্ঘিছি জাতীনাং বর্ণানাং ব্রাহ্মণো গুরু: !

পতিরেকো গুক: স্ত্রীণাং সর্ব্জাভ্যাগতোগুক: ॥ ৪৭ ব্রাহ্মণের গুরু অগ্নিশাস্ত্রে নিরূপণ। সকল বর্ণের গুরু কেবল ব্রাহ্মণ॥ স্ত্রীলোকের গুরু হয় পতি আপনার। অতিথি আইলে গুরু হন স্বাকার॥ ৪৭॥

> অতিদৰ্পে হতা লক্ষা অতিমানে চ কৌৱবাঃ। অতিদানে বলিক্ষঃ সক্ষণত্যত্ত্বাৰ্হিতং॥ ৪৮॥

অতি দপে নিট হইল লক্ষার রাবণ। অতি মানে সবংশে মনিল ছুর্য্যোধন।। অতি দানে বলির পাতালে হৈল ঠাই। অতিশয় কোন কর্মনা করিছ ভাই।। ৪৮।।

বস্ত্রহীনস্থলয়ারো মূতহীনপট ভোজনং।

স্তনহীনাচ যা নারী বিস্তাহীনঞ্জীবনং ॥ ৪৯॥

বস্ত্র নাই জালপ্পারে কিবা শোভা হয়। গবারী স বিহীন ভোজন কিছু নয়।। বিজ্ঞাহীন লোকের জীবনে কিবা আশ। শুনহীন। যেই নারী ডারে উপহাস।। ৪৯।।

ভোজাং ভোজনশক্তিক রতি+ক্তির্বরা: খ্রিয়:।

বিভবো দানশক্তিশ্চ নাম্পাশ্ত তপদঃ ফলং॥ ৫০॥

খ'প্তদ্রব্য যথেষ্ট ভোজনশক্তি তত। রতিশক্তি আর প্রিয় ভার্যা অনুগত।। দানশক্তি অতুল ঐত্বর্য এই চুয়। অনেক তথাস্যা বিনা কারো নাহি হয়।। ৫০।।

পুত্রপ্রোজনা দারা পুত্রপিতং প্রয়োজনং।

ছিত প্রোজনং মিত্রং ধনং সর্কপ্রয়োজনং ॥ ৫১॥

ভার্ষ্য ইস্ছা করিবেক পুজের কারণ। পিওদান মাত্র স্থপু-ত্রের প্রক্ষোজন।। মিত্র প্রক্ষোজন এই করিবেক হিত। সর্ব্ব প্রক্ষোজন সিদ্ধ ধনেতে নিশ্চিত।। ৫১।। হুল ভং প্রাক্তং বাকাং হুল ভ: পুরপণ্ডিত:।
হুল ভা সদৃশী ভাগা হুল ভ: অজন: প্রিয়:।। ৫২।।
হুল ভ সদর্থবাকা সর্বা মনোহর। বছহু:খে লভা হর পুল গুণাকর।। আপন সমান ভাগা হুল ভা ভূডলে। হিতকারী প্রিয়বর অতি হৃঃখে মিলে॥ ৫২॥

> লৈলে শৈলে ন মাণিক্যং মৌক্তিকং ন গাল্জে গাল্জে। সাধবো নহি সৰ্ব্বতি চন্দনং ন বনে বনে ॥ ৫৩॥

পৰ্বতেং নাছি নিলয়ে মাণিক। হন্তীতেং কোণা পাইবে মৌক্তিক।। সৰ্বত্ত না পাওয়া যায় দেখ সাধুজন। বনে বনে নাছি থাকে কখন চন্দন।। ৫০॥

> অশোচ্য নিৰ্দ্ধনং প্ৰাজ্যে২শোচ্যঃ পণ্ডিতবাস্কৰঃ। অশোচ্যা বিধবা নারী পুত্রপৌত্রপ্রতিন্তিতা॥ ৫৪॥

পণ্ডিত নিৰ্দ্ধন যদি তবু সে উত্তম। বন্ধু যদি পণ্ডিত সে অতি অনুপম ॥ পুত্ৰপৌলবতী নারী বিধবা যন্তপি। তাহারে দেখিয়া খেদ না হয় তথাপি॥ ৫৪॥

অবিজ্ঞপুরুষঃ শোচাঃ শোচাং মৈথুনমপ্রজং।

নিগছারাঃ প্রজাং শোচ্যাং শোচ্যং রাজ্যমরাজকং । ৫৫ বিজ্ঞাহীন পুক্ষ দেখিয়া খেন হয়। সে মৈখুন বিফল সন্তান যাতে নয়॥ হয় শোক প্রজালোক দেখিয়া নির্দিন। অর্জেক দেখে দেশ কেশ পায় মন॥ ৫৫॥

> কুলীনৈঃ দহ দম্পূৰ্কং পণ্ডিতৈঃ দহ মিত্ৰভাং। জ্ঞাতিভিক্ষ দমং মেলং কুৰ্বাণো ন বিনশ্ৰতি।। ৫৬।।

কুলীনের সহিত সম্বন্ধ আছে যার। পণ্ডিতের সহ যে মিত্রতা করে আরি।। জ্ঞাতিগণ সহ থাকে যাহার মিলন। তাহার বিনাশ নাহি হয় কদাচন।। ৫৬।।

কন্টারতিঃ পরাধীনাঃ কন্টোবাসো নিরাশ্রঃ। নির্দানা ব্যবসায়শ্চ সর্বকন্টা দ্রিন্তা।। ৫৭॥

পরাধীন জীবনেতে অতি কফ হয়। নিরাশ্রয় নিবাসেতে কফ অতিশর।। কফ পায় করিলে নির্দ্ধন ব্যবসায়। সকল প্রকার কফ দরিত্রতা হয়।। ৫৭।। ভত্মবত্ম কুডোধর্ম প্রজ্ঞনতা কুড: কমা।

বেখানাঞ্চ কুতঃ স্বেহ কুতঃ নত্যঞ্চ কামিনাং ॥ ৫৮॥

চৌর্যার্ক্তি যে করে তাহার ধর্ম কোখা। ফুর্জ্জনের ক্ষমা নাহি কেবল থলতা।। উপপত্তি প্রতি বেশ্বা কোথা করে স্নেহ কামুকের সভা বাক্য নাহি শুনে কেছ।। ৫৮।।

প্রেষিতশ্র কুতো মানঃ কোপ্রশ্র কুতঃ হুখং।

স্ত্রীণাং কুতঃ সভীতঃ কুতঃ প্রীতিঃ খলত চ॥ ৫১॥

পরের সেবক যে তাহার কোথা মান। রাগিলোক কোন স্থানে সুখ নাছি পান।। জ্রীলোকের সতীত জগতে কোথা রয়। কার সঙ্গে থাকে দেখ খলের প্রণয়।। ৫৯।।

> ত্বলম্ম বলং রাজা বালানাং ব্যোদনং বলং। বলং মূর্যম্ম মৌনিজ্ং চৌরাণামস্তং বলং॥ ৬০॥

তুর্বল প্রজার বল রাজা সে কেবল। রোদন কেবল ফুন্ত বালকের বল। মৌনী হঙ্গে থাকা মাত্র বল সে মূর্বের। মিথ্যা কথা মাত্র কেবল আছেরে চোরের।। ৬০।।

যে। ধ্রুবাণি পরিত্যজ্ঞা অধ্রুবং পরিসেবতে। '

ধ্রুবাণি তথ্য নশুন্তি অধ্রুবং নম্টমের চ।। ৬১॥

নিশ্চিত বিষয় ত্যাগা করিয়ে যে জন। অনিশ্চিত বিষ-য়েতে করে আকিঞ্চন॥ নফ হয় তাহার ঘৈ নিশ্চিত বিষয়। অনিশ্চিত বিষয়ের চেফী মিথ্যা হয়॥ ৬১॥

एकर मारम खिर्या तका वालाक छन्न पर परि।

প্রভাতে মৈথুনং নিজা সত্তঃ প্রাণহরাণি ষট্।। ৬২ ॥

শুষ্ক মাংসং আর রদ্ধা নারী সহ রতি। শরৎকালীন রৌক্র দ্বি অম অতি।। প্রভাতে দৈখুন আর নিজা এই ছয়। শীস্ত্র প্রাণ হরণ করয়ে এ নিশ্চয়।। ৬২।।

> সজোমাংস নবারঞ্ বালান্ত্রী ক্ষীরভোজনং। মৃতমুফোদকঞ্চৈব সভাঃ প্রাণকরাণি বট্।। ৬০।।

সভা মাংস আরে অর নবীন কোমদ। সভায়ত আর হ্র অস্প উষ্ণ জল।। বালিকা রমণী সহ রতি এই ছয়। যে করে দেবন তার আয়ুর দ্বি হয়॥ ৬৩॥ সিংহাদেকং বকাদেকং ষট্ শুদন্তীশি গৰ্মভাং। ৰায়সাং পঞ্চ শিক্ষেত চড়ারি কুকুটাদপি॥ ৬৪॥

সিংহ হইতে এক বিজ্ঞা বক হৈতে এক। কুকুর হইতে ছয় বিজ্ঞা শিখিবেক ॥ সাদ্দিতের কাছে শিখিবেক পাঁচ গুণ। কুকুটের কাছে চারি শিখিবে নিপুন ॥ ৬৪॥

প্ৰভূতমপাকাৰ্যায়া যো নরঃ কর্ত্ত্বিচ্ছতি।

সর্বারক্তেণ তৎকুর্যাৎ সিংহাদেকং প্রকীর্ত্তিতং।।৬৫॥ প্রশা কিছা বহু কার্যা করিতে যে চায়। উদেয়ায়ী যেমন সিংহ হবে তার প্রায়॥ ৬৫॥

সর্বেন্ডিয়াণি সংবম্য বকবং পণ্ডিতো জন:। কালদেশোপপন্নানি সর্ব্বকার্যাণি সাধ্যেং।। ৬৬॥ বকের সমান সর্ব্ব প্রকারে তৎপর। কাল দেশ বুঝি কর্ম সাধিবেক নর।। ৬৬॥

বহ্বাৰী স্বম্পাসস্তুষ্টঃ স্থনিত্ৰঃ শীন্তচেতনঃ।

প্রভূত ক্তাত প্রশৃত জ্ঞাতব্যাঃ যট্ শুনোগুণাঃ।। ৬৭ ।। অনেক আহার করে অপে তুট হয়। শীঘ্র নিজা হয় আর শীত্র নিজা করা। প্রভূতক্ত আর যথাশক্তি পরাক্রম। কুকুরের ছয় গুণ শাজের নিয়ম।। ৬৭ ॥

অবিজ্ঞানং বিষ্টোরং শীডোফঞ্চ ন বিন্দতি।
সসন্তোষস্তথা নিতাং ত্রীনি লিক্ষেত গর্দভাৎ।। ৬৮॥
অবিরত বহে ভার আন্ত নাছি হয়। উত্তাপেতে আর শীতে হঃখবোৰ নয়॥ সর্বাদা সন্তোষে থাকে গুণ এই তিন।
গর্দিভের কাছে শিখি হইবে প্রবীণ।। ৬৮।।

> গৃঢ়িমৈথুনধৰ্মঞ্চ কালে কালে চ সংগ্ৰাছং। অপ্ৰমাদ্যনালতাং চতুঃ শিক্ষেত বায়সাং।। ৬৯॥

গোপনে সন্ধ করে নাছি দেখে কেছ। উপযুক্তকালে করে খার্ছের সংগ্রহা। সাবধান সর্বদা আলস্থ নাছি রাখে। কাকের এ চারি গুণ শিক্তজন শিখে।। ৬৯।।

> বৃদ্ধঞ্চ প্রাতক্ষানং ভোজনং সহ বন্ধঃ। ব্রিরমাণদাতাৎ র**ক্ষেত্**যু: শিক্ষেত কুরুটাৎ॥ ৭০॥

প্রভাবে চৈতত আর নিপুণা বুলেতে। সমভাগ পূর্বক আহার বন্ধ সাতে।। প্রাণপণে রক্ষা করে পত্নীকে সঙ্কটে। এই চারি গুণ শিখ কুকুট নিকটে।। ৭০।। •

কোইভিন্তার: সমর্থানাং কিং দূরং বাবসায়িনাং।
কো বিদেশ সবিজ্ঞানাং কঃ পর প্রিয়বাদিনাং।। ৭১॥
কভিপুক্ষের কোন কর্ম অতি ভার। যে জন বাণিজ্য করে কি দূর তাহার।। বিজ্ঞাবান জনের বিদেশ কোন দেশ।

আপদাং কথিতং পদ্তা ইন্দ্রিয়াণামসংযমঃ।

মিষ্টভাষী জনেরে কি অন্তে করে দেব॥ ৭১॥

তজ্জাঃ সম্পাদাৎ মার্ফো যেনেষ্টৎ তেন সমাতাৎ।।৭২॥
আপাদের পথ ইন্দ্রিয়ের অদমন। সম্পাদের পথ হয় ইক্রিয় দমন।। এই রূপ ভূই পথ আছে বিভাষান। যে পথে
ইইবে ইচ্ছা করহ প্রয়াণ।। ৭২ ॥

ন চ বিজ্ঞাসমো বর্শিচ ব্যাধিসমো রিপুঃ।

ন চাপত্যসমঃ স্নেছোন চ দৈবাৎ পারং বসং ॥ ৭৩ ॥ বিজ্ঞার সমান বন্ধু নাছিক ভূতলে। ব্যাধির সদৃশ শক্ত কথন না মিলে॥ সন্তান সমান স্নেছ অন্তো নাছি ছয়॥ দৈবের অধিক বল না দেখি নিশ্চয়॥ ৭৩ ॥

সমুদ্রাবরণা ভূমিঃ প্রাকারাবরণং গৃহং।

নরেন্দ্রাবরণা দেশাশ্চরিত্রাবরণাঃ ক্রিয়ঃ।। ৭৪।।

আবরণ পরোনিধি আছে পৃথিবীর। চতুর্দ্ধিক আবরণ ঘরের প্রাচীর।। আবরণ দেশের প্রবল মহীপাল। সংস্কভাব আবরণ স্ত্রীর সক্ষকাল।। ৭৪॥

> য়তকুন্তসমা নারী তপ্তাঙ্গারসমঃ পুমান্। তন্মান্য তঞ্চ বহিঞ্চ নৈকত্ত স্থাপায়েত্বঃ।। ৭৫।।

য়তকুন্ত সমান যুবতী নাথী জন। জ্বলন্ত অকার সম পুক্ষ তেমন।। সেই হেতু মৃত আর বহ্নি এক স্থান। না রাখিবে রাখিলে প্রমাদ বিজ্ঞান।। ৭৫।।

> আহারো বিগুণাঃ স্ত্রীণাং বৃ**দ্ধিন্তাসাং চতু**গুণাঃ। ষড়গুণো ব্যবসায়ক কামাকা**উগুণাঃ স্থু**তাঃ॥ ৭৬॥

আহারে দিওপাত্রী চারি গুণ মন্তি। ব্যবসায় ছয় গুণ অফ শুণ রতি ॥ ৭৬॥

> জীৰ্ণমাং প্ৰশংসীয়াৎ ভাৰ্যাঞ্চ গত্যোবনাং। বুণাৎ প্ৰভাগিতঃ শূবঃ শস্তুঞ্চ গৃহমাগতং॥ ৭৭॥

প্রসংশিত সেই পদ্ধ যেই জীর্ণ পার। নির্দ্ধোষে যৌবন গোলে প্রতিষ্ঠা ভার্যার॥ বীরের প্রশংসা হয় জিনিলে স্মরে। সেই শস্ত প্রসংশিত যদি আইসে ঘরে॥ ৭৭॥

অসন্ত্রফী দিজা নফী: সন্ত্রফী ইব পার্থিবা:। সলজ্জা গণিকা নফী নির্লজ্জাশ্চ কুলজ্জিয়ঃ (। ৭৮॥

সন্তোষেতে রাজার যেমন হয় হ্রাস। অসন্তোষে ব্রাশ্ম-ণের তেমনি বিনাশা। খানহীনা যেমন নির্লজ্ঞা কুলবতী। লক্ষাবতী বেশ্বার তেমনি ধনক্ষতি।। ৭৮॥

> অবংশপতিতো রাজা মূর্যক্ত প্রত্রপতিতঃ। অধনেন ধনং প্রাণ্য তৃণবৈল্ফীতে জগং॥ ৭৯॥

নিক্টের পুত্র যদি পার রাজ্যভার। স্পণ্ডিত হর যদি মুখের কুমার।। নির্দ্ধ পাইলে ধন করে অহঙ্কার। তৃণ সম জ্ঞান কৰে সকল সংসার।। ৭৯।।

> বৃদ্ধান ক্রঃ পুজো বৃদ্ধান্তি বিপুলং ধনং। শশিনস্তুল্যবংশোপি নির্দ্ধনঃ পরিভূয়তে॥৮০॥

ব্ৰহ্মহত্যা করে যদি অতি ধনবান। তথাপি তাহাকে করে সকলে সম্মান।। চন্দ্ৰতুল্য শুদ্ধবংশে বাহার উদ্ভব। ধন না থাকিলে ভার কে করে গৌরব।।৮০।।

পুস্তকুষ্ঠা তু যা বিজ্ঞা পরহস্তগতং ধনং।
কার্য্যকালে সমুৎপনে ন সা বিজ্ঞান তন্ধনং॥৮১॥
পুস্তকে শিক্ষিত বিজ্ঞা মুখে নাহি আসে। ধন আছে বটে
কিন্তু আছে পরবশে॥ অকন্মাৎ কার্য্য যদি হয় উপন্থিত।
সে বিজ্ঞা সে ধনে কিছু নাহি করে হিত॥৮১॥

পাদপানাং ভয়ং বাতাৎ পাদানাং শিশিরাদ্ভরং। পর্মতানাং ভয়ং বজ্ঞাৎ সাধুনাং ভূর্জনাদ্ভরং॥ ৮২॥ সকল রক্ষের ভয় প্রবল সমীর। পঞ্চরের ভয় ঋতু ভ্রন্ত শিশির।। পৃথিবীতে বজুমাত্র **পর্বতের ভর। স্ক**নের হর্জন হইতে ভর হয়। ৮২।।

প্রাজ্ঞে নিযোজ্যমানে তু সন্তি রাজ্ঞ্জয়ো গুণাঃ।
যশঃ স্বর্গনিবাসক বিপুলশ্চ ধনাগমঃ॥ ৮৩॥

রাজকর্মে যদি হয় নিযুক্ত পণ্ডিত। রাজার এ তিন ওণ হয় উপার্জিত।। নিরুপম যশ আর অন্তে অর্গবাস। অতুল ঐশ্বর্য এই শান্তের আভাস।। ৮১।।

মূর্বে নিযোজ্যমানে তু ত্রেরাদোষা মহীপতেঃ। অধশশ্রেনাশশ্র নরকে গমনং তথা॥ ৮৪॥

মূর্ধেরে রাজ্যের ভার করিলে অর্পণ। এই এই তিন দোহ-ভাগী রাজা হন। অধশ অধর্ম আর অর্থ নাশ হয়। অবিচার করে মূর্থ রাজারে মজায়। ৮৪।।

বছভিমূর্থ সংখাতৈরকারপশুরভিভি:।

প্রক্রান্ত গুণাঃ **শর্কে** মেঘৈরিব দিবাকরঃ।। ৮৫ ।।

মূর্থ সব পরস্পার পশু ব্যবহার। তাহারা ঢাকিরে রাখে ২ণ যে রাজার॥ যেমন নিবিড় মেছে ঢাকে দিবাকর। মূর্য ছাতে সেইমত হন তৃপ্বর॥ ৮৫॥

যন্ত্র ক্ষেত্রং নদীতীরে ভার্য্যা বাপি পরপ্রিয়া। পুজ্রুত্ব বিনয়ো নাস্তি মৃত্যুরের ন সংশয়ঃ।। ৮৬॥

নদী তীরে কৃষিকর্ম করে যেই জন। ইতর পুরুষ এতি যার স্ত্রীর মন।। পুত্রের বিনয় নাই সদা অবিনয়। মৃত্যুসম তংখ তার নাহিক সংশয়॥ ৮৬॥

অসম্ভব্যং ন ব্যক্তব্যং প্রত্যক্ষপি দৃখতে

শিলা তরতি পানীরং গীতং গায়ন্তি বানরা:।। ৮৭:।

অসম্ভব কথা না কহিবে কোন জন। প্রত্যক্ষেতে যতপি সে করে নিরীক্ষণ।। জলেতে পাষাণ ভাসে কপি গাঁত গাঁহ। রামায়ণ বিনা কোথা কে করে প্রত্যয়।।৮৭।।

স্মৃতিকং ক্লয়কে নিতাং নিতাং স্থমরোগিণঃ। ভার্যা ভর্জু প্রিরা যক্ত জন্ম নিত্যোৎসবং গৃহং॥৮৮ ক্লয়কর্ম যে করে স্থাভিক নিত্য তার। নিতা নিতা স্থা

( b )

ভার রোগ নাহি যার॥ মনোনীতা প্রিরসী যাহার ভার্যা। হয়। মহোৎস্বময় নিত্য তাহার আলয়॥৮৮॥

> হেলান্ডাৎ কাৰ্য্যনাশায় বুদ্ধিনাশায় নিৰ্দ্ধনং। যাচঞা মাননাশায় কলনাশায় ভোজনং।। ৮৯॥

হেলাতে না হয় কোন কথ সিদ্ধ ভাই। দ্বিজ হইলে তার বুদ্ধি থাকে নাই॥ যাচ্ঞা করিতে গেলে মান থাকে কিনে। কুলীনের কুল নফ ভোজনের দোষে॥৮৯॥

> সেবিতব্যা মহারক্ষ: ফলচ্ছায়া সমন্বিতঃ। যদি দৈবাৎ ফলং নাস্তি ছারা কেন নিবার্যতে ॥৯০॥

ফলবান মহারক্ষ ছায়াতে শোভিত। তাহারে আত্রয় করা সেই সে উচিত।। বল্পপি তাহার ফল না নিলে দিবাং। ছায়া পাইবার কোন না দেখি ব্যাযাত।। ৯০॥

প্রথমে নাৰ্জ্জিতা বিছা দিতীয়ে নাৰ্জ্জিডং ধনং।

তৃতীয়ে নাৰ্জিতং পুণাং চতুহঁৰ্থ কি করিষাতি ॥ ৯১ ॥ প্রথম বরসে বিভা না করে অর্জন। দ্বিতীয়েতে নাহি করে পুণোর সঞ্চার। কে জন দ্বত্ববিধানে কি করিবে আর ॥ ৯১ ॥

নদীকুলে চ্যা রকাঃ পরহস্তগতং ধনং।

কার্য্য স্ত্রীগোঁচরো যস্থাৎ সর্ক্য ওদিকলন্তবেৎ।। ৯২।।
নদীতীরে রক্ষ পরহস্তগত ধন। স্ত্রীলোকের হাতে কোন
কার্য্য সমর্পণ।। এ তিন বিফল হয় নাহিক সন্দেহ। অতএব
তিন কর্ম না করিবে কেহ।। ৯২।।

কুদেশমূাসাভ কুতোইর্থনঞ্চঃ, কুপুত্রমাসাভ কুডো-জনাঞ্জিঃ। কুগেহিনীং প্রাপা গৃহে কুড: পুখং, কুশিষ্যমধ্যাপ্যতঃ কুডো ষশঃ॥ ১০॥

কুদেশ ভ্রমিয়ে কোথা করে ধন আয়। কুপুত্র হইলে কোথা জলাঞ্জলি পায়।। কুগেহিণী ছলে তথ কোথা হয় ঘরে পড়াইয়া তথ পায় কোথা কুশিখোরে।। ৯০।।

> কূপোদকং বটচ্ছায়া শ্রামা স্ত্রী ইফাকানরং। শীতকালে ভবেহুফং গ্রীম্মকালে চ শীতলং॥ ১৪॥

কূপের উদক আরু বটরক্ষছারা। ইফক রচিত গৃহ নারী শ্বামকারা।। এই চারি বস্তু উফ থাকে শীতকালে। উফ-কালে শীত হয় লোক শান্তে বলে।। ৯৪॥

বিষং চংক্রমণং রাজে বিষং রাজ্যেইসুকূলতা। বিষং স্ত্রিরোপান্তরতা বিষং ব্যাধিরবীক্ষিত:।। ৯৫।।

রাত্রিকালে পর্যাটন বিষের সমান। অতি অনুকূল রাজ্ঞা করি বিষক্তান।। অন্ত পুরুষানুরক্তা ভার্য্যা বিষ হয়। ওদাস্থ করিলে রোগা হয় বিষময়।। ১৫।।

ত্বধীতা বিষং বিজ্ঞা অজীর্ণে ভোজনং বিষং।
বিষং গোণ্টা দরিক্তা রদ্ধত তক্ষণী বিষং॥৯৬॥

অভ্যাদ রহিত বিজ্ঞা বিষতুল্য হয়। অজীর্ণ ছইলে যে ভোজন বিষময়।। বহু গোষ্ঠী দরিজের বোধ হয় বিষ। রজের যুবতী ভার্য্যা বিষ অহর্মিশ।। ১৬।।

প্রদোষে নিহতঃ পদ্ধাঃ পতিতা নিহতাঃ দ্রিয়ঃ।
অপ্পবীজ্ঞং হতং ক্ষেত্রং ভূতাদোষে হতঃ প্রভুঃ ॥৯৭॥
সদ্ধাকালে পথ হত হয় অন্ধকারে। ভূফনীলা নারী
হলে হতা বলি তারে॥ অপ্পবীজ বদি বুনে ক্ষেত্র হয় হত।
ভূতাদোষে রাজা হত এই শাস্ত্রমত ॥ ৯৭॥

হতমশ্রোত্তিরং প্রাদ্ধং হতো যজন্ত্রদীক্ষণাঃ। হতা রূপবতী বন্ধ্যা হতং দৈক্সমনায়কং।। ৯৮।।

শ্রোতির যে আন্ধেনাই সেই আদ্ধ হত। দক্ষিণা বিহীন যক্ত হত সেইমত।। তারে হত বলি রূপবতী বন্ধ্যা হলে। সেনাপতি বিনা সেনা হত রণন্থলে।। ৯৮।।

বেদবেদাক তত্ত্তোজপহোমপরায়ণ:।

আশীর্কাদবচোযুক্ত এষ রাজপুরোছিতঃ।। ৯৯।।

বেদেতে বেদান্তশান্তে যে জন বিধান। যজ জপ ছোম কর্মে সদা ক্রিয়াবান।। আশীর্কাদ করেন প্রত্যন্থ ভূপতির। তিনি রাজপুরোহিত পণ্ডিত স্থীর।। ১১।।

> কুলশীলগুণোপেতঃ লব্ধবর্ম পরায়ণঃ। প্রবীণঃ প্রেষণাধ্যকো ধর্মাধ্যকো কিধীয়তে।। ১০০।।

কুলনীৰ গ্ৰণবান ধাৰ্মিক প্ৰবীণ। ধৰ্মাধ্যক বলি ভাৱে আলস্থ বিহীন॥ ১০০।।

আয়ুর্কেদক্তাভাগি: সর্কেষাং প্রিয়দর্শন:। আর্থাশীলগুণোপেত এষ বৈছো বিধীয়তে ॥ ১০১॥ আয়ুর্কেদে বিজ্ঞ অতি স্থন্দর স্থ্যাজ্ঞ। ত্থশীল স্বগুণবান রাজকবিরাজ্ঞ। ১০১॥

সক্ষত্ত গৃহীতার্থো লঘুহস্তো জিত।করঃ।
সর্বাণান্ত্রসমালোকী প্রক্ষেটা নামলেখকঃ।। ১০২।।
উচ্চারণ মাত্রে অর্থ বোধ হয় যার। যে জন ছবিত লিখে
জিতাকর আর।। থাকে যার সর্বাণান্ত্রে সর্বাণা অভ্যাস।
রাজার লেখক সেই যাহাতে বিশ্বাস।। ১০২।।

সমস্তনীতিশান্তজো বাছনে পুজিতাশ্রম:।
শৌর্ষ্য বীর্ষ্য গুণোপেডঃ সেনাধ্যক্ষো বিধীয়তে।।১০০
নীতিশান্ত সমূহে যে হয় ব্যবসায়ী। অথ আবোহণে মান্ত

ন্য বনাত্র সমূহে যে হয় যাবস্থানা অব আংগোছণে মাঞ্চ এন বোধ নাই।। শৌষ্য বীষ্য প্রভৃতি গুণেতে গুণপতি। দেন।প্রিত তাহাতে করিবে নরপতি।। ১০০।।

> মেধাৰী বাক্পটুঃ প্ৰাজ্ঞ: প্রচিত্তোপলক্ষকঃ। ধীরো যথোক্তবাদী চ এব দুডো বিধীয়তে ॥ ১০৪ ॥

মেবাবান উপস্থিত বক্তা অতি স্থির। মনোরভি বুবিতে পারের অতি ধীর। যথার্থ যে কছে কথা অন্তথা না হয়। রাজ-দিত বলি তারে নীতিশাল্সে কয়। ১০৪॥

পুলপৌলগুণোপেতঃ শাস্ত্রজ্ঞো মিষ্টপাচকঃ। শূরণত কঠিনশৈচৰ স্থাকারঃ স উচাতে॥ ১০৫॥

পুত্রপৌর্ক্ত থাকে যার আর থাকে গুণ। মিষ্টপাক করে পাকশাজ্রেডে নিপুণ।। কঠিন অভাব পরাক্রম থাকে যার। দেই দে উচিত হয় পাচক রাজার॥ ১০৫॥

> ইন্ধিন্তাকারতত্ত্তো বলবান প্রিয়দর্শনঃ। অপ্রমাদী সদা দক্ষ: প্রতীহার: স উচ্যতে॥ ১০৬॥

ইন্দিডজ চতুর স্কর বলবান। রাজার সে ধারী হয় সদা সাবধান॥১০৬ া যক্ত নান্তি শ্বরং প্রজ্ঞা শাব্রং তক্ত করোতি কিং।
লোচনাভ্যাং বিছীনস্ত দর্পণং কিং করিবাতি ॥ ১০৭॥
বুদ্ধি নাই যার তার শাব্র কি করিবে। অন্ধেরে দর্পণ
দিলে কি লাভ হইবে॥ ১০৭॥

কিঁং করিব্যান্ত বক্তার: শ্রোতা যত্ত্র ন বিছাতে। নগ্নক্ষপণকে দেশে রজকঃ কিং করিব্যতি॥ ১০৮॥ কি করিবে বক্তা যদি শ্রোতা নাহি থাকে। উলল্ সন্নাদী দেশে কি করে রজকে॥ ১০৮॥

যন্ত বিজ্ঞানমাত্রেণ হণাং প্রজ্ঞা প্রজারতে। শতমফৌত্তরং পজ চাণকোন প্রযুক্তাতে।। যাতে হয় জ্ঞান রক্তি আর শুদ্ধ বাকা। অফৌতর শত

লোক কছেন চাণকা॥

মাতার সমান নাই, ভার্য্যার সমান নাই, বিদ্যার সমান নাই, ডিন্ডার সমান নাই, শরীর পোষিকা। শরীর তোমিকা। শরীর ভূষিকা। শরীর শোষিকা॥

বেলা গেল এস ভাই।
পড়া হলো বাড়ী যাই।।
সারি সারি সবে যাব।
কোনদিকে নাহি চাব।।
ধীরে ধীরে পার পায়।
শিশুগুলি ঘরে যায়।।

একে একে হুপা ফেলি।
চলে যাই সবে মেলি।।
এক হুই তিনু চারি।
এস সবে সামি সারি।।
ধীরে ধীরে পায় পায়।
শিশুগুলি ঘরে যায়।।

ছুটীর সমরে যখন শিশুরা ত্রেণীবদ্ধ হইয়া বাড়ী যাইবে ভখন এই পভটি পাঠ করিবে, এবং ধীরে ধীরে পাদবিক্ষেপ পূর্বক গামন করিবে।

### তত্ত্বোপদেশ্।

ডোরকল্পী অভিলাষী অমর গৌরছরি। দণ্ড অযুগ্রাহ করি মালা তিলকধারী।। ভকতবৎসল প্রভু মনে অভিলামী। হইল গৌর অবতার নবীন সন্ন্যাসী।। জীব যেমন ক্লফপদ না করে ভাবনা। পুন: পুন: হয় জীবের গর্ত্তের বস্ত্রণা।। এক-বার জনমিয়া আরবার মরে। তথাপি রুফ্তের নাম ভাবনা না করে।। থাকিয়া মায়ের গর্ভে পায় দারুণ বাথা। তথাপি ना शिष्ड मतन मंख अया कथा।। किंक्षिशत (इँहे मार्थ थाकरम বন্ধনে। বিপত্তি সময়ে তখন ক্লফ পড়ে মনে।। ছা ক্লফ ছা রমানাথ ব্রজেন্দ্র। ুমুক্ত কর এইবার গর্ভের যাতন।। দারুণ যাত্রনা জননীর গর্টে আছে। গোবিন্দ ভজনে থাকে তাই প্রাণ বাঁতে।।জন্মদাত্র পড়ে মহামায়ার বন্ধনে। ভজিতে অভয় পদ নাহি পড়ে মনে।। ইছকাল গেল ভাই পরকাল রাখ। জনম সফল কর ক্লফ বলি ডাক।। ধন বিনা ধর্ম নাহি হেন নরবর। দেউল জাঞ্চাল দেয় দীবী সরোবর।। বড বড় পুণ্য করে হইয়াধনবান। ছঃখী কৃষ্ণ বলে ভাকে নহেত সমান।। কলিতে শতেক বর্ষ আয়ু ধরে নর। নিদ্রায় অর্দ্ধেক নায় পঞ্চাশ বৎসর্থ। পঞ্চাশ বৎসরে কত ফাঁডো আছে তায়। কোন রূপে কুফপদ ভজিতে না পার।। বার বৎসর যায় তার বালাবিস্থা বেশে। মধ্য বার বৎসর যার বিজ্ঞার আদেশে।। পরে বার বৎসর যায় ক্রীসঙ্গ কৌতুকে। ধন উপার্জন চেন্টা মিছামিছি পুখে।। শেষ বার বৎসর ধরে বাাধি আর কাশ। গোবিন্দ বিষুধ জীব নরকে নিবাস।। ছরি কথা ছুই অক্ষর কহিতে লাগে ভার। ধরণীতে হয় ক্রফ ভজন কি ভার॥

#### यहाम ठावण



# यक्षागार्क मूनित পाठेगाना।

শুকদেব বলেন শুনহপারীকিত। প্রহ্লাদ্চরিত্র কথা অভি স্মললিত।। হিরণ্যকশিপু নামে কশ্মপনন্দন। ক্রমেতে তনয় তার হয় চারি জন।। প্রহ্মাদ অনুজ হৈল ক্ষপরায়ণ। পঞ বংসরের কালে খেলে চারি জন।। যথামার্কে ফ্রাকি দেয় পডিবার তরে। বলে মুনি প্রহলাদে পড়াবে ভাল করে।। মম শক্র নাম হীন যে সব অক্ষর। সেই পার্চ পড়াইবে শুন মুনি বর।। অঙ্গীকার করি মুনি চারি পুত্রে নিল। শুভ দিন দেখি মুনি হাতে খড়ি দিল।। ক অক্ষর দৃষ্টি করি কান্দরে প্রহলাদ। ষণ্ডামার্ক বলে একি হইল প্রমাদ।। মুনি বলে এ বেটার দেখি যে চরিত্রে। পড়া শুনা যা হবে তা জানিতেছি চিত্তে।। (मर्थ कान्मरत्र (वर्षे। किरमद कांत्रग्। **७७ वर्नि अ**स्तारमस्त জিজাসে তখন।। ক দেখি ক্রন্দন কর কিদের জন্মতে। শুনি ষণ্ডামার্কে শিশু বলে বিনয়েতে।। প্রভু নাম আগুক্তর দেখি-বারে পাই। ক্রন্দন না করি প্রেমনীরে ভাসি তাই॥ ভনি মুনি স্বীয় শিৱে করে করাযাত। বলে একি বিপদ ঘটিল অক-'ব্যাৎ।। যে নাম পড়াতে রাজা করিল ৰারণ। ডার আছ্র-

ক্ষর দেখি করয়ে রোদন।। আপনি আনিমু-ডাকি আপনার कान। अस्तारम राजार मम प्रतिन खळान।। या द्वांत हरे-য়াছে চারা নাহি ভার। যা আছে কপালে ভাহা হইবে আমার।। এত বলি প্রস্থাদেরে তুষিয়া যত্নে। দেখাতে লাগিল মুনি আপন ভবনে।। দৃষ্ঠিমাত্ত লিখে পঠি হরির ক্লপায়। নানা পুথি লিখে দিল হর্ষিত কায়।। দিবানিশি শিশু মুখে ক্লফ্ষ্য বলে। দেখি ষণ্ডামার্ক মুনি অগ্নি ছেন জ্বলো। কত বুঝাইল মুনি প্রহলাদের তারে। নাছি শুনে রামক্রয় দিবানিশি স্মরে॥ কিছু দিন পরেতে ভূপের ছৈল মন। দে-খিব কি শিখিয়াছে পুল চারি জন।। যতামার্ক গৃহে দৃত ক-রিল প্রেরণ। মুনি সহ সভায় আইল চারি জন।। প্রহলাদে পরমাদরে কোলে বসাইয়া। জিজ্ঞাসা করয়ে তার শিরে চুষ দিয়া। কহ কি প্রয়ন্ত পড়া শুনা হৈল তব। প্রহলাদ বলেন পড়া শুনা জীমাধব।। দূর ধলি ভাজে রাজা হেন কথা শুনি। ক্রোবে বলে কোথা গেল র্যভামার্ক মুনি।। এত দিন ভও বেটা এই পড়াইল।, নিষের যা করিলাম ভাই ঘটাইল।। শুনি ষ্ণামার্ক বলে ভূপের সদ্ন। মম দোষ নাহি বিছু শুনহর জেন।। যতেক বুঝাই তত ক্লফ ক্লফ বলে। শুনিসা ज्भिक कोर्य व्यक्ष (इन ज़्राना। यूनि राल महादाख मन দিরা শুন। হুর্গানাম ইছারে পড়াব আমি পুনঃ॥ ভাল ভাল বলি সায় দিল দৈত।পতি। প্রহল:দে লইরা মুনি পুনঃ করে গতি।। মুনি বলে কৃষ্ণনাম তাজ বাছাধন। দিবা নিনি ত্রগানাম কর সংকীর্ত্তন।। শিশু বলে হেন কথা নাহি বল আর। কুফুপ্দেবঁখে সদামানস আমার।। শুনি মহায়নি ভর্মনা করি তারে। ভাগীরথীতীরে গেল ম্বান করিবারে॥ (महेकारल श्रेब्लारम क्रिक्जारम शिक्षेगान। पृथ्विगोज किरम পाठ कर अशासन।। अञ्चान वटनन कृष्य नारमञ् अरगरु । শুনে রুফ্চমন্ত্র কর্ণে নিল সকলেতে।। হরি হরি বোল শব্দ উঠিন প্রাণে। করতালি দিয়ে হত্য করে শিশুগণে।। মুনি আদি বিপরীত দেখে বলে মার। খাইলি আমার মাখা

১৩েরে কুলাকার।। মুনি যত বলে ডত বলে হরিবোল। মুনির ভব্নে উঠে মহা গণ্ডগোল।। শুনি রাজা দূত দারা থরে আনাইল। ক্রোধেতে কম্পিত অঙ্গ গুঁতিতে কহিল।। কাঁকালি প্র্যান্ত পুঁডে তবু বলে ছবি। এ সময় দ্য়াময় রাখ কুপা করি।। প্রহলাদের ভক্তিডোরে বদ্ধ ভগবান। আ-পনি সভত তাঁরে করেন রক্ষণ।। তাহেনা মরিল দেখে কশাপনন্দন। ছত্তিতলে ফেলে দিতে কছিল তখন।। কৃষ্ণ-ভক্ত দেখি করি মন্তকে লইল। ভুক্তকেরে খাওয়াইতে রাজা व्याञ्चा मिन।। कृष्ण ज्जल (मिर्च मर्भ कर्गा श्रद मार्थ। विश-পানে আজ্ঞা পরে দিল নরনারে।। রুফে নিবেদিয়া শিও বিষণান করে। তাহে না মরিল পাজা চিন্তিত অন্তরে।। द्वार्थ (भर अक्रकांत्र घरत नमी कति। (श्रमानरम श्रञ्लाम ভজরে সদা হরি।। এত ভাবি আজ্ঞাদিল দূতেরে ডাকিয়া। প্ৰহলাদে পৰ্যাত হইতে <sup>প</sup>দিল ফেলাইয়া।। পুত্ৰপাৰা। উপ-রেতে করিল শরন। তাহে না মরিলু দেখে ভাবয়ে রাজন।। আজা দিন দূতগণে অগ্নিকৃত করে। এ পাপ বৈটারে মার পোড়ায়ে সহরে।। আজামাত্র অগ্নিকুণ্ড করে প্রজ্জ্ব-নিত। ফেলিল প্রহলাদে লয়ে ধরিয়া ছবিত।। ভক্ত দেখে अधि रिवरम निष्य कारन करत्। इन्यन मेमान विद्व लारग অঙ্গোপরে।। ভাছে না মরিল দেখে ভাবয়ে রাজন। আজা দিল প্রহ্লাদেরে করছ বন্ধন।। বন্ধন করিয়া এক শিলা বুকে দাও। শিলার সহিত এরে সিদ্ধতে ডুবাও।। সিদ্ধতে ফেলিতে যায় পাৰন কৰ্ণে কন। ভন্ন ত্যজি রামনাম করছ न्मवर्ग।। वामनाम न्यवर्गए छात्न छात्म मिना। श्रेनर्काव পিতৃদ্ধিধানেতে আইলা। দেখি নগরের লোক আশ্চর্য্য मानह। दोकाट्द कदिन छ्डांड (शट्स मशंख्य।। श्रीस्नाटन দেখিয়া রাজা কোলে বসাইয়া। জিজাসা করয়ে তারে শিরে চুম্ব দিরা॥ কেমনে এ সব হতে হলে পরিত্রাণ। प्यक्रण नहरून शूख कर मध छोन।। ध्यक्तीन वर्तन रहि रुख ত্রাণ পাই। স্থামার শ্রীহরি বিরাজিত সর্ব্ব ঠাই।। ক্রোধে

## হিরণ্যকশিপু বধ।



কৰে শুল্ক মধ্যে আছে ভোর হরি। প্রকাদ বলেন আছে শুন্তের ভিতরি।। শুনিয়া শুন্তেতে মৃষ্টি মারিল রাজন। ভক্তবাকা রক্ষা জন্ম দেব মারায়ণ॥ নরসিংহ রূপ হৈল অতি গুরুদ্ধর। হিরণ্যকশিপুরাজে করিল সংহার॥ শুন্দে গর্ভপাত এক নারীর হইল। মনস্তাপে বিপ্রভার্যা শাপ তাঁরে দিল॥ মেবারেতে হবে প্রভু রাম অবভার। বিশৃত সর্বদা তুমি হবে সেইবার॥ পরেতে প্রকাদ শান্ত কৈল, নারায়ণে। প্রকাদে বসান হরি রাজসিংহাসনে॥ প্রকাদেরে কোলে করি নরহরি কন। মনোমত বর মার্গি লহু বাছারন।। শিশুবলে দদা হেরি ভোমার চরণ। জনকের অপ্রাধ ক্ষম নারায়ণ॥ তথান্ত বলিয়া হরি করিল গ্রাম। শুল্লাদ চরিত্র কথা হৈল সমাপন॥

ইতি প্রহলাদচরিত্র সম্পূর্ণ।



#### মন্থার মিত্র।

কে বল বিরত করে পাপ পথ হতে ?
কে তব সুবশ গান করে নানা মতে ?
কে তোমার পুণ্য পথে লয়ে যেতে চাঁর ?
কে বল বিপক্তিকালে কেলে না পালার ?
কে তব সম্পদে ভাসে সুথের সাগরে ?
কেবা হয় তব হুঃখে কাতর অন্তরে ?
কে তোমার গুপ্ত কথা করয়ে যাপন ?
জাননা কি তুমি তারে, মিত্র সেই জন ?

ু পাখী সব করে রব রাতি পোহাইল। कानत्न कुसूमकिन मकिन कृषिन॥ রাখাল গরুর পাল লয়ে যায় মাঠে। শিশুগণ দেয় সন নিজ নিজ পাঠে॥ ফুটিল মালতীফুল সৌরভ ছুটিল। পরিমল লোভে জুলি আসিয়া জুটিল।। গগণে উঠিল রবি লোহিত বরণ। আলোক পাইয়া লোক পুলকিত মন।। শীতল বাতাস হয় জুড়ায় শরীর। পাতায় পাতায় পড়ে নিশির শিশির॥ উঠ শিশু হুখ ধোও পর নিজ বেশ। আপন পাঠেতে মন করহ নিবেশ। (মদনমোছন তকালদার।



